Date 16-9-99
रामायण
RAMAYANA IS THE GREAT
BOOK OF HINDUSM.

1

दशरथ विशिष्ठ से :- हे गुरु जी, रघुवर की समाप्ती के कलंक का टीका मेरे ही मनहुस माथे पर लगना था, वैसे तो मेरे भण्डार में किसी भी चीज की कमी नहीं है।

गुरु विशिष्ठ : दशरथ से :- वैसे तो मनुष्य दिल के घोड़े दौड़ाता रहता है लेकिन आपकी यह कहानी किसी के समझ में नहीं आती, आपके चेहरे के ऊपर यह उतार चढ़ाव कैसे हुआ, कृपा करके आप इस कहानी को हल कीजिए ताकि सब के दिल को चैन हो।

दशरथ विशिष्ठ से :- हे गुरु जी, ये तो ईश्वर की कृपा है। प्रजा खुशहाल है बेरोजगार [illegible] है। परन्तु हे गुरु जी, एक ख्याल है जो मुझको तड़पाता रहता है। हे गुरु जी, मैं [illegible] तक कलकी औलाद से खाली हूं। अगर एक पुत्र भी हो जाता है, [illegible] [illegible] ने सच ही कहा है :- चांद चढ़े, सूरज चढ़े, दीपक जलें हजार,

जिस घर में बालक नहीं, वह घर निपट अन्धियार।

[illegible] दशरथ से :- हां महाराज, वह घर-घर नहीं होता बल्कि एक तरह का समशान होता है जिस घर में बच्चा खेलता दिखाई न दे। औलाद जिन्दगी का सहारा और आंखों का सहारा होता है हे महाराज आप शीघ्र ही श्रृंगी ऋषि जी को बुलाईये और यज्ञ की तैयारी करिये, आशा है ईश्वर आपकी मुरादें पूरी करेंगे।

दशरथ विशिष्ठ से :- हां उनकी शोहरत की चर्चा तो अक्सर मैंने भी सुनी है, और आपके कहने से और भी तसदिक हो गया है हे मन्त्री जी, आप जल्दी जाइये। जिस तरह हो सके [illegible] [illegible] साथ लाइये। मन्त्री दशरथ से :- महाराज की आज्ञा सदा [illegible] मैं आज ही जाता हूं, और श्रृंगी ऋषि जी को अपने साथ [illegible] यज्ञ की तैयारी करो। (मन्त्री का जाना दूसरे का आना

2

(दशरथ का दरबार) विनोद दरबारी

दशरथ विशिष्ट से :- मन्त्री जी गये हुये बहुत दिन हो गये हैं लेकिन अब तक लौट कर आये और न ही कुछ खबर ही लाये मालूम नहीं श्रृंगी ऋषि जी मिले हैं या नहीं।

बड़ी गलती की मन्त्री जी को भेज दिया असल में मैंने खुद ही जाना चाहिये था

दूत-दशरथ से :- महाराज की जय हो, मन्त्री जी व श्रृंगी ऋषि जी तसरीफ ला रहे हैं डियोढ़ी पर दुर्दर्शन को विराज मान हैं दास को खबर करने के लिए भेजा है।

दशरथ-दूत से :- क्या कहा श्रृंगी ऋषि जी तसरीफ ला रहे हैं।

द्वारपाल-दशरथ से :- हां महाराज डियोढ़ी पर विराज मान है।

दशरथ-दूत :- बहुत अच्छा मैं खुद ही उनका स्वागत के लिये चलता हूँ

हे गुरु जी आप साथ चले (दोनों का चले जाना)

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- प्रणाम मुनीवर।

ऋषि-दशरथ से :- आनंद करते रहो राजन. कहो किस तरह हमें याद किया।

दशरथ का श्रृंगी से दोहा :- बहुत दिनों से ऋषि जी लगी हुई थी आस।

दर्शन करके आप के मिटा सकल दुःख त्रास॥

मिटा सकल दुःख त्रास मुनी जी. धन धन भाग हमारे।

दशरथ का घर हुआ पवित्र जब से आप पधारे॥

दो कर जोड़े नमस्ते करता चरणों पड़ू तुम्हारे।

हुई बहुत तकलीफ आप को कष्ट उठाके पधारे॥

नाटक :- हे मुनीवर कई दिनों से आप के दर्शन अभिलाषा थी और मुझको पूर्ण आशा थी कि आप जरूर आयेंगे। चालिए दरबार को सुशो[illegible]

दरबार में सब को दर्शन दीजिये।

शृंगी ऋषि-दशरथ से दोहा:- क्यों इतनी तकलीफ की क्या है असल मुराद।

किस कारण हमको किया राजन तुमने याद॥

राजन तुमने याद किया क्या अटका काम तुम्हारा है।

विपत पड़ी तुम पर भारी कहे अनुमान हमारा॥

हम बनवासी सन्यासी क्या देवें तुम्हें सहारा।

मेरे लायक काम जो हो कीजो जरा इशारा॥

नाटक:- हे राजन प्रसन्न व आनंद रहो, कहो क्या कारण है जो हमको याद किया

जो बात कहनी है जल्दी कहो।

दशरथ शृंगी ऋषि से:- हे ऋषिवर दशरथ बहुत दुखिया और लाचार है बालक जिन्दगी तक

बेजार है चारों तरफ से निराशा छाई हुई है केवल आपके दर्शनों ने ही धीर बन्धाई।

यदि कुछ हो सकता है तो कुछ इमदाद कीजिए वरना अपने हाथों से मुझे सन्यास दीजिये।

मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ केवल आपकी आज्ञा का इन्तजार है।

ऋषि दशरथ से:- राजन कैसी बातें करते हो। तुम्हारे यह उल्टे सीधे फिकरे मेरी समझ

में नहीं आते हैं। व्यर्थ समय खोने से क्या लाभ है। इसलिए पहले तोलो और

फिर मुंह खोलो।

दशरथ का गाना ऋषि से:- बहरे तवील (१) ऐ ऋषि जी गई उमर सारी गुजर।

आजतक मेरे घर में पिसर न हुआ।

यही रहती है चिन्ता मुझे रात दिन॥

है जि[illegible] रखते जीगर न हुआ॥

जिसका कोई तरसे

(२) कोई इसके बराबर बीमारी नहीं,

पेश चलती मगर कुछ हमारी नहीं॥

हाय विधाता ने बिगड़ी सवारी नही।

मेरी आहो का कुछ भी असर नही॥

(3) राज का कोई वारिस न वाली नही।

कोई मुझसा जमाने में खाली नही॥

कोई दशरथ सा बढ़कर सवाली नही।

दयान दयालु लेकिन ईश्वर न हुआ॥

हे ऋषिवर जी लेकिन उमर का बहुतसा हिस्सा बीत चुका है जवानी के दिन एक-२ करके ढलने लगे है बुढ़ापा आने लगा है लेकिन आज तक औलाद से खाली हूँ और मैं अपने तमाम उपाय कर चुका हूं यहा तक की लगातार तीन शादियां कर चुका हूं और दुनिया मे भी बदनाम हो चुका हूं गुरु जी अब तो इस घर की रोनक थोड़े दिन की मेहमान है बस आप आ गए है कृपा करके पुत्रेष्ठ करके मुझे पुत्र के लिए आर्शीवाद दिजिए।

नारद ऋषि का दशरथ से:- हे राजन जो कुछ आपने कहा है मैंने अच्छि तरह से सुन लिया है। यो इस तरह आहे न भरो बल्कि शीघ्र ही यज्ञ की तैयारी करो यदि ईश्वर को बात मन्जूर है तो उसे करने मे क्या देर है।

दशरथ ऋषि से नारद:- हे मुनीवर यज्ञ का सामान तो पहले से ही तैयार है बस आपकी आज्ञा का इन्तजार ही था।

ऋषि का यज्ञ का करना यहा पर दशरथ, वशिष्ट व अन्य ऋषि व मन्त्रगण साथ मे

ॐ नमों ... स्वतत: सावित्र नियम भर्गो देव: दि मई दियो न प्रचोदयात् देवा- ओ[illegible]

ऋषि:- हे राजन यह शेष यज्ञ महलो मे ले जाओ इसके तीन भाग करके त[illegible] खिलायो जब ईश्वर होगे माय दयाल पल मे भरे त[illegible]

[illegible]शरथ का महलो में जाना (परदा बन्द) गासंरूमा [illegible]ना)

अगला सीन, दशरथ का दरबार महलों से बांदी का आना।

बांदी दशरथ से :- महाराज मुबारिक हो यह दासी अभी-२ महलों से आई है और ऐसी खुशखबरी लाई है कि जिसके सुनते ही आपका दिल मशकूर होगा। जय हो महाराज की आपके महलों में चार कंवर पैदा हुए हैं ईश्वर ने बहुत मुद्दत के बाद यह दिन दिखाया है महाराज आपकी रानियों ने याद किया है।

दशरथ बांदी से नाटक :- हे दासी तुमने खुशखबरी सुनवाई है जिसे सुनकर ~~(खुसी सुनकर)~~ मेरा दिल बहुत खुश हुआ है। मैं किस तरह से भगवान का धन्यवाद करूं। और आपको मेरी ओर से यह नौलखा हार तुझे देता हूं आप जाइए मैं अभी आता हूं।

दशरथ बांदी से नाटक :- मैं अभी महलों में जाता हूं मन्त्रीवर आप सारे शहर में ढिंढोरा बजवा दें आज से लेकर सारे शहर में खुशियां व आनंद हो और घर घर में मंगला चरण हो।

नाटक गुरू से :- हे गुरुजी आप साथ चलें और चलकर बच्चों का नाम करण कीजिए

(परदा डाऊन)

दरबार में तीनों रानियां चारों लड़कों के साथ, महल में जाकर दशरथ की भगवान से विनती

दशरथ कन्यों को उठाकर :- हे ईश्वर तुम धन्य हो तुम्हारी कुदरत का कौन भेद पा सकता है आपकी शरण न ली हो, ऐसा कौन मनुष्य हो सकता है। हे गुरुवर आप बच्चों के नाम रख दीजिए।

गुरू का नाम रखना :- जो नित सुखदायक सुखराशी सुखसागर की लहर है।

उस कौशल्या के नंदन का "राम" नाम ही सुन्दर है।।

कैकई के सुत हैं विश्वभरण रखता हूं "भरत" नाम हो ~~सबका है~~ उसका।

जग को सुमार्ग दिखलाऐगा उत्तम आदेश काम उसका।।

[illegible] सुत हैं मात सुमित्रा के शत्रुघ्न द्वितीय कहलाऐगा।

यह लक्ष्मी धाम जो प्रथम है वह लक्ष्मण कहलाऐगा।।

[illegible] गाना). यहां पर गुरु वशिष्ठ चारों कवरों को शस्त्र विद्या सिखाऐं

विश्वष्ठ राम से :- राघे - कट सकता नहीं सस्त्र से वह ज्वाला भी जला नहीं सकती।

उड़ सकता नहीं पवन से उसे वर्षा भी बहा नहीं सकती॥

राम का उतर :- हे गुरुवर इसका अर्थ है जीव एक ऐसी चीज है जिसको न कोई जला

सकता है न उड़ा सकता है और न उसे बहा सकता है।

विश्वष्ठ भरत से :- उत्पति मरण सब कल्पित है उनका उसमें है लेश नहीं।

आनंद रूप वह स्वंय सदा उसको स्वरूप में कलेश नहीं॥

भरत का उतर :- हे गुरु जी इसका अर्थ यह है कि भगवान का रूप ऐसा रूप है जिसमें

एक मात्र भी कलेश नहीं होता और हर समय आनंद ही रहता है।

विश्वष्ठ का लक्ष्मण से :- राघे उसमें है विवध शरीर सदा बनते व मिटते जाते है।

जिस प्रकार पुराने होने पर वस्त्र आदि बदलते जाते है॥

लक्ष्मण का उतर :- हे गुरु जी शरीर भगवान का दिन है शरीर के अन्दर भगवान रहते

है जिस वक्त यह शरीर रह जाता है और उसका जीव भगवान अन्दर से चला जाता

है और इस प्रकार जीव को एक नया चोला मिल जाता है।

विश्वष्ठ का शत्रुघन से पूछना :- मिट्टी के घड़े कई है सब में सब जल से भरे हुए।

वे एक जगह या कई जगह या बहुत जगह चले हुए।

शत्रुघन का जवाब :- हे गुरु जी सब जीव जन्तु में विधाता व्यापक है भगवान तो है एक

जगह है लेकिन दुनियां में जितने भी घड़े है सब उसकी निगाह के नीचे उसकी महीमा से

बसे है।

विश्वष्ठ चारों राजकुमारों से :- तुम चारों राजकुमार एक से एक बढ़कर हो तुम शास्त्र विद्या में निपुण

तुम अवश्य महाराज का नाम रोशन करोगे जाओ अब विश्राम का सम[illegible]

पांच महाराणीयों की खुश मस्तीयां

राणीयों का गाना :- हम तो आनंद अपना मनाऐंगे : टेक

पियेंगे यहां बैठकर प्याले शराब के ॥

और चुन-२ खाएंगे टुकड़े कबाब के।

सब को उल्लू में चुल्लू बनाएंगे ॥ हम तो........

भील सवाई- जब तक मेरे हाथों में तीर कमान है।

सारे जमाने की मुट्ठी में जान है ॥

सब को रास्ते आदम के दिखाएंगे ॥ हम तो.........

तीसरा:- राज्य के राजा का न हमको ख्याल है।

आए मुकाबले पर किसकी मजाल है ॥

टुकड़े एक एक दो दो बनाएंगे ॥ हम तो......

दुनिया सभी कांपती है मेरे ही नाम से।

राजा तलक को न बैठने दूं आराम से ॥

सारे जमाने में हम हलचल मचाएंगे ॥ हम तो......

कोई मुसाफिर जो इस जगह आएगा।

पंजे से छूट कर न हरगिज जा पायेगा ॥

उसे मारेंगे और लूट-२ कर खाएंगे ॥ हम तो......

मारीच राक्षशों से:- अरे नालायको आगे पीछे क्या ख्याल है, और दिन ही खेल कूद में ख्याल है। वह देखो सामने से शिकार निकला जा रहा है और तुम शराब पी कर मजे ले ते हो।

पहला राक्षश हंसकर:- आह आह आह... क्या कहा शराब (प्याला सामने करके) पहले थोड़ी सी उत ता[illegible] [illegible]ला और भी तेज हो जाएं।

[illegible]र) अरे तेरा सत्यानाश जाए बराबर का हिस्सा लेता है और हमारी ही खुशामद

सवैंहु

मारीच राक्षसों से (जोश में) अरे तुम्हारा बेड़ा गर्क कुछ मेरी भी सुनते हो या शराब का ही मजा लेते रहोगे।

राक्षस:-(जोर से हंसकर) आह आह कहिये उस्ताद जी क्या बात है।

मारीच राक्षसों से (गुस्से में) पूछते हो या मुझे खाते हो।

राक्षस मारीच से (हैरानी में) तो कुछ बात भी बताते हो।

मारीच:- अरे अच्छों व देखो सामने से शिकार आरहा है। शिकार की गर्दन पकड़कर

रख दे जो कुछ भी तुम्हारे पास में है

यात्रीगण:- महाराज दशरथ तेरी दुहाई, हाय हाय हम गरीब तेरे राज्य में इस बेदर्दी से लुटे जाते हैं

राक्षस:- अरे मूर्ख दशरथ क्या चीज है क्या व खाने की चीज है।

भीम:- यदि दशरथ कोई नमकीन चीज है तो ले आना शराब के साथ खाने में बड़ा मजा आयेगा।

मारीच:- अरे दशरथ वह है न अयोध्या का रहनेवाला जिसको लोग राजा भी कहते हैं।

[illegible]:-(हंसकर) आह-२... अच्छा तो यह लोग अपनी सहायता के लिए पुकार रहे हैं। जिसके

मुंह में न दांत न पेट में आन्त। वह बूढ़ा खुसट हमारा क्या मुकाबला करेगा। ऐसे तस्कर तो मैं

बीस खा जाता हूं ~~[illegible]~~ डकार तक भी नहीं लेता।

यात्रीगण:- हमरी दशा पर रहम करो।

मारीच:- अरे वो नामाकूल हम सत्रियां नहीं हैं खबरदार ऐसी चीज का नाम लिया तो।

यात्री:- कुछ तो तरस खाओ।

मारीच:- हम ऐसी गली सड़ी चीज नहीं खाया करते।

सुबाहु मारीच से:- भाई मारीच लातों के भूत बातों से नहीं माना करते।

मैं वक्त क्यों खराब करते हो।

मारीच:- अच्छा इन फजूल बातों को छोड़ो। चलो जंगल की सैर करो।

लगजाए। राक्षस चलिए महाराज आगे होना।

:: यहांपर विश्वामित्र की यज्ञ रचना ::

मारीच राक्षसों से :- अरे नायलायकों वह देखो सामने से धुआं नजर आ रहा है।

सबाहु मारीच से :- हां भाई कुछ तो है सही।

मारीच :- चलो उधर ही आज मौज मेला करेंगे। परदा उठादेना - विश्वामित्र के साथ

भीम :- यह देखो नया तमासा पागल घी को आग में डाल कर कैसे जला रहा है।

धर्मा दरसल है तो कोई दिवाना।

सतबीर हमें क्या चाहिए कनी कमाई आगा मिल गई। मजा में मांस भूनकर खाएंगे।

कालिया :- अरे एक प्याला इस बुड्ढे को भी दे दो। बिचारा गम दूर कर लेगा।

लिखन :- ले बुड्ढे पीले शराब (विश्वामित्र चुप) मारीच :- ओ बूढ़े हमसे ऐसी बेरूखी क्यों,

हम और तुम तो भाई-२ हैं तुम बनवासी हम बनवासी तुम सन्यासी हम सन्यासी।

विश्वामित्र का आंख खोलना और राक्षसों से :- अरे मलेच्छो हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो यहां आ

कर के यज्ञ का सामान उजाड़ा है। मांस आदि डाल कर तमाम यज्ञ को भ्रष्ट कर दिया है। दिखता

है तुम जिन्दगी से बेजार हो। सच जब चिंवटी के दिन निकट आते हैं तो उसके पांव पैदा

हो जाते हैं। अरे कायरो यदि लड़ाई का ईरादा है तो हम फकीरों से लड़ने का क्या फायदा

है। अन्यथा समझता कि तुम्हारी जिन्दगी के दिन निकट आ रहे हैं। और छत्रीवंस कारसकर

तेज हो रहा है। भाग जाओ वरना क्यों व्यर्थ में जीवन गवाते हो।

मारीच विश्वामित्र से :- वहां बुढ़े खूब सुनी तेरी अफसाने और खूब घड़ी बेतुकी कहानियां तेरे जैसे

हमने बहुत देख भाल हो। अरे ओढू तू किसको पढ़ा रहा है और किस पर अपना गुस्सा दिखा रहा है।

हम तो यह [illegible] में रंगीले हैं। न की तेरी तरह हाथ पांव ढीले हैं। हां तू जोग करता है और

[illegible] रहा है। चन्द्रवंसी सूर्यवंसी वह वंसी ऐसी वंसी बजाऊंगा उसका वंश दुनियां से

[illegible]ने हिमाती को बुलाला मैं भी मारीच नहीं यदि उसका कचुमर न

[illegible]का हंस कर भाग जाना

10

महाराजा दशरथ का दरबार

दशरथ मन्त्री से :- सब सलकार आये और अपनी-2 रिपोर्ट सुनायें!

मन्त्री दशरथ से :- महाराज के आसरे से तमाम प्रजा खुशहाल है और बैरी पायमाल है।

दशरथ मन्त्री से :- प्यारे सौ मित्र, रात को मेरी तबियत पर कुछ मलाल सा है रात को मुझे सपने में ऐसा सीन देखा। जैसे कोई शेर गाय को सता रहा हो मैं उसको मारने को चला मगर इतने में मेरी आँख खुल गई। जब से मेरा मन उदास है। अब भी मुझे सपने वाली बातें नजर आ रही हैं।

द्वारपाल दशरथ से :- अयोध्यापती महाराज की जय हो मुनी विश्वामित्र जी ड्योढ़ी पर विराजमान हैं।

दशरथ द्वारपाल से :- क्या कहा मुनी विश्वामित्र जी पधारे हैं।

द्वारपाल दशरथ से :- हाँ पृथ्वी नाथ।

दशरथ द्वारपाल से :- अच्छा तो हम स्वागत के लिए चलते हैं।

दशरथ विश्वामित्र से चरणों में गिरकर :- हे मुनी जी आपका तुच्छ सेवक आपके चरण लगता है।

विश्वामित्र दशरथ से :- खुश रहो राजन आनंद करते रहो।

दशरथ विश्वामित्र से :- हे मुनी जी मेरे धन्य भाग है जो आपने अपने पवित्र चरणों से इस स्थान को शोभा दी। आइये विराजिये और आसन ग्रहण कीजिए। हे मुनिवर आपके चेहरे पर उदासी छाई हुई है। और आपका ~~आरम्भ~~ एक एक अंग मुरझा रहा है, आँखों का रंग पीला हुआ सा ऐसा क्या कारण है।

विश्वामित्र का गाना बहरे तबील दशरथ से :- हे महाराज दशरथ देवो दुहाई तेरी।

(1)
हम फकीरों का यहां पर गुजारा नहीं।
कष्ट मिलता है हमें रात दिन इस कदर
कि हमारे से जाता सहारा नहीं।
कोई अपराध न हमने तेरा किया

(2)
एक किनारे पर जाकर बसेरा किया

त्याग बस्ती को जंगल में डेरा किया

रहना वहा भी हमारा गंवारा नहीं

(3) किसी प्राणी तक हम सताते नहीं

रहते है जंगल में बस्ती में आते नहीं

उस जगह भी रहने पाते नहीं

कोई रक्षक रहा हमारा नहीं

(4) राक्षश आकर हमें तंग करने लगे

यज्ञ ऋषियों का भंग करने लगे

मुफत में खेड़ हम संग करने लगे
छेड़

हमने उसका कभी कुछ बिगाड़ा नहीं

विश्वामित्र जी राम राधेश्याम:- मैं यज्ञ जिस समय करता हूं दुस्ट मुझको निश्चर देते है

पूजा सामग्री हवन कुण्ड सब नष्ट भ्रष्ट कर देते है।

असुरों के अत्याचार से अकुलाया घबराया हूं मैं

रक्षा के लिए दो चीज तुमसे लेने आया हूं मैं

तू अपने पुत्र राम लक्ष्मण दे सौंप मुझे कुछ दिनों को

इसमें है तुमको पुण्य सुयश कल्याण है इन दोनों को।

दशरथ का गाना विश्वामित्र कहे बोले:- हे मुनी जी ये क्या सुनाई दास्ता।

(1) राक्षसों का रहा भय हमारा नहीं

दी जो बर्षा को बीत गए रहा

लफ्ज जाता हमसे सहारा नहीं।

... कहने लगा

कलेजा हाथों उछलने लगा।

हथकड़ियों पर दुष्टों का चलने लगा।

राजा का भयंकरा भी विचारा नहीं.

(3) देर क्या है बस अब चढ़ाई करूं

पापियों की पलक में सफाई करूं

बेईमानों की ऐसी मजाई करूं

नाम लेंगे इधर का दोबारा नहीं

दशरथ का नाटक विश्वामित्र से:- हे हे मेरे राज्य में यह अन्धेर. चोरी नहीं बल्कि सीनाजोरी है. अत्याचार करते हैं - और आपके देखते देखते पापियों की सफाई करता हूं उनके दिल में क्या हवा समाई है साधु सन्यासी को तंग करने लगे, हे मुनीवर यही कारण था रात से मेरा मन उदास था, और मुझे पूरा विश्वास था कि जरूर कुछ दाल में काला है।

विश्वामित्र का नाटक दशरथ से:- हे राजन आपको कष्ट करने की क्या जरूरत है. वे ही ऐसी खतरनाक सूरत है आप राम और लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दीजिए राक्षसों का मलियामेट करना उनके लिए साधारण सी बात है और निश्चय ही उनकी मौत राम लक्ष्मण के हाथ है, ईश्वर ने चाहा तो बहुत जल्द ही आपके पास पहुंचा दिए जाएंगे, और आपके वंश के यश की कीर्ति को चार चांद लगाएंगे।

दशरथ का नाटक विश्वामित्र से राधेश्याम:- हे मुनीवर दोनों बालक हैं भोले भाले नादान मेरे

रण विद्या नहीं जानते हैं, लड़ने में अभी अनजान मेरे

लो राज ताज सारी सेना. यह सब होना दुश्वार नहीं.

आज्ञा हो तो मैं चलूं परन्तु इसमें भी कुछ इन्कार नहीं.

वैसे तो चारों मेरी बूढ़ी आंखों के तारे हैं

लेकिन राम और लक्ष्मण दोनों प्राणों से

फिर राम सदा सुखधाम मेरा कब उसका विरह गवारा है

जग घर वही चांदना है जीवन का वही सहारा है.

विश्वामित्र दशरथ से नाटक:- क्रोध:- मुझे है हैरानी कि रघुकुल में ऐसे कायर कहां से पैदा हुए. अरे कायर तेरे पूर्वजों

ने किसी की सहायता से इनकार नहीं किया अपनी प्रजा के लिए मांस देने के लिए इनकार नहीं किये. जबान

का कौल सिर के साथ था, इसलिए परमेश्वर ने उनके सिर पर हाथ रखा था. वो बुजदिल क्या रोहतास

हरिचन्द्र का नहीं था. अगर वह भी तेरी तरह टाल मटोल करता तो उसके पास उत्तर नहीं था. तुमने तो राजा

राजा दलीप की इज्जत खाक में मिला दिया, जिसने अपने बदन का मांस काट कर भूखे जानवरों को

खिला दिया:-

राधेश्याम:- अय दशरथ तुझ जैसे ज्ञानी को इतनी बच्चों की ममता है.

जा चुकी जवानी दिवानी. फिर भी माया में गरमता है

यदि आज विष्णु से कहता में चल देते छोड़ गरुड़ वाहन

शंकर से यदि विनती करता हिल जाता उनका भी आसन.

दशरथ सिंह:- बहुत अच्छा अ राम लिजीये. और आखरी मेरा प्रणाम लिजिये जो से बन्दगी बजाऊंगा मगर

तेरे जैसे कायर के पास कभी नहीं आऊंगा।

विशेष, दशरथ से राधेश्याम:- यह योगी राज कहाते हैं. तू इनसे कुछ संकोच न कर

यह बड़े विचार शील मुनी हैं तू किसी बात की सोच न कर

यह तेरे राजकुमारों को रण विद्या सिखायेंगे

जिन्द पुचन्द [illegible] होकर आनंद सहित घर आयेंगे.

दशरथ [illegible] राजन आप सोच विचार न किजिए, और राजकुमारों को भेजने से इन्कार न किजिए

[illegible] एक दिन मरना है. फिर राजा तो उन्होंने ही करना है। इस मामूली सी बात पर

विश्वामित्र को नाराज न कीजिए। 14 21

दशरथ विश्वामित्र से राधेश्याम:- लो हाथ में इनका हाथ नाथ यह दोनों भोले भाले हैं

यह ही मेरा याद रहे भगवान मेरे नाजों के पाले हैं।

यशवन्त सिंह:- मुनी जी ले जाइये ले जाइये और अपना काम बनाइये, मुझे इनका सख्त इन्तजार रहेगा और जब तक इनकी सकल न देख लूं मेरा दिल बेकरार रहेगा :: पर्दा ::

दशरथ का सीन समाप्त राम लक्ष्मण विश्वामित्र **ताड़का वध**

राम विश्वामित्र से नाटक:- मुनी जी यह कौनसा मुकाम है।

विश्वामित्र राम से:- मारीच और सुबाहु की माता ताड़का का इसी जगह जंगल में कयाम है

राम विश्वामित्र से:- हे मुनीवर क्या वह भी अपने बेटे की तरह बदकार है।

विश्वामित्र राम से:- वह आला दर्जे की जालिम और बदकार है।

राम विश्वामित्र से:- चलो तो आगे कदम बढ़ाओ

विश्वामित्र राम से:- नहीं पहले इसकी मिट्टी ठिकाने लगाओ।

राम विश्वामित्र से:- हे मुनी जी स्त्री पर हाथ उठाना तो महापाप है।

विश्वामित्र राम से:- यह आपका वृथा पश्चाताप है, वह देखो बदकार किस तरह से मुँह फाड़े आ रही है

लक्ष्मण राम से:- उसकी मौत ही हमारे सामने ला रही है।

ताड़का:- हाऊ हप हाऊ अप हाऊ हप।

राम ताड़का से:- आदमियों की तरह बात कर अगर हिम्मत है तो दो हाथ कर

ताड़का राम से:- मालूम होता है तुम जिन्दगी से बेजार हो और इतने तेज तर्रार हो

राम ताड़का से:- ओ बदकार होशियार हो जा और मरने को लिए तैयार हो जा। राम तीर से पंकर मारता।

ताड़का वध:- हाय हाय मैं मर गई कोई पानी तो पिलाओ

लक्ष्मण ताड़का से बस एक ही बाण में लम्बी पड़ गई।

: ताड़का वध समाप्त, सबाहु का मरना, मारीच का आगमन :

15

राम विश्वामित्र से :- मुनीजी अब थोड़ी देर आराम करलें।

विश्वामित्र राम से :- क्या हरज है हम भी बिश्राम (उंगली का ईशारा करके) लो सम्भल जावो वह देखो

बेईमान आंधी मेंह की तरह आ रहा है।

राम विश्वामित्र से :- उसकी मौत ही हमारे सामने ला रही है।

मारीच का दोहा राम से :- एक औरत को कत्ल कर उछल रहा रण बीच

बचकर कहां जाएगा आ पहुचा मारीच।

चौबला :- आ पहुचा मारीच अब सभंल कर कदम बढ़ाना

खबर नहीं शायद मुझको जाने सारा जमाना

नामुमकिन है आज तुम्हारा यहां से जिन्दा जाना

मिल लो जुल लो किसी से मिलना खालो जो कुछ खाना

राम मारीच से दोहा :- क्यो ज्यादा बक बक करे रख जबान को बन्द,

मैं तो तीर चला चुकी अब आये फरजन्द।

चौबोला :- अब आये फरजन्द बहुत कुछ ऐसो गलाता है

बेईमान हट पिछे क्यों सिर पर चढ़ता आता है।

हट पीछे मरदूत मुफत में क्यों बढ़ बढ़ चिल्लाता है

अब भी आजा बाज जान की खैर जान भी खाता हो

राम मारीच से :- वो कायर क्यों ज्यादा जबान से निकलता है

मारीच राम से :- एक औरत को मार कर उलटा अकड़ता है।

राम मारीच से

इसने तो अपनी करनी का फल पा लिया।

मारिच राम से

तो अब अपनी मां के पास जीन्दा जा लिया।

वो वह देखो

राम मारीच से :- होशियार होजा।

मारीच राम से :- वो कायर अब मरने के लिए तैयार होजा।

दोनों की लड़ाई मारीच का गीर जाना :- सबाहु :- लक्ष्मण से जरा जवान की लपालपी छोड़दो

लक्ष्मण :- सबाहु से :- अगर खैर जान चाहता है तो अब भी हाथ जोड़ दे

सबाहु लक्ष्मण से :- चूप रहो नादान

लक्ष्मण सबाहु से :- पीछे हटजा बेइमान

सबाहु लक्ष्मण से :- अरे बुझदिल मुंह से कच्ची बात न निकाल

लक्ष्मण सबाहु से :- अरे बेईमान तूभी अपनी जबान को सम्भाल

सबाहु लक्ष्मण से :- अभी तो तेरे दूध के दांत भी नहीं टूटे, अन्यथा लाग जा नहीं तो

निबू की तरह निचोड़ दूंगा

लक्ष्मण सबाहु से :- मेरे दांत तो नही टूटे मगर तेरे जरूर तोड़ दूंगा

सबाहु लक्ष्मण से :- शरारत से बाज नहीं आता उल्लू

लक्ष्मण का दोहा :- सबाहु से :- बस बस मैं सुन चुका बहुत तेरी बकवास

अब ज्यादा बोला अगर लूंगा जां वा तमास

चौबोला :- लूंगा जां वा तमास अगर कुछ मुंह से बात निकाली

बेईमान बदकार बता तो अबके दे तो गाली

खबरदार हो वार हमारा न जाएगा खाली

और न कहना लक्ष्मण ने धोखे से जान निकाली

सबाहु लक्ष्मण से :- वो कायर होशियार होजा

लक्ष्मण सबाहु से :- तूभी मरने के लिये तैयार होजा।

दोनों की लड़ाई :- सबाहु की सफाई, मारीच का उठकर भागना

लक्ष्मण का दोहा :- मारीच से वो कायर सब भाग कर नहीं बचेगी जान

अब जाते कहाँ दुंगा बुजदील बेईमान,

चौबाला :- बुजदील बेईमान कहाँ जायेगा जान बचाकर

छुपजा कहाँ छुपेगा मैं ली माया तोर उठाकर

लानत है जीना तेरा भाई को कत्ल कराकर

अरे नीच मारीच ठहर जा जरा जाता हाथ दिखाकर :-

राम का दोहा :- लक्ष्मण से :- आगे पीछे भागना है ना मर्दों का काम

लग गया जो रण में मर गया मौत हराम

चौबाला :- मर गया मौत हराम युद्ध में जिसने पीठ दिखाई है

ऐसे कायर को क्या मारना इसमें कौन लड़ाई है

था तो इतना बड़ा बढ़के पर भागते हो बन पाई है

क्या भागोगे मेरे हाथ से लक्ष्मण करे सफाई

मारीच का भागना, विश्वामित्र राम लक्ष्मण की पीठ ठोंक कर :- शाबास बहादुरों खूब किया जो इन मलेछों का काम तमाम किया।

राम विश्वामित्र से :- हे मुनीवर ये आपका ही आशीर्वाद है।

विश्वामित्र राम लक्ष्मण से :- हां बेटा तुम सूर्यवंशी के चीराग हो चांद में दाग है पर तुम बेदाग हो।

((दूसरा दिन सुरु))

:: राजा जनक का दुत आना चीठी लेकर विश्वामित्र के पास ::

जनक का दुत विश्वामित्र से :- क्या मुनि विश्वामित्र जी यहीं पर रहते है

विश्वामित्र दुत से :- हां हां कहिये क्या काम है,

दुत विश्वामित्र से :- हे ऋषिवर आपके नाम राजा जनक का एक पैगाम है।

विश्वामित्र दुत से :- वह कौन सा पत्र है।

दूत विश्वामित्र से:- लीजिए मुनीवर यह पत्र.

दूत का वापिस चले जाना मुनी विश्वामित्र का पत्र पढ़ना,, वाह वाह यह भी खूब मौके पर आया.

राम विश्वामित्र से:- मुनीवर यह पत्र कहां से आया है.

विश्वामित्र राम से:- बेटा मार्थिला पुरी के राजा जनक न की अपनी पुत्री का संवम्बर रचाया है. और हमें भी उसमें शामिल होने के लिये यह सन्देश पहुंचाया है। राजा के वहां एक बड़ी कमान है; और उनका यह ऐलान है कि जो क्षत्री उस कमान पर चील्ला चढ़ाएगा वही सीता का पति कहलाएगा।....

राम विश्वामित्र से:- हे गुरूजी कुछ हर्ज न हो तो हमें भी साथ चलने की आज्ञा दीजिए.

विश्वामित्र राम से:- हां हां बड़ी खुशी से तैयारी कीजिए आप ही लोगों के लिए स्वयंवर रचाया है, हमें तो देखने के लिए बुलाया है। (विश्वामित्र राम लक्ष्मण के साथ जाना,, रास्ते में अहिल्या की मूर्ति को पांव लगाना)

विश्वामित्र राम से राधेश्याम:- बेटा कभी गौतम स्त्री थी अब शीला शाप की मारी है

सबसे प्रेम तुम रखो यही आकांक्ष तुम्हारी है.

इस पाप प्रपिड़त पथरी को पद रज का चेतन चखा दो

वह पतिता है पावन पद दो. जीवन मृत को सन्जीवन दो.

राम का पांव लगाना अहिल्या का सन्जीवन होना,, अहिल्या राम से,:- प्रणाम भगवन आपने मेरा उद्धार किया है.

मैं स्वर्ग लोक में जाती हूं और अपने पति के दर्शन पाती हूं.

राम विश्वामित्र से:- हे मुनीवर यह देवी कौन थी और इसका क्या कारण था जो पत्थर की मूर्त तस्वीर थी.

विश्वामित्र राम से:- भगवान यह गौतम ऋषि की अर्धांगनी थी. भगवान यह पतिता के आरोप में आ गई थी गौतम ऋषि ने शाप दिया था जब त्रेता युग में भगवान विष्णु का अवतार भवधे भयारी आएंगे तो आपका कल्याण होगा. जब से यह पत्थर की शिला के रूप रह रही थी आपके चरणों से इसका उद्धार

(विश्वामित्र. राम, लक्ष्मण. का जनक से मिलना) जनक विश्वामित्र से:- प्रणाम मुनी

विश्वामित्र जनक से:- आनन्द करते रहो राजन.

जनक विश्वामित्र से शरीशरण:- मुनीवर मेरी खुली रह गई. आंखो से ऐसा नेह हुआ

कहते हैं मुझे विदेह सभी. पर मैं तो आज विदेह हुआ:

विश्वामित्र जनक से:- मैं कहता हूं राजन तुमने ठीक कहा भ्रात

ब्रह्मानंद की नजर में सब रहता पास

दोनों हैं पुत्र अवध नृपति के हैं नाम राम लक्ष्मण इनका

यह बली गुनी ज्ञानी है. जिसे लिखी सदा वर्णन इनका

इस ठीक मारीच यज्ञ आये. राक्षस दल इन्होंने मारा है

गौतम की नारी अहिल्या का पद रज से शाप निवारा है.

अब धनुष और यज्ञ के कारण यह दोनों भाई आते हैं

राजन तेरे आनन्द हेतु हम इन्हें साथ में लाते हैं.

दुनिया दर्शन का मेला है जिसको अच्छा हो अच्छा है.

आगे तो वही होता है जो विधना ने लिख रखा है. (जनक का चले जाना)

विश्वामित्र राम लक्ष्मण से:- उठो भगवन अब आराम करो. मैं भी आराम करता हूं विश्वामित्र का जाना

लक्ष्मण राम से:- भ्राता श्री मिथलापुरी भी एक मशहुर शहर है.

राम लक्ष्मण से:- हां भैया लक्ष्मण मगर इससे तुम्हारा क्या प्रयोजन है।

लक्ष्मण राम से: यही कि आज इस नगरी को देख कर अपना मन बहलावें।

राम लक्ष्मण से: चलो भैया आज तुम्हें मिथला पुरी दिखला लावें।

सीन चालू सीता की आरती उतारना जगदम्बा की तर्ज:- जय जानकी नाथ

आरती भरतू शा... टेक:- जय गौरी माता. जय जय गौरी माता

मोहनी जननी विश्व मोहनी

जननी विश्व मोहनी

(२) ज्योती अखण्ड जला मन भावनो . छत्र शिश राजे .. छत्र शीश . . . . .

सुतगजवदन षड़ानन . सुत गज वदन षड़ानन

अनुपम छबी छाजे जय श्री पार्वती मात :-

सिंह वाहनी भवा भवानी दामनी चली माता

राधेश्याम कृपा कर . राधेश्याम कृपा कर

वर दो मन भाता ,, जय जय गौरी माता :-

जगदम्बा का प्रसन्न होना राधेश्याम :- हे सीते कुछ सन्देह नहीं उत्तम अभिलाषा तुम्हारी है .

नारद का वचन सत्य होगा ऐसी आशीश हमारी है .

जिसे पकर जिन्हे अपनाया है तूने पहले उन्हे अपनावोगी .

बस इस स्वंवर में सीता मन चीता वर तुम पावोगी .

लक्ष्मण राम से :- दसी सीनपर :- भ्राता जी ऐसी सुन्दर स्त्री कौन थी , ऐसे कोई देवी स्वर्ग से आई

इसके आते ही सारे बाग में नई बहार आ गई है ..

राम लक्ष्मण से गाना :- ओ प्यारे भईया यह बागों की बहारें हैं .

हो प्यारे लक्ष्मण ये जनक दुलार है . टेक :

ओ प्यारे जब से ये बागों में आई चली

सारे फूलों की खिल गई है सुन्दर कली

इसके आने से गुलशन गुलजार है . वो प्यारे भईया . . . .

(२) यह कितनी सुन्दर है लक्ष्मण ज्ञाती

इसके सन्मुख लज्जित हो जावे रती

इसके मुख पे पर चन्दा लाचार है . . . वो प्यारे . . . .

पर मेरे तो दिल का यही सुना

गैर नारी पर हरगीज न देना निगाह

ये सब का कारण तोड़ाने करतार है   वो प्यारे....

(प) जो रचाना स्वयंवर यह रचा जनक

इसको मैं ही करूगा यह पुरा पनक

ऐसे कहते श्रीचन्द पुकार है.

वो प्यारे लक्ष्मण यह जनक दुलार है:

राम का नाटक :- चलो भईया लक्ष्मण हमने तो यही पर देर करदी. मुनी गुस्से मे आयेंगे

लक्ष्मण :- चलो भ्राता जी मुनी जी हमारी राह देख रहे होगें.

धनुष राज :: महाराज जनक का दरबार :: सब राजा बैठाये जायेंगे:

जनक का दरबार मे बोलना :- राधेश्याम :- जो धनुष दक्ष-यज्ञ मे शिव ने, सुर गण के लिये उठाया था

निमिनन्दन देव राज जी, जो धनुष धरोवर पाया था.

दस सीस सस्त्र बाहु तक, तील भर ने जीसे सरकाया है.

सीता ने खेल खेल मे जिसको एक दिवस उठाया है.

राजा की सब सौगन्ध शपथ, धन्वा द्वारा पूर्ण होगी

जो वीर धनुष को तोड़ेगा. सीता उसको अर्पण होगी.

है कौन वीर जो, मिथिलेश्वर का जामाता है

है कौन भाग्य शाली, ऐसा, जीससे सीता का नाता है.

(पद्यमा) कोई [illegible] है धनुष पर इतना गुमान है

क्या हुआ आखीर कमान है   भारी हुआ तो क्या हुआ आखीर कमान

[illegible] हाथ से तोड़ दूं इसे

[illegible] समान है । अरे बाप रे यह तो [illegible]

२ कालिया :- चीतला चढ़ादूँ एक दम ही पांच सात का
करतब है फक्त मेरे बाऐं हाथ का?
मुश्किल ही क्या है काम यह हैरानी मुझे
लकड़ी का है यह ना मीमी और घात का। यह तो कोई धोखा है. वास्तव में तो यह पाप गन्दा है।

३ सतबीर
बस-बस जनाब सबकी ताकत खत्म हुई
बैठे हैं सिर झुकाऐ सबकी सुजायत खत्म हुई
अब देखिये चिल्ला चढ़ाता हूँ कमान का
लो देखलो सबकी हिमाकत खत्म हुई :- नहीं मैंने तो सिर्फ देखना था।
चिल्ला चढ़ाने का तो विचार नहीं था,

(५.) सबने लगाया जोर लाचार हो गऐ
न उठ सकी कमान शर्मसार हो गऐ,
उठने की मेरी देर है बस आन में
देखोगे टुकड़े तीन चार हो गऐ
इस को धनुष कहता कौन है. यह तो जनक ने हंसी का जरिया बना रखा है।

रावण :- कर लेंगे चौकरे हुए एक काम को,
दुनियां में कौन जाने [illegible] रावण के नाम को
मेरे बिना यह काम कर सकता नहीं कोई
दिल से निकाल दिजिए ख्याले श्याम को

रावण का होना धनुष के नीचे आना आकाशवाणी :- सच रावण [illegible] यहां [illegible]
हुआ है। तेरी लंका में आग लगी हुई है। रावण :- बैरा [illegible]
हुऐ हैं आकाश :- वह लड़ाई में गऐ हुऐ हैं।

रावण:- भाई कुम्भकरण कहाँ गये हुये हैं मारीच:- वह सोया हुआ है

रावण:- बहन सूर्पनखा कहाँ गई हुई है मारीच:- वह सैर करने के लिए गई हुई है

रावण:- ओह मुझे बड़ा गलत काम किया जो धनुष बनाया तुम भी बैठ कर (राम राम

हाथ निकाल कर:- आह: आह: आह: (हुंकार) अब तो मैं लंका मैं जाता हूं मगर यह

सीते उ स्वयंम्बर मैं तो नही जीती गई पर एक बार लंका तुझे जरूर दिखा दूंगा,, आह

हुँक कर धुँए के अन्दर होना :-

जनक राजाओं से:- हे द्वीप द्वीप के राजा गणों, हम किसे कहें बलशाली हैं

रावों :-

हमको तो विश्वास हुआ, पृथ्वी वीरों से खाली है

पहले ख्याल होता अगर, बेबसी न होती

हम करते नहीं प्रतिज्ञा यह तो ऐसी हंसी नहीं होती

आसरा छोड़ प्रस्थान करो दुःख हमें दिया है दाता ने

सीता सुकुमारी का विवाह, लिखा नहीं विधाता ने

लक्ष्मण जनक से राम से ध्यान:- सच्चे योद्धा सच्चे क्षत्री अपमान नही सह सकते हैं

जिसको सुनने का ताव नहीं वह चुप कैसे रह सकता है

रघुवीर राम जी के होते अनुचित वाणी कह डाली है

यह शब्द बज्र से लगते है पृथ्वी वीरों से खाली है

मैं दृढ़ता पूर्वक कहता हूं है बलवालों की पृथ्वी यह

जिस दिन बलवान नहीं होंगे उस रोज न रहेगी पृथ्वी यह

ऋषि विश्वामित्र लक्ष्मण से:- बेटा लक्ष्मण जरा धैर्य से काम लो और थोड़ी देर के लिए गुस्से को

रोक लो [illegible] र तुम्हारा तेजी मे आना ठीक नही. क्यों जनक ने स्वयम्बर का सम्मान

[illegible] ही (धैर्य से) न कि युद्ध का ऐलान किया है. यह तो पहले ही बेचारा

युद्ध निरस हो रहा है. परन्तु तुम्हारी बहादुरी में कैसे फर्क आ गया राम जी के होते हुये तुम्हारा बोलने का कोई हक नहीं

लक्ष्मण विश्वामित्र से राधेश्याम :- मेरा स्वभाव ही ऐसा है अपमान न मुझको गंवारा है

है कृपा गुरु के चरणों की बल और प्रताप तुम्हारा है

अभीमान त्याग कर कहता हूं. आदेश तुम्हारा पावूं मैं

तो धनुष की क्या बीसात है. सारा ब्रह्मंड उठाऊ मैं

फिर कच्चे धागे सम्मान उसे दम भर में फाड़ फाड़ डालू

या गाजर मूली की नाईं चुटकी में तोड़ ताड़ डालू

थल को जल जल को थल कर दूं. लाऊ उतार सितारों को

सुरमे की तरह पिस डालु पृथ्वी और पहाड़ों को

फिर धनुष पुराना घिसा पिसा तिनके सा किस गीनती में है.

सैकड़ों कोस तक ले जाऊ. इतना बल तो अंगुली में है।

राम का गाना लक्ष्मण से :- लड़ना अच्छा नहीं भाई टुक लक्ष्मण को समाई। टेक.. तेजा साहब सुकला मेरे रहे
क्यों होते बे चैन, है इसमे कौन बड़ाई.

(1) वे मौका तेजी करना और बीना बात ही लड़ना

नहीं इसमें कोई बड़ाई टुक:...

(2) जो करोगे तुम नदानी. तो कुल की होगी हानी

दुनिया में होत हसाई टुक:....

(3) जीस बात को मुंह से बोलो. पहले मुंह में तोलो :

है इसमें ही दनाई टुक:

अगर पीता जी सुन पावेंगें. हम तुम को धमकावेंगे

(4) हो दोनों की रूसवाई" टुक:---

25

(5) तुम कुछ तो सोचो लक्ष्मण, नहीं दानव हमारे दुश्मन
क्यों इनसे करो लड़ाई, हम........

(6) नहीं खुशी से हम आये, मुनि विश्वामित्र जी लाये
रहो इनमें ही अनुयायी, हम लक्ष्मण....

वह काम करो भ्राता, यशवन्त रहे यश गाता
है अच्छी नहीं मुर्खताई, हम लक्ष्मण....

राम का नाटक लक्ष्मण से:- मेरे बहादुर भाई तुम्हारा यह केवल क्रोध है तुम्हारे कायर बताने की की का मजाक है।

विश्वामित्र का गाना राम से:- राम चलो मत देर करो तुम ही यह धनुष उठावोगे
और किसी की नहीं है ताकत चीला तुम ही चढ़ाओगे। टेक-

(1) सब जोर लगा कर हारे है बैठे मन मार बिचारे है
इसी इन्तजार में सारे है कुछ तुम ही कर दिखलाओगे। राम:...

(2) यह धनुष पदमी भारी है तो तुम्हे क्या दुश्वारी है
निश्चय ही विजय तुम्हारी है तुम्ही सीता को ब्याहोगे.. राम....

(3) अब चलो न ज्यादा श्याम करो, इस काम को अन्जाम करो
रघुकूल का रोशन नाम करो, दशरथ का यश फैलाओगे राम उठो....

विश्वामित्र का नाटक राम से:- हे रघुकूल भूषण अब किस बात का इन्तजार है, और तो जोर लगा चुके आखीर तुम्हारा बार है जावो अपनी वीरता के जोहर दिखाओ।

राम का गाना विश्वामित्र से:- मुनी जी आज्ञा आपकी सीर माथे मन्जूर
[illegible] तो मैं चुप रहा, था मैं भी मजबूर टेक....

[illegible] आशीर्वाद है आपका अगर राम के साथ
का अगर राम के साथ

लेकर तेरा आसरा चला यह करने काज
हे ईश्वर रखियो मेरी आज सभा में लाज.

राम का नाटक धनुष उठाकर :- क्या यह वही कमान है, जीसके वास्ते राजा जनक को इतना अभिमान है, जीसके
हाथ लगाते ही हर राज कुमार डरता है. देखिए इस कमान को चीला चढ़ता है.

राम धनुष को तोड़ देते है,, सीता वर माला पहना देती है,, सीता का चले जाना,,

राम विश्वामित्र से जाकर :- मुनीवर अब तो आपकी मन की मुरादें पुरी हुई..

विश्वामित्र राम से :- गले लगा कर :- हां बेटा तुमने क्षत्री वंश की लाज रख दिखाई, विश्वामित्र का चले जाना -

परशुराम से मुठ भेड़. लक्ष्मण संवाद — जनक का दरबार

परशुराम जनक से :- राधेश्याम :- हे जनक कहो क्या कारण है. यह भारी भीड़ भाड़ क्यों है.
यह अभी शोर सा कैसा था. वीरों में छेड़ छाड़ क्यों है.

क्रोध में :- वो जनक जनक जल्दी बतला यह धनुवा किसने तोड़ा है.
किसने इस भरे स्वयंवर में सीता से नाता जोड़ा है.

अत्यन्त शीघ्र बतला उसको वर्ना चौपट कर डालुंगा
जीतनी भी पृथ्वी है तेरी. सब उलट पुलट कर डालूंगा.

राम परशुराम से. राधेश्याम :- शिव धनुष तोड़ने वाला कोई ~~शिव~~ शिव प्यारा ही होगा.
जीसने ऐसा अपराध किया वह दास तुम्हारा ही होगा.

जो कृपा पात्र है गुरुओं की वह कब किससे डर सकता है.
जीस पर दया हो ब्राह्मणों की यह काम वही कर सकता है.

परशुराम रामसे क्रोध में राधेश्याम :- मैं कहता हूं सेवक वह है जीसका सेवा ही जीवन है.
जो बैरी कैसा काम करे. वह ~~बद~~ परसे का भोजन

लक्ष्मण परशु राम से :- ~~मैं कहता हूं~~ बोले सुख का संवाद अभी दुःख का विवाद बन
कड़ी बोली के कारण ही तोता पिंजरे !

भाई ने मीठे वचन कहे तो क्रोध और बढ़ आया है 27

सबसे पहले यह बोल उठे इसलिये चोर ठहराया है.

अच्छा अपराधी यही सही हमने ही जहर भी छोड़ा है

जो कुछ करना करो आप शिव धनुष हमी ने तोड़ा है.

परशुराम क्रोध में लक्ष्मण से :- राधे.. :- वो राजा के लड़के मुंह नही सम्भाल रहा है तू

मुझ जैसे क्रोधी के आगे आंखे मिला रहा है तू

लक्ष्मण परशुराम से क्रोध में राधेश्याम :- श्री मान तपस्वी ब्राह्मण है इसलिये मुझे यह कहना है.

ब्राह्मण का भूषण क्रोध नही जो महाराजा ने पहना है.

यह गहना है रजपूतों का जो पहना जाता है रण में

अपराध क्षमा हो महा मुने. चाहिये शान्ति ब्राह्मण में.

परशुराम लक्ष्मण से राधेश्याम क्रोध से :- अरे बालक क्या हुआ जो बात बढ़ाता जाता है

क्या जातधारी ब्राह्मण समझा जो मुझे डांटता जाता है.

मुझको सीधा ब्राह्मण न जान. मै क्षत्री कुल द्रोही हूं

बाल ब्रह्मचारी अति क्रोधी हूं निर्मोही हूं.

मेरे इस लोहे के कुल्हाड़े ने. लहू की नदी बहा दी है

इस आर्य भूमि में बहुत बार क्षत्राणी रान्ड बना दी है.

लक्ष्मण परशुराम से :- राधे :- अरे पंडित जी देखना नजर नहीं लग जाये

दवा लीजिए ख्वाब में दवा नहीं लग जाये

बस इस ही फरसे सुरों का स्वर्ग द्वार खुला

कुबे[illegible] र गांठ पर परशुई का बाजार खुला

का [illegible] एक गांठ

तैयार होजा तेरे मरने में अब बिल्कुल कलाम नही. अगर तेरी हाड्डियों का सुरमा न बनादूं तो मेरा नाम परशुराम नही।

राम परशुराम से :- जब आप को इसके कसूर वार होने से इन्कार है तो. इसमें फजूल तकरार है भैया

लक्ष्मण तुम इधर को आ जावो और इनको आद्योगन सताओ। राम परशुराम से :- महाराज जरा गुस्से को थाम

लीजिऐ और मेरे साथ कलाम कीजीए :

परशुराम राम से :- पहले इसको मेरी आखों से दूर कर दीजिऐ और फोरन यहां से काफूर कर दो।

लक्ष्मण परशुराम से :- इसका ईलाज तो मैं पहले ही बता चुका हूं आप अपनी आखों को बन्द

कर लीजिऐ और कानो में उंगली देलो :

परशुराम राम से :- देखो यह फिर बोलता है. और नाहक रस में विष घोलता है.

राम लक्ष्मण से :- पिछे हटा कर :- अब यह कदापी नही बोलेगा. कहिऐ क्या आज्ञा है.

परशुराम राम से :- क्या वास्तव ही तुम्हारा कसूर है।

राम परशुराम से :- बेशक जो दण्ड दे मुझे मन्जूर है.

परशुराम राम से :- मुझे शक है कि ये धनुष तुमने ही तोड़ा है.

राम परशुराम से :- महाराज, तो आपने मेरे बल को कम आजमाया है।

परशुराम धनुष अर्पण करके :- लीजिऐ इस धनुष का चिल्ला चढ़ा कर कमाल कीजिऐ और

मेरा इतमिनान कीजिऐ।

राम चिल्ला चढ़ा कर :- लीजिऐ महाराज चिल्ला चढ़ गया।

परशुराम सहम कर :- बस भगवान उतार लीजिऐ मेरा इतमिनान हो गया है।

राम परशुराम से :- मगर मेरा तो इतमिनान नही हुआ।

...से :- हे भगवन तुम्हारा इतमिनान कैसा।

...से :- मेरा इतमिनान ऐसा की मेरा तीर कमान पर चढ़ा है तो बिना किसी

...जा नही जाता।

परशुराम राम से :- तो भगवन यह तीर किसकी जान लेगा।

राम परशुराम से :- यह जान तुम्हारी लेगा, और किसकी।

परशुराम-राम से :- (कांपकर) :- ना महाराज ऐसा न करना, मैं मर जाऊंगा।

राम-परशुराम से :- हे ब्राह्मण कुमार - यह तीर तो तुम्हें सहना ही पड़ेगा, मगर धनुष रामो नहीं दूसरा कदापी नहीं चलाऊंगा।

परशुराम-राम से :- नहीं महाराज ऐसा न कीजिये, क्योंकि मेरी जान आधी तो अब भी निकल रही।

लक्ष्मण परशुराम से :- पण्डितजी बस हो चुके ठण्डे कुछ तो अपनी वीरता के जौहर दिखाइये।

राम-परशुराम से :- तुमको तो अपनी बात की शर्म नहीं, मगर शरण में आए हुए शत्रु पर वार करना क्षत्री का धर्म नहीं। मगर इस शर्त पर छोड़ता हूं कि किसी क्षत्री के मुकाबले पर न आना।

परशुराम-राम से :- हे भगवन आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं और अब विन्ध्याचल पर्वत पर जा कर भगवान का भजन करूंगा।

राम परशुराम से :- जाईए कृपा निधान।

लक्ष्मण-परशुराम से :- मिश्र जी, भोजन करते जाना, कभी हमारा भी भोजन कर लेना [illegible]
(सीन ड्राप)

★ दशरथ का दरबार ★

दशरथ का नाटक सभा से :- हे राज सभा के क्षत्री वीरों जिस बात के लिये मैंने आज दरबार लगाया है उस बात को तुमको कह सकूं। आपकी राय होतो मैं यह राज्य बड़े बेटे रामचन्द्र को सौंपना चाहता हूं क्योंकि मेरी उमर का चौथा पन आ गया है। वैसे भी पिता की हैसियत से मुताबिक राज्य को बड़े बेटे का ठीक रहेगा, आप इस बात गौर से सोच लें।

सभासद दशरथ से :- हे पृथ्वी राज हमें यह फैसला मन्जूर है। आप रस [illegible] की तैयारी [illegible]

दशरथ सभा से :- मेरी राय में तो कल 10 बजे का समय निश्चित रखता हूं। महलों से रामचन्द्र को बुला लाओ।

मन्त्री दशरथ से :- जैसी आज्ञा है महाराज आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं सीन चालू

राम दशरथ से :- हाथ जोड़ कर : पिताजी प्रणाम आपका सेवक आपकी आज्ञा अनुसार हाजिर है.

दशरथ राम से :- बेटा राज सभा की सम्मति के अनुसार कल तुमको राज तिलक दिया जायेगा.
यह अमानत तुम्हें विश्वास पात्र जान कर दी जाती है. जब तुम शाही ताज पहनोगे तो रघुकुल की
रसम इज्जत को हर प्रकार से लाज रखोगे।

राम दशरथ से :- सिर झुकाकर :- पिताजी आपका उपदेश मुझे हर तरह से मन्जूर है.

दशरथ सभा से :- इस वक्त दरबार बरखास्त किया जाता है और कल सुबह शाही ताज रामचन्द्र
के सिर होगा।

रंग में भंग   कैकयी का महल

मन्थरा कैकयी से :- रानी जी आप क्या [illegible] रही हो।

कैकयी मन्थरा से :- दासी मन्थरा आ तू बड़े देर से आई हो क्या रास्ते में कोई सहेली मिल गई
थी या दरबार में चली गई थी।

मन्थरा कैकयी से :- रानी जी क्या बताऊं आज एक ऐसी बात सुन आई जिसको सुनते
ही मेरे पांव तले की जमीन खिसक गई।

कैकयी मन्थरा से :- जरा हमें भी तो सुनाओ. ऐसी क्या बात सुनकर आई हो.

मन्थरा कैकयी से :- अजी क्या सुन आई हमारी तुम्हारी शामत आ गई.

कैकयी मन्थरा से :- राधे : अरी हमने सीस गुन्हारे है पर तूने काल बिखेरे है.
क्यों जो रो रही है अम्मू पावत यह कैसे बहाने है
या कहीं जमाउ कर आई हो भूखी अथवा प्यासी हो
है सौगन्ध बता जल्दी दासी क्यों तुझे उदासी है.

मन्थरा कैकयी से : राधेश्याम :- खुश गये आज कौशल्या के . है दया उसी पर विधना की

रानी किस घोर नींद में हो अब लोक चाल जीत रही.

तू सदा जीतती थी चौसर . पर अब तो हार रही है

लो देख गोट रानी किस घर पर मार खा रही है.

वे रंग में हैं अब रंग में है तू क्या पासे नृप के प्यारे है

तेरे छक्के छुट जाएंगे अब उनके तो पौ बारह है.

तुमको प्राण समझते थे . निशिवासर तेरे रहते है

प्यार भरत को करते है आंखों का तारा कहते है.

वे ही राजा वे ही दशरथ जड़ तेरी काट जाते है

हकदार राम को माना है उसको ही मुकुट पहनाते है.

कैकयी मन्थरा से क्रोध में आके :- चल निकल यहां से चण्डालनी किसने तेरी मति मारी है

जो स्वच्छ रुह की ढेरी में बन कर आई कीन गसी है.

अब जो ऐसे बचन कहे तो मुंह तेरा नुचवा दुंगी

अगर राजा राम होगा तो मुंह मांगा इनाम दुंगी.

मन्थरा का गाना कैकयी से :- कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो :-

रानी तू है भोली भाली . अपने श्रृंगार पर मतवाली

तू तो रह गई बिल्कुल खाली . जो रही बाह सिरहाने दे . कल :...

बेसमझ तेरा दिल है पाक . अपना समझा उसे दुलास

मेरी कटवा दिजे नाक . तुमको पता अगर आने दे :- कल को....

जब तक नहीं था कुछ अख्तियार तब तक था प्यार में दार

जिस दिन होगा मुख्त्यार तुझे जो रोटी कभी खाने दो। भला बो....

उड़ोजा तुम महलों में काग. छूटे उधर भरत के भाग

तू अब भी अपनी नींद को त्याग उसको मत और फैलाने दे. भला....

राधेश्याम:- क्या गरज पड़ी ऐसी मेरी जो अपना मुँह मुड़वाऊंगी

दोनों में कोई राजा हो तो मैं दासी ही कहलाऊंगी.

मैंने शरत अदा करदी. अब तलक नमक जो खाया है.

इसलिए भरत का है ख्याल. बरसों तक गोद खिलाया है.

यदि इस रण में हार गई तो भरत रहेगा दासों में

रखेगी तुमको कौशल्या. दासी सम्मान रनीवासों में.

कैकयी मन्थरा से राधे:- दासी तुने ठीक कहा अब ध्यान मुझे भी होता है.

अपना अपना ही होता है गैर गैर ही होता है.

मेरा भला चाहती है तू तुझको पहचान लिया मैंने.

निश्चय ही कपट कूप में है यह सब जान लिया मैंने.

तु बुद्धि मति है बुद्धि है. तू ही मार्ग दिखला मुझको.

हो भरतलाल को राज तिलक वह सरल उपाय बता मुझको.

कैकयी का गाना मन्थरा से:- कोई बांदी बताओ तदबीर अब मैं कैसे यत्न बनाऊं : टेक...

1. मुझको नहीं था बिलकुल ख्याल. मैं बेसके हो जाती पायमाल

तुने कर दिया नमक हलाल. नहीं तेरा अहसान भुलाऊं. : बांदी.....

अगर तू नहीं कराती याद. मैं तो हो जाती बरबाद

तेरी हमदर्दी की दाद. देती हुई सदा गुण गाऊं. बांदी....

ई खबर वक्त पर सारी. तुने खूब करी हुसियारी.

... मुझे प्यारी. ले हार तुझे पहनाऊं बांदी....

लेकिन रतना और बतादे. करनो बहाना कुछ सिखलादे.
ऐसी कोई नेक सलाह दे. जीससे काज पाब हो जावे. कांई...
5. मगर यह बन गया मेरा काम. तुमको भी खूब ईनाम.
बैठी पलंग पर कर आराम. तुमसे न कुछ न का बनवाऊ. कांई....

कैकयी मन्थरा से बोलके :- प्यारी दासी मुझे यह बता मैं किस तरह राजा को समझाऊंगी
वह तो राज सभा मैं ही सब को कह चुके हैं.

मन्थरा कैकयी से राधे :- होगा यह याद तुम्हे रानी दो वर राजा पर बाकी हैं
यह घर युद्ध जितने के लिए दो ही तीर काफी हैं.
नृप जब महलो मैं आये तिर्छी भव कमानों को
पहले दिखाओ त्रिया चरित्र. फिर मांगो वरदानों को.
मांगना खूब चतुराई से. जो मांग सफलता पा जाए
उस समय मांगना जब राजा सौगन्ध राम की खा जाए.
कहना दो वचन मांगती हूं. राजा श्री भरत लाल जी हो
चौदह वर्षों को रामचन्द्र तपसी बन कर बनवासी हो.

कैकयी मन्थरा से राधे :- मैं कहती प्यारी दासी. तेरी मती की बलिहारी है
है अब भरत पुत्र तेरा. तु ही उसकी महतारी है.
मुझ भोली ने क्या समझा था. क्या राम भरत की जोड़ी है
प्यारी तुम पर वारी जाऊं. दिवार कपट की तोड़ी है.
मन्थरा कदापी नहीं होगी. कौशल्या की मन मानी अब
राज करेगा भरत लाल. यह हठ मैंने यह ठानी अब

मन्थरा कैकयी से राधे.... सब समझ गई सब जान गई. अब आगला गाना

वह देखो सन्ध्या होती है. अब जाओ कोप भवन में तुम.

• कैकेयी के महल में दशरथ का प्रवेश •

दशरथ कैकेयी से-राधेः- हे प्राण प्रिय है यह क्या, बोले ढग बेढ़ंग क्यों है.

सुरज मुखी फूल से मुखड़े का हो रहा मालिन रंग क्यों है,

दशरथ का राजा कहते बोले:- क्या मुशीबत पड़ी तुम पर ए प्रिय जी

(1) हाल क्या है मुझे सुना तो सही

सिर हाने खड़ा हूं बड़ी देर से

जरा गर्दन को ऊपर उठा तो सही.

(2) मेरी प्यारी तुम्हारी दशा क्या हुई

होश अपने ठिकाने पर ला तो सही

छोड़ कर अर्श को क्यों पड़ी फर्श पर

पास मेरे ए प्यारी आ तो सही.

बात मेरे दिलदार बता तो सही.

3. हो गया आन की आन में रोग क्या

नबज अपनी मुझे दिखा तो सही

आ उठाऊ पलंग पर बैठाऊ तुझे

हाथ अपना इधर को बढ़ा तो सही.

4. क्या सताया दुखाया किसी ने तुझे

नाम उसका मुझे बता तो सही

काट टुकड़े जब चैन आवे तभी

तू जबा जरा सी हिला तो सही.

5. हो गई मुझसे नराज क्यों इस कदर

जरा मुंह पर से आंचल उठा तो सही
रोग होतो बुलाऊ अभी वैद्य को
बात को ठिकाने लगाते सही.

दशरथ का नाटक कैकेयी से :- रानी :- जीन आंखों ने ही त्रास दिया. वे आंसू छलका हुआं है
जीसने डीया जड़की बांटी हो. वह ठिन्दा कटका हुआं है.
क्यों कोप भवन में बैठी हो. क्यों भारी तुमको पल पल है.
जो तुम्हारा प्राण सा प्यारा है. उसका आभीषेक दिवस कल है.
उठो सोहल्ह सिंगार करो. क्यो फुली रूसीत हो रानी
क्या संकट क्या पीरा है. क्या इच्छा है मांगो रानी.

कैकेयी का गाना बैठते :- मुझ नसीबों जली भी न पूछो व्यथा
जावो आनंद अपना मनावो बलम
न जीऊं न मरू यो ही आहें भरू
दोस किस पर धरू मेरे फूटे करम.

2: कर दिया मुझको बरबाद बस आपने
मेरे दिल का कुछ भी रहा ना भरम
आज रानी से बांदि हुई कैकेयी
कौन पूछे भला मेरे दिल का मरम.

3: दे दिया राम को राज बस आपने
भरत को कर दिया बनका एक दम
क्या नहीं भरत बेटा रहा आपका
ऐसा करते हुए भी न आई शर्म.

राधेश्याम :- मैं कौन तुम्हारी होती हूं. क्यों मुझे सताने आये हो.
कैकयी

मन में रखते हो स्वार्थ भाव मुझे मनाने आये हो.

इस जगह में कौन हुआ जिसका. सब मुंह देखे की चाहत है.

है वही प्राण प्रिय जिससे हरी अपनायत है.

तुम कहते हो मांगो रानी, वह जान मांग पर मिलती है.

बिन मांगे मोती मिलते हैं. मांगे से भीख न मिलती है.

अच्छा जो मांग सीस पर है. देखिए मांग क्या देती है.

बिखरे बालों को मांग सदा हाथों से बन्धवा देती है.

दशरथ कैकयी से :- राधे:- ऐसे वैसे से मत मांगो. मांगो उसे जो खरा हो.

जो सदा मांग का प्रेमी हो. जो सदा बात का सच्चा हो.

इच्छा ये बातें जाने दो बतलाओ तो क्यों रूठी हो.

तुम तो फूलों सी हंसती थी इस समय क्यों रोती हो.

कैकयी दशरथ से राधेश्याम :- प्यारे तुम मेरे स्वामी हो. मेरा मन रखने वाले हो

रघुवंशी हो सत्यवादी हो प्रण पालन करने वाले हो

चाहे हो जावो मित्र शत्रु. चाहे संसार पलट जावे

सिर कट जाए तो कट जाए. वचन न जाने पावे.

कुछ ध्यान तुम्हें है तुम पर है. मेरे दो वरदान प्रभो

वह ही धन मुझको दो बनते हो यदि धनवान प्रभो.

दशरथ कैकयी से राधेश्याम :- दो वर तो कोई चीज नहीं. जितने भी चाहे ले लो. रानी

मैंने सीखी है नहीं नहीं जो भी मन भावे ले लो. रानी

... बरसे न बुंद. यह सब धोखा मेघों में है

... दिया दिया. बस एक वाद मेरा है.

कैकयी दशरथ से राधे :- कुछ क्रोध नही अपमान नही. करती हूं मैं उपहास नही

सच तो यह है मुझको तो अब नर्दो का विश्वास नही

चिकनी चुपड़ी बातो कहकर मुझ अबला को मत बहकावो.

सच्चे हो तो रघुवंशी. सौगन्ध राम की खा जावो,,

दशरथ कैकयी से :- कसम :- प्रमात्मा गवाह है मेरा मनुचित नही होगा. रानी

अयोध्या पति नरेश धर्म से विचलित नही होगा रानी

है मान पहली मतबा इस पाक नामकी

खाता हूं तेरे सामने सौगन्ध राम की.

कैकयी दशरथ से :राधेश्याम :- लो सुनो प्राण पती प्राणनाथ. यह रानी आज मागती है

कौशल्या नदंन के बदले निज सुत को राज मागती है.

वचन दुसरा जो है मेरा. सो सुनकर कम्पित मत होना.

अयोध्या नरेश कहलाते हो तो सत विचलित मत होना.

राजा जो राम हो रहा है वह राजा नही उदासी हो.

कल ही से चौदह वर्षो को तपसी बन कर बनवासी हो.

नरेश प्यार सच्चा हो तो प्यारी के सन्मुख खोलो.

रणवीर अगर कहलाते हो तो बोलो एवमं अस्तु बोलो.

दशरथ का गाना कैकयी से ख्याल :- अरी केकयी मुझे सच्च बता. तुझे राम से क्या वैर है.

टेक :- क्या भरत बेटा आपका रामचन्द्र कोलि गैर है.

जहां राम दिलका सरूर है. वहा भरत आंखो का नूर है.

हां इतनी कातजरूर है कि वह मुल्क का विलगैर है

2. मुझे दोनों एक समान है. दशरथ के दोनों प्राण है

मैं जीसम हूं वह जान है. नहीं चैन उनके बगैर है.

3. ये कर दगा मत प्राण ले. मेरी इस तरह मत जान ले.

हठ छोड़ कहना मान ले. इसमें ही सब की खैर है.

4. कुल नष्ट तेरा हो जाएगा. क्या हाथ तेरे आएगा

तुझे कुछ न जीना भाएगा. क्यों खा रही खुद जहर है.

दशरथ का नाटक कैकयी से राघो:- सब पुत्र पिता को समान है. तु भी यह बात जानती है.

है मुझे एक से राम भरत. वह भगवान मेरा साक्षी है.

पहला वर जो मांगा तुमने वह नहीं हुआ है आभास मुझे.

मिल जाए राज भरत को उत्सव सहित स्वीकार मुझे.

रानी रानी यह तेरा पति जो तेरा हृदय देवता है.

इस समय पांव पकड़ कर तेरे से बस इतनी भीख मांगता है.

तपसी हो कर दूर न हो मुझको आनंद धाम मेरा

मेरी इन बूढ़ी आंखों के आगे ही रहे राम मेरा.

कैकयी दशरथ से राघो:- दो वर जो मांगे है मैंने. अब उनको बदल नहीं सकती.

पड़ गई रेखा जब पत्थर पर धोने से मिट नहीं सकती.

यदि हृदय आपका दुखता हो तो. एक सुझाव सुझाती हूं.

बूढ़ी आंखों के आगे ही यह रहे उपाय बताती हूं

अब शेष बात घर में ही है कुछ पहलों में अपमान नहीं

तुम अपने मुख से यह कह दो. कुछ किसको वरदान नहीं.

44

दशरथ कैकयी से राधेश्याम :- क्रोध :- वो नीच बुद्धि नारी. उच्चे से देवे गिराती है.

जो सत्य हमारा जीवन है उससे से तू हमें डिगाती है.

हम सूर्यवंशी की चादर मे कालिमा नहीं आने देंगे

सुनती है सर्वस देंगे हम, पर वचन नहीं जाने देंगे

क्या उलझन है वरदान न दे तो धर्म हमारा जाता है

उस ओर राम बन में जाता है तो प्राण सुखा जाता है

रानी-२ तूं क्या कहती है. मेरा तो प्राण धर्म पर है

मैं क्या तूं क्या, सन्ताने क्या सब कुछ बलिदान धर्म पर है.

कैकयी दशरथ से राधेश्याम :- सत्यवादी था नृप हरिचन्द्र जीसने सत तजा न संकट मे

जीसकी सच्चाई का चीराग. जगमगा रहा है मरघट मे.

मैं तुमसे हरिचन्द्र जैसा मरघट का वास न मांग रही

मैं तुमसे शिवी दधीची जैसा हड्डी या मांस न मांग रही.

मैं मांग रही अपना कर्जा जो देना तुमको वाजीब है

तुं हरिचन्द्र के कुल में होते दे दो यही मुनासिब है.

दशरथ कैकयी राधेश्याम :- मेरा कुछ नहीं बीगड़ता है. तूं जो मुझको ललकार रही

रानी तू अपने पांव में है आप कुल्हाड़ी मार रही

आज नहीं है आपे में जिस दिन आपे में आएगी

उस दिन अपनी करनी को सिर धुन धुन कर पछताएगी.

रानी रानी आंचल पसार कर्जा भी ले और दान भी ले.

(यहां पर कोश हुआ है,, ले राज और बनवास भी ले. पर भी ले और प्राण भी ले

[illegible] मन्त्री दशरथ से :- महाराज राजतिलक का सब सम्मान तैयार है, और आपका सम्मान

कैकयी मन्त्री से,, हे मन्त्री. महाराज राज के कार्य में सारी रात जागते रहे, मन्त्री जी आप रामचन्द्र को यहां पर भेज दें.

मन्त्री कैकयी से:- जैसी आज्ञा हो. रामचन्द्र को आपका सन्देश पहुंचाता हूं.

राम दशरथ से:- पिताजी प्रणाम, आपका सेवक आपकी आज्ञा अनुसार आपके चरणों में हाजिर है.

दशरथ राम से:- आंख खोलकर:: बेटा केवल तुम्हें देखने के लिए आशा थी. अब तो हमारी अन्तिम यात्रा की तैयारी है.

राम दशरथ से रोकर:- पिताजी खैर तो है. चेहरे पर यह कैसी उदासी प्रतीत हो रही है.

दशरथ राम:- आंख में रोकर:- आ बेटा जरा गले से लगा लूं अब मेरा यह आखरी आशीर्वाद है.

राम का गाना बहरेतवील:- क्या हुकम है मुझे आप आज्ञा करो

(1) हाथ, बांधे खड़ा ताबेदार है पिता.

मेरे जीते जी हो कोई कष्ट आपको

मेरे जीने पर है धिक्कार ऐ पिता

आपको देख इस दशा में मेरा

हो रहा सीना फिगार है पिता

कुछ वजह बेकली की बतलाओ मुझे

पूछता हूं बार-बार है पिता

3. जान मेरी निकलने को तैयार है

नजर आते है खोटे आसार है पिता

कोई दु:ख सुख का साथी बिन आपके

कौन मुझको करेगा प्यार है पिता.

कैकयी राम से :- हां बेटा बिल्कुल ठीक है मेरे लाल अभी रवाना हो जाओ. और अधिक देर न लगाओ क्योंकि आपको देख कर इनको सन्ताप हो रहा है.

राधेश्याम :- है अन्तिम आज्ञा और एक फिर लौट यहीं पर आना तुम
मैं भगवे वस्त्र मंगाती हूं वह पहन वनों में जाना तुम:

राम कैकयी से : जैसी आज्ञा हो माताजी : राम का चले जाना : परदे में :

दशरथ कैकयी से नारका :- ओ बेहया : वैसे तो तूने जला कर खाक कर दिया. हाय हाय भगवान यह कैसी स्त्री है जो एक और दोष एक पर धर रही है. कुछ तो ईश्वर का भय कर मगर याद रख दुखीयां के साथ हंसी करना मुनासिब नहीं और किसी के जख्म पर नमक छिड़कना ठीक नहीं { यहां पर दशरथ का बेहोश होना }

(तीसरा सीन शुरू) (सीन समाप्त पर्दा)

कोशल्या का महल

राम कौशल्या से :- प्रणाम माता जी.

कौशल्या राम से :- माथा चुमकर : खुश रहो मेरे लाल. आसन की ओर ईसारा करके- यहां पर बैठो. मेरे लाल. मैं अभी जाती हूं और खाने के लिए कुछ मिठाई लाती हूं.

राम कौशल्या से :- माता जी बस रहने दिजिए, और जाने की आज्ञा दिजिए.

कौशल्या राम से :- न बेटा अधिक देर न लगाऊंगी. मगर थोड़ा सा भोजन तुम्हे जरूर खिलाऊंगी क्योंकि आज तुम्हे राज तिलक की रसम होनी है।

राम कौशल्या से :- माता जी राज तिलक के लिए जो वचन निकलना था वह तो कभी का निकल गया मुझे बजाए अयोध्या के जंगल का राज्य मिल गया। (कौशल्या का सहित भोजन गिर जाना)

कौशल्या राम से :- बेटा ऐसा शब्द मुंह से क्यों निकालते हो. क्या मेरी जान को चीन्ता में क्यों डालते हो:

राम-कौशल्या से :- माता जी जो बात मैंने कही है वास्तव में सही है।

राम का गमन तर्ज लावनी कौशल्या से :- राज के बदले मुझको माता हो गया हुक्म फकीरी का 144

टेक: खड़ा मुन्तजर है माता तेरे हुकम अखीर का ...

दिया भरत को राज पिता ने मुझे हुकम बन जाने का

चौदह साल रहूंगा बन में हुकम नहीं घर आने का

हुकम नहीं रहा अब मुझे इस घर का खाना खाने का.

नहीं किसी का दोस है माता बदला रंग जमाने का

राज पाट का गम नहीं मुझको न कुछ फिकर अमीरी का . राज के बदले : ....

कौशल्या राम से लावनी :- थी खुशी में बेटा इन बातों का शान गुमान नहीं
बौली

टेक: सुन कर तेरी बात लाड़ले . रही बदन में जान नहीं

तूने की बन तैयारी कौशल्या की खैर नहीं

प्राण त्याग दूं अभी रहूंगी जीन्दा तेरे बगैर नहीं

दे दे राज खुशी से उसको . उससे मुझे कोई बैर नहीं

चंद की बेटा तू बेटा भरत मुझे कोई गैर नहीं

बिना राज के बेटा मेरी घटती कोई शान नहीं सुन कर :- ....

राम मॉ० हुकम पिता का साथ जान के जब तक दम में दम माता .

ठाठ बाट और राजपाट का मुझको नहीं है गम माता

वचन पिता का पूरा कर दूं दिजे आप हुकम माता.

रघुवंश की आन न जाए सिर ही चाहे कलम माता

फिकर नहीं कुछ फिकर फिकर फकत पिता की पीरी का ,, राज के ...

कौशल्या राम से :- मिला भरत को राज मुझे इसका नहीं कुछ को गम बेटा

मेरे वास्ते भरत राम दोनों ही एक सम बेटा.

नहीं किसी का कुछ भी बिगड़ा फूटे मेरे करम बेटा
जाने से तू पहले मर जा सिर को मेरे कसम बेटा
तुझ बिन मेरे लाल मुझे जिन्दा रहना आसान नहीं   सुन कर....

राम कौ० से :- चन्द रोज की बात है थोड़े दिन तक करो सबर माता
रोने धोने का नहीं है मौका दिल पर करो जबर माता
प्रबन्ध के चक्कर में होते शेर जबर माता
क्या जाने क्या होगा कल को किसे खबर माता
क्या कोसी पर गीता ने सलां हुआ अमर तकदीरी का,,   राजा के....

कौशल्या राम से :- मेरे दिल की मैं ही जानूं और को नहीं खबर बेटा
तुमको करके दूर नजर से कैसे करूं सबर बेटा
बेसक दे दे राज भरत को मेरा नहीं उजर बेटा
मां बेटा एक जगह बैठ कर कर लेंगे यहीं गुजर बेटा
तू हो मेरे पास मुझे चाहिए और समान नहीं.   सुन कर---

राम कौशल्या से :- चौदह साल जमाना क्या जल्द खतम हो जाएगा
एक-2 दिन घटते घटते आखिर कम हो जाएगा
एक रोज सब अदना आला एक ही सम हो जाएगा
ईश्वर आज्ञा के आगे सब का सिर खम हो जाएगा
नहीं रहेंगे भेद भाव कुछ शाही और वजीरी का,,   राजा के-----

कौशल्या राम से :- चौदह साल सदी का हिस्सा कहने को मामूली है
लेकिन मुझको तो ये बेटा एक-एक दिन भी शूली है
तुम तो हो खुद विद्वान बात ना तुमसे भूली है

हुकम पिता का मानोगे तो मेरा हुकम अदुली है

मेरा हक है उनसे ज्यादा क्या तू मेरी सन्तान नहीं,, सुन कर - - -

राम कौ० सं:- ऐसे मौके जिन्दगी में बारबार नहीं आते हैं.

दुःख सुख में जो रहे सम रस वही मनुष्य कहलाते हैं

रंज मुसीबत गर्दीश गम इन्सानों पर ही आते हैं

वक्त मुसीबत धीर पुरुष नहीं पीछे कदम हटाते हैं

नहीं मुझे अफसोस जरा नहीं बारठ कुछ दलगीरी का राजा के - - -

कौ० राम सं:- ऐ बेटा क्या मैंने तुमको इसलिए ही पाला था

यदि कांटा दिखाने को क्या तुने होस सम्भाला था

इसलिए अपने को सौ सौ विस्ता में डाला था

खूब बुढ़ापे में की सेवा करना यही उजाला था

क्या समझाऊं ज्यादा तुमको तू कोई नदान नहीं सुनकर तेरी - - -

कौशल्या राम सं नाटक:- हे बेटा तुम तो यह अच्छी तरह से जानते हो कि पिता से ज्यादा

हक माता का सन्तान पर होता है.

राम कौ० सं:- बेसक माता इसमें क्या शक है.

कौशल्या राम सं:- तो स्वामी जी की उपेक्षा तुम पर मेरा हक ज्यादा है.

राम कौ० सं:- जब मैं मान चुका हूं तो इसको दोहराना बेफायदा है,

कौ० राम सं:- अवाज से या सच्चे दिल से.

राम कौ० सं:- दिल से नहीं बल्कि सच्चे दिल से.

कौ० राम सं:- दिल ही दिल में प्रसन्न होकर. तो अब मेरा आदेश

है कि तुम बन न जाओ।

राम कौ० से :- माताजी मैंने आपकी दिली मन्सा को समझ लिया. मगर यह आपका उलटा ख्याल है।

कौ० राम से :- बेटा वह किस तरह :

राम कौ० से :- वह इस तरह है कि पिताजी हम दोनों के स्वामी है. और उनकी आज्ञा का पालन करना हम दोनों का फर्ज है. क्योंकि वह आपके पति है और मेरे पिता है. इसलिए उनकी आज्ञा विरुद्ध चलना हम दोनों के लिए पाप है. इसलिए आपकी आज्ञा मानने के लिए लाचार नहीं;

कौशल्या कारोना राम से :- बेटा आप जिस वक्त बन में गए मेरा तो दम ही निकल जाएगा।

राम का गाना : जाती है रोके मतना माँ मेरी ए रोके मतना :-

राम कौ० से :- माता जी आप धैर्य से काम लें,

कौ० राम से :- बेटा किसके आसरे कोई सहारा भी हो.

राम कौ० से :- माताजी जब वह दिन न रहे तो यह भी नहीं रहेंगे,,

कौ० राम से रोकर :- अच्छा बेटा जिस तरह होगा जान पर जबर सहेंगे. मगर उस पराई बेटी को किस तरह से समझाऐंगे ।। सीता का अन्दर से आना :

सीता कौशल्या से :- माता जी प्रणाम . कहिए क्या आज्ञा है.

कौ० सीता से :- रोकर :- बेटी क्या बताऊं, और कैसे सुनाऊ, यह खुद समझा देंगे: और सारा समाचार सुना देंगे:

सीता राम से :- हे प्राणनाथ, माता जी ये क्या फरमा रही हैं और क्यों इस प्रकार आंसू बहा रही हैं। यदि कुछ हरज न हो तो मुझे भी बता दिजिए।

राम सीता से :- प्रिय जी, पिता जी की आज्ञा से चौदह वर्षों के लिए वन में जाता हूँ और तो सबने आज्ञा दे दी, अब तुमसे आज्ञा चाहता हूँ इसमें न पिता जी का दोष है न माता कैकई का कसूर है बल्कि ईश्वर को इसी तरह मन्जूर है, हे प्रिय चौदह साल से अधिक [illegible] दिन भी नहीं लगाऊगा

मैं ले डुकम पिता का मान आज ही जाता हूँ जंगल को

गाना है : ~~[illegible]~~ ।

सीता का गाना :- रहना यहां नहीं मंजूर आपके साथ चलूंगी बन में . टेक..

(१) सुख में रही आपके साथ. दुःख कहां अकेले जात

कैसे जीवूंगी तुम बिन नाथ, त्याग दूं प्राण यहीं स्वछन में., रहना यहां.....

(२) अयोध्या वहीं जहां पर राम, यहां रहने का क्या परिणाम.

करो जो तुम बन में विश्राम. काम क्या है मेरा महलन में., रहना.....

(३) हो गया क्या मुझसे अपराध, करो न यों मुझको बरबाद.

जिस दिन रहे आपकी याद. झर झर आये नीर नैनन में, रहना.....

(४) दिया था माता ने उपदेश, चाहे दुःख हो चाहे क्लेश.

हो घर में चाहे प्रदेश, रहना स्वामी के चरणन में. रहना.....

(५) सीता का नाटक राम से :- हे प्राण नाथ जो कुछ पिता की आज्ञा है. उसके बारे में मुझको न कुछ एतराज है.

वह तो हर तरह से मालिक और मुख्तार है. हे स्वामीजी आप खुशी से उनके हुकम की तामील

कीजिये. मगर मुझ दासी को साथ चलने की आज्ञा दीजिये. जब आपका जंगल में कयाम है तो

मेरा अयोध्या में क्या काम है।

राम सीता से :- प्रिय जी तुम जंगल के कष्ट सहन नहीं कर सकोगी.

सीता राम से :- हे स्वामीजी आपके चरणों में रह कर सब कष्ट दूर होंगे.

राम सीता से :- वहां जंगली जानवर तुमको सतायेंगे.

सीता राम से :- जंगली जानवरों से अपना दिल बहलायेंगे.

कहना मानो मेरी प्यारी सिया लौ पलट फिरि से ना मानिये

राम का सीता से गाना :- घर बैठो न बन को चलो तुम सिया.. टेक.

(१) पत्ते बिछा के भूमि पर सोया न जायेगा.

चौदह. सिंह जोर से रोआ न जायेगा

रात होगी अन्धेरी. न होगा दिया : घर बैठो.....

बन खण्ड में हर तरह की मुसीबत उठाओगी.

कहां कंकरों की राहों में कैसे चल पाओगी

दुःख होगा जब पांव में छाला छिया घर बैठो....

(3) रखा पलंग से पांव न निचे उतार कर

बन में कहीं बैठ जाओगी हार कर

पछताओगी पिछे न कहना किया,, घर बैठो....

राम का नाटक सीता से - ठीक है प्यारी तुम मुसीबत के वक्त काम आती हो, यह आर्य स्त्री का धर्म है, फिर भी मैं कहता हूं आपका घर में रहना ही ठीक है.

सीता का गाना वहरेतबील :- जो पिता का हुकम है खुशी से करो

दुगी हरगीज उसमें दखल ही नहीं

साथ जाऊंगी मैं जीवन आपके.

इस जगाह रहू एक पल भी नहीं

साया बन कर रहूंगी संग आपके

न ससूर घर रहू न रहू बाप के

क्यों देते हो बदले किस पाप के

देखना चाहते हो जो मेरी सकल ही नहीं.

तुम पिता का बचन तो निभाने लगे

काल अपना मगर क्यों भुलाने लगे

मुझको उलटी अकल क्यों सिखाने लगे

मैं मान... पे हरगीज अमल ही नहीं :-

...! - स्वामीजी मुझे आपकी आज्ञा हर तरह से मन्जूर है. मगर अपने

50

धर्म से सीता लचार है. हे स्वामी जी आप अपने को तो कलंक से बचाते हो मगर यह कलंक मुझ पर लगाना चाहते हो. हे पति जी मरते मर जाऊंगी मगर पिता जनक तथा माता धरणी के कलंक लगाऊंगी.

राम सीता का गाना मिलना:- तु अयोध्या मे रहो मेरी प्यारी - राम

पिया हरगीज नही - सीता

(1) वहां धाड़ेंगे शेर - राम

है हम भी दलेर = सीता

वो कहना मानो जनक की दुलारी = राम

पिया जरूरी नही सीता

2. वहां कौन होगा सहाई - राम

आप लक्ष्मण के भाई = सीता

हट छोड़ो न मेरी प्यारी = राम

पिया परवाह नही = सीता:.

राम सीता से बोलना:- अच्छा प्रिय चलो. अब मुझे विश्वास हो गया है कि अब तुम नहीं मानोगी है.

अच्छा माताओं को नमस्कार करो :-

सीता कौशल्या से पांव पकड़कर:- रोते हुऐ:. माता जी आपके पांव लगाती हूं और आज्ञा के लिए प्रार्थना करती हूं ..

कौ॰ सीता से:- बेटी क्या बताऊ. रोते रोते आंखो का पानी खत्म हो गया. अब तो अपनी किस्मत को रो रही थी. अब तुम भी साथ छोड़ने को है. अच्छा बेटी किसी पर क्या गीला है. मुझको तो अपने कर्मो का फल मिला है. मुछौत हो जाना.

[illegible]मण का क्रोध में आना इसी सिनपर,, अब तक खून जीगर पिया. अपने [illegible] को खूब [illegible]. माता जी हालत देखकर सीना चाक हो गया. मेरी जीन्दग[illegible]

और फटकार है :((हाथ से सिर उठाकर)) माता जी आखें खोलो. तुम्हारा लक्ष्मण तुम्हारे कदमों पर निसार है. अगर न बोलती हो तो (खंजर निकाल कर) लक्ष्मण भी तुमसे पहले मरने को तैयार है.

राम लक्ष्मण से:- हाथ पकड़ कर:- भैया होश करो इस कायर पन का क्या अर्थ है.

लक्ष्मण राम से दर्द में:- भैया गजब अन्धेर है. जब खुद राज के हकदार है, तो दूसरे को राज करने पर क्या अधिकार है. अगर किसी की हिमत है तो दो हाथ देखें और अपने दिखाये. ताकी राज करने का मजा भी आजावे. मैं यहां पर किसी की बेईमानी नहीं चलने दूंगा।

राम लक्ष्मण से:- प्यारे लक्ष्मण तुम किस के हाथ देखोगे और किस को अपने दिखाओगे और किस के सन्मुख ~~तल~~ तलवार उठावोगे.

लक्ष्मण राम से:- तमाम कुल का नास हो रहा है. उधर पिता जी की हालत बद्तर है. उधर माता जी जान खो रही है. न मालूम भ्राता जी तुम्हें कौनसा चाव चढ़ रहा है. हां भरत इस तरह अवश्य राज कर लेगा. और सूर्यवंशी ताज अपने सिर पर धर लेगा.

राम लक्ष्मण से:- प्यारे भ्राता जरा गुसे को दिल निकालो, इसमें भरत का क्या कसूर है. वह तो यहां से कोसों दूर है. माता कैकयी का भी एक यही बहाना है. दर असल हमारी आजमाइस का जमाना है. आप मामूली सी बात पर घबरा गए हो क्यों दुनियां को हंसा रहे हो,,

लक्ष्मण राम से:- बहुत अच्छा भैया रघूकुल की यही रसम है तो. अयोद्या में रहना मेरे लिये भी कसम है.

राम लक्ष्मण से:- भैया तुम भी साथ जावोगे तो भरत का क्या हाल होगा.

लक्ष्मण राम से:- भैया लक्ष्मण से कैसा सवाल.

राम लक्ष्मण से:- इस अवस्था में उसका जिन्दा रहना सख्त मुहाल है.

लक्ष्मण रा[illegible] से:- लक्ष्मण उससे पहले मरने के लिए तैयार है.

[illegible] से:- भैया तुम्हारी इस जीद से सारा कुल वे चीराग हो जाएगा।

लक्ष्मण राम से :- आपकी आज्ञा शीरो धार्य है. मगर मैं इस जगह नहीं रह सकता. और आपकी जुदाई का सदमा नहीं सह सकता. अगर आप मुझे यहां छोड़ जाएगें तो शरीर तो यहां जरूर रह जाएगा. मगर प्राण आपके साथ जाएगें.

सुमित्रा अन्दर से आकर :- शाबाश बेटा शाबास. बेटा आज तूने मेरे दुध का हक दे दिया.

राम लक्ष्मण से :- भैया उचीत तो यही था तुम यहीं पर रहते. और भरत का राज कार्य में हाथ बटाते. अगर तुम्हारा इरादा यही है. तो अब देर करना बे फायदा है. अच्छा भैया माताओं को अन्तिम नमस्कार करो. और बन की राह पड़ो.

कौशल्या राम से :- बेटा दिल तो नहीं चाहता की तुम को यहां से विदा करूं परन्तु क्या करूं मुझे धर्म की जंजीरों ने जकड़ रखा है. बेटा तुम्हें इतनी नशीहत जरूर करती हूं. जीस तरह तुमने तीनों ने पिठ दिखाई है. उसी तरह आकर तीनों अपना मुख दिखाना.

राम से राधेश्याम :- अच्छा जावो मेरे लालन अब बन ही तुम्हें अयोध्या है
आशीष यही है माता की दिन पर दिन अपने प्रतिष्ठा है.

कौ० लक्ष्मण से :- देखना लाल मेरे हो तुम तो सत पर सदा अड़े रहना
चौदह वर्षों की सेवा में, बीरों की भांती खड़े रहना.
~~कामूत~~ जो पिछे हटे लाल तो. क्षत्री धर्म मिटा दोगे.
कदाचित
जावो प्रसन्न रखो उनको. जो सुख मंगल के दाता है
अब पिता तुम्हारे रामचन्द्र. अब सिया तुम्हारी माता है.

शंकर :- अच्छा बेटा जाओ भगवान तुम्हें हर तरह से खुश रखेंगे :-

कौशल्या सीन खतम :- राम लक्ष्मण सीता परदे से बाहर बात चीत :

राम लक्ष्मण से :- चलो भैया माता कैकयी से भी वीदा ले लें. और सीता जी के दर्शन.

लक्ष्मण राम से :- हां भैया चलो.

कैकयी का महल दशरथ कैकयी. मन्त्री] [राम लक्ष्मण की प्रवेश सीता समेत : कौशल्या सुमित्रा आदि.

कैकयी राम से :- बेटा यह कीमती वस्त्र तुम्हारे शरीर पर सोभा नहीं देते (भगवा वस्त्र करके) यह भगवे वस्त्र पहन कर बन की राह लिजिए "

राम कैकयी से :- लाईए माता जी आपका फरमाना बिलकुल ठिक है।

राम का गाना कैकयी से :- राम बनों में जाता री माता (टेक)

1. ये लो री माता अपने वस्त्र आभूषण

पहनेगा भरत मेरा भ्राता री माता ..... राम बनों.....

2. ये लो री माता अपने किरट और कुण्डल

त्याग सभी को जाता री माता .... राम बनों....

3. ये लो री माता अपनी मन मोहनी माला

तार सभी घर जाता री माता .... राम बनों को.....

4. जीते रहे तो री मैया फिर मिलेंगे

अब नाता टूटा जाता री माता .... राम बनों.....

दशरथ कैकयी से :- वो बे रहम अभी तक तेरा कलेजा ठण्डा नहीं हुआ। ओ जालिम तू कौन से जन्म के उतारे उतार रही है.

राम दशरथ से :- पिता जी जरा धैर्य कीजिए. और अपनी तबियत पर कुछ खामोश कीजिए। इस तरह से विलाप न कीजिए और हमें आशीर्वाद दीजिए.

राम का गाना दशरथ से :- आज्ञा दीजे ऐ पिता हम बन जाने को तैयार खड़े .. टेक

1. आज्ञा जल्दी से पेश करो. दिल बीच रंज मत शोक करो

हमें ऐसा उपदेश करो. जो रहें धर्म पर सदा अड़े .... अज्ञा दी.....

2. हम अभी बनों में जाएंगे. पितु माता के वचन निभाएंगे

मुनीयों के दर्शन पाएंगे. जो बन खण्डों के बीच पड़े .... आज्ञा दी....

3. वहां फल खाएंगे बार बार. पापों से चलेंगे न्यार न्यार

पितु आज्ञा के छोर छोर श्री चन्द ने छन्द में शब्द जड़े .... आज्ञा दीजे....

राम का राम से जाना :- (आंखों में जल भर कर)

[illegible] बेटा ईश्वर तुम्हारा निगहबान है. परन्तु दशरथ अब चन्द मिन्टों का मेहमान है।

[illegible] से, मन्त्री जी तुम इनके संग जाना। जिस तरह हो सके बन दिखा कर

[illegible] ले आना। मन्त्री :- जैसी आज्ञा महाराज.

नगरी मेरे पिता की सूरत से बसो मुदाम

हम वनों को चल दिये कर सबको प्रणाम.

राम, लक्ष्मण, सीता, सौमित्र बाहर। पर्दा सीन समाप्त R. K. H.

सौमित्र राम से:- भगवन आपके लिए रथ हाजिर है। आप इसमें सवार हो जाईये.

राम, सौमित्र:- प्यारे मन्त्री यह वृथा झमेले हमारे साथ न लाईये, कृपा इसे वापिस ले जाइये.

सौमित्र राम को:- हे युवराज, आपका इसमें क्या नुकसान है.

राम सौमित्र से:- फकीरों के लिए यह बखेड़ा बवाले जान है.

सौमित्र राम से:- भगवन: आप किस प्रकार के शब्द मुख से निकाल रहे है। और वृथा मेरे कलेजे में डाल रहे हैं।

राम सौमित्र से:- मन्त्री जी, मेरे इन शब्दों से क्लेश पहुंचा हो तो मुझे क्षमा करना।

सौमित्र राम से राधेश्याम:- हो गई कैकयी की आज्ञा वन में सरकार विराज चुके

बहु तेरे हृदय गगन में प्रभू वर दामों के घर गाड़ा चुके

अब चलिए महलों को चलिये जनता जीवित हो जाएगी

अपने राजा को सभा मध्य, अब वही मुकुट पहनाएगी।

राम सौमित्र से:- मन्त्री-र बूढ़े मन्त्री, यदि हमको चाहते है

तो हम उस चाहत के बाले, तुमसे बस यही मांगते है

जितनी जल्दी जा सकते हो उतनी जल्दी घर जावो तुम

चौदह वर्षों के लिए तात. इस राघव को बिसराओं तुम।

सौमित्र राम से:-राधे:- वे रही बेटे को वन में, रोते हम देख नहीं सकते

पत्तों और कुशाओं पर, सोते देख नहीं सकते.

सीता सौमित्र से राधे:- मन्त्री सोने की चमक कभी सोने से अलग नहीं होगी

चरणों की रेखा चरणों को धोने से अलग नहीं होगी.

है स्वर्णपुरी सी अवधपुरी, मुझे न ललचा सकती है.

हंसनी मानसर छोड़ जभर, मरुस्थल नहीं जा सकती है.

लक्ष्मण, सौमित्र से:- कहना माता कैकयी से, घी के चिराग जलाये वह

हम कांटे तो निकल गये निष्कंटक राज चलाये वह.

नायरह

यह भी कहदेना क्षमा करें, हमें बहुत वह सहतात्ती है

जो कृपा उन्होंने की हम पर, उसके भी आभारी है,

राम सौमित्र से :- दिल की तख्ती के छोटे के वचनो को लिख मतलेना तुम

सौगन्ध तुम्हें है वहां पहुंच कर केवल इतना कहना तुम

माता दे आशीर्वाद हमें, तब दर्शन उनके पायेंगे

जब चौदह वर्ष पूरे होंगे, तब दर्शन उनके पायेंगे।

मन्त्री राम से :- अच्छा भगवन मैं जाता, वहां जाकर मैं किस तरह सकल दिखाता.

मन्त्री का सीन समाप्त (राम, लक्ष्मण सीता सूर्यनदी पार करना) R.R.M.

राम लक्ष्मण से :- भैया मल्लाहों को पुकारो, हमें सूर्य नदी से पार करा देंगे।

लक्ष्मण :- मल्लाहों, अरे मल्लाहो हमें सूर्यनदी से पार करादो।

मल्लाह लक्ष्मण से :- भगवान मैं आपको किस तरह पार करूं डर लगता है।

राम केवट से :- दोहा (मैं कहता हूं जो बात हो कहो उसे जी खोल

क्यों घबरा रहे इतने, क्यों करते टाल मटोल,

केवट राम से दोहा :- अच्छा भगवन पुछते हो तो, कहता हूं संशय अपना

भय भजन मेरे सन्मुख है, फिर क्यों रहने दूं भय मेरा,

जाता हूं यह जादू है। राजा जी के पद पंकज में,

पत्थर में जान डालने की, शक्ति महान चरण रज में

बन गई शिला सुन्दर नारी चरणों की लगते ही

जड़ में चेतनता आती है, इस जीवन पुरी के लगते ही,

चरणों की रज का यह प्रभाव, जब पत्थर और शीला पर है,

तो मेरी लकड़ी की नैया, छुते ही छूमन्तर है।

राम केवट से :- प्यारे मलाह, अब किस तरह कर, हमें नदी उस पार करनी है।

केवट राम से दोहा :- अपना मेरा दोनों का, यों काम बनाले राजा जी

इन चरणों की रज पर संशय है, वह रज धुलवाले राजाजी,

फिर कमी रहे, बाधा न आपके काम में हो,

है कृपा राम की केवट पर, केवट का प्रेम राम में है।

राम केवट से :- भक्तवर आपको इतना इतमिनान है तो आप चरण धो लीजिए. और हमें नदी से पार करा दीजिए.

लक्ष्मण केवट से :- (नाव में बैठकर) :- हे मांझी अब नाव को सम्भालो यह तो डग मगा रही है. आप सावधान होकर नाव चलाए।

केवट राम से गाये :- है राम बली जब नौका पर, बली की कौन जरूरत है,
मांझी डर मत मझधार में, जाने की आज न सूरत है,
भय तो उस समय नाव को है, जब उसका खेवन हार न हो.
बैठा है जब बेड़े पर, तो कैसे बेड़ा पार न हो.

राम सीता से :- प्यारी अब आप इसकी मजदूरी दे दिजिए (हाथ से अगूंठी ~~उतारकर~~ उतारती है) राम अंगूठी देते है। केवट भक्त आपने हमें पार किया है। आप इसकी मजदूरी ले लिजिए।

केवट राम से :- गाये :- मेरा घर है सुरसरी तट, तुम रहते जग जल निधी तट हो.
मैं गंगा का मांझी हूं, तुम भव सागर के केवट हो,
मजदूर कही मजदूरों को मजदूरी देते है भैया,
मल्लाह कही मल्लाहों से, मलाही लेते है भैया,
अपने को ऋणी समझते हो, तो ऋण तुम वही चुका देना
मैने तुमको पार किया, तुम मुझको पार लगा देना।

राम केवट से :- प्यारे भक्तवर : यथा अस्तु ऐसा ही होगा.

केवट का सीन समाप्त (राजा गुहं से भेंट) R.R.M.

गुंह राम से :- मेरे धन्य भाग जो आपने अपने पवित्र चरणों से इस भूमि को पवित्र किया, दास के घर चल जल पान किजीए।

राम गुंह से :- आपकी इन बातों से मजबूर हूं. और बस्ती में पांव रखने से मजबूर हूं।

गुंह राम से :- हे भगवन मुझे बड़ा आश्चार्य है. आपने यह कैसा भेस बनाया है।

राम गुंह से :- पिता जी ने चौदह वर्षों तक इसी भेष में फरमाया है।

गुंह राम से :- आखिर कोई कसूर तो होगा।

है कृपा राम की केवट पर, केवट का प्रेम राम में है

राम केवट से:- भक्तवर आपको इतना इतमिनान है तो आप चरण को लीजिए. और हमें नदी
से पार करा दीजिए.

लक्ष्मण केवट से:- (नाव में बैठकर):- हे मांजी अब नाव को सम्भालो यह तो डग मगा रही है.
आप सावधान होकर नाव चलाए।

केवट राम से राधे:- है राम बली जब नौका पर, बली की कौन जरूरत है,
मांजी डर मत मझधार में, जाने की आज न सूरत है,
भय तो उस समय नाव को है, जब उसका खेवन हार न हो.
बैठा है जब बेड़े पर, तो कैसे बेड़ा पार न हो.

राम सीता से:- प्यारी अब आप इसकी मजदूरी दे दिजिए (हाथ से अंगूठी ~~उतारकर~~ उतारती है) राम अंगुठी
देते है। केवट भक्त आपने हमें पार किया है। आप इसकी मजदूरी ले लिजिए।

केवट राम से:- राधे:- मेरा घर है सुरसरी तट, तुम रहते जग जल निधि तट हो.
मैं गंगा का मांजी हूं, तुम भवसागर के केवट हो,
मजदूर कही मजदूरों को मजदूरी देते है भैया,
मल्लाह कही मल्लाहों से, मल्लाही लेते है भैया,
अपने को ऋणी समझते हो, तो ऋण तुम वही चुका देना
मैंने तुमको पार किया, तुम मुझको पार लगा देना,

राम केवट से:- प्यारे भक्तवर:- यथा अस्तु ऐसा ही होगा.

केवट का सीन समाप्त (राजा गुहं से भेंट) R.R.M.

गुंह राम से:- मेरे धन्य भाग जो आपने अपने पवित्र चरणों से इस भूमि को पवित्र किया
दास के घर चल जल पान किजीए।

राम गुंह से:- आपकी इन बातों से मजबूर हूं. और बस्ती में पांव रखने से मजबूर हूं।

गुंह राम से:- हे भगवन मुझे बड़ा आश्चर्य है. आपने यह कैसा भेस बनाया है।

राम गुंह से:- पिता जी ने चौदह वर्षों तक इसी भेष में फरमाया है।

गुंह राम से:- आखिर कोई कसूर तो होगा।

राम गुहं से :- कसूर हो गया ना हो, पिताजी की आज्ञा हर तरह से मन्जूर है।

गुहं राम से :- भगवन आप धन्य हैं, जो इस अवस्था में भी प्रसन्न हैं, बहुत अच्छा मैं जाता हूं। इसी जगह आपके लिए भोजन पहुंचाता हूं।

राम गुहं से :- प्यारे मित्र, अगर यह भोजन ही हमको भाते, तो घर से चल कर बाहं को आते यहीं से कुछ कन्दमूल खा लेंगे और पेट की आग बुझा लेंगे। आपको आए हुए बहुत देर हो गई है। अब आप आराम कीजिए और हमारा प्रणाम लिजिए।

गुहं अपने साथियों से :- प्यारे साथियों तुम इसी जगह तईनात रहो और रामचन्द्र जी की सेवा में सारी रात रहो।

गुहं के साथीयों से :- जैसी आज्ञा हो महाराज। सीन समाप्त खत्म

दशरथ का अन्तिम समय कौशल्या, कैकयी, सुमित्रा, विण्डर,,

दशरथ कौशल्या से :- हे प्यारी मेरा अन्तिम समय निकट आ रहा है, निसन्देह अब काल मेरे सिर पर सवार हो रहा है इसलिए मैं हाथ जोड़ता हूं कि मेरा अपराध माफ कर दो, और परलोक का मार्ग साफ कर दो,,

कौशल्या दशरथ से :- प्राण नाथ आप कैसे शब्द मुःख से निकालते हैं, और क्यों मुझे पाप गढ़े में डाल रहे हैं, आपका दर्जा मेरे लिए परमेश्वर के सम्मान है। मैंने जो कुछ सुख भोगा, वह आपका ही प्रताप है, जो कुछ हुआ है सो हुआ है। अब तबियत को समझाइए। और मुझे पाप गढ़े में मत डालिये, जीस माता पिता ने जन्म दिया है। उनके नाम को हरगीज बटा नहीं लगाऊगी। और जब तक दम में दम है अपने कुल की लाज बचाऊगी।

दशरथ विधाता से :- हे नाथ माना की आपकी कृपा का पात्र नहीं हूं। किन्तु मौत का दरवाजा मेरे लिए क्यों बन्द कर रखा है।

मन्त्री का आना दशरथ के पास :- हे मन्त्री कहो मेरी हंसों की जोड़ी को साथ लाए,,

(सोमित्र-चुप) हाय जो भी आता है मेरी जान का लागु आता है, प्यारे सो मित्र कुछ तो मुंह से बोलो

सोमित्र दशरथ से :- रोकर :- महाराज मैंने खूब जोर लगाया। बहुत समझाया, मगर उनके ध्यान में नहीं आया, और मुझे ही कहने लगे कि तुम तो हमें उल्टे मार्ग पर चलाना

चाहते हो. और हमें ही कलंक लगाना चाहते हो. और उन्होंने कहा अगर चौदह वर्ष पूरे किये अयोध्या में कदम रखना तो क्या सकल देखना भी हराम है. महाराज उन्होंने आने से बिलकुल इन्कार कर दिया है. और आपको तथा माताओं को प्रणाम किया है, और किसी को कोई तकलीफ न होने पाये, और भरत को बुला कर राजतिलक दिया जाये,,

विशिष्ट दशरथ से:- महाराज रोने धोने से काम नहीं चलेगा. अब तो रामचन्द्र का दुश्वार है. अब राज का काम करना तो आपके अख्तार है।

दशरथ विशिष्ट से:- गुरु जी आपकी तसल्ली मुझे कुछ फायदा नहीं पहुंचा सकती है गुरूजी किसी पर क्या अफसोस है. केवल अपनी ही किस्मत का दोस है, मुझे जो सर्वण के पिता ने जो श्राप दिया था. अब वह समय आ गया है. हाय प्यारे राम प्यारी कौशल्या बेटा लक्ष्मण बेटी जनक नन्दनी मुझे माफ करना, अच्छा मैं चलता हूं,, "हिजकी लेकर हाय राम मैं चला",,

कौशल्या,, जल्दी सम्भलकर,, अरे कोई जल्दी आवो महाराज के तेवर ही बदल गये.

विशिष्ट नाड़ी देखकर:- अफशोस तेवर क्या बदल गये. महाराज ही दुनियां से चले गये.

सुमित्रा: विशिष्ट से:. क्या बिलकुल नाड़ी छूट गई.

विशिष्ट रानी से:- दशरथ के सिर पर हाथ रखकर, हां महारानी जी अब बिलकुल आश छूट गई है,, ए.के.म.

सुमित्रा कौशल्या से:- दुहाथड़ मारकर - हाय रे हमारी किस्मत फूट गई:-

कौशल्या सुमित्रा का गाना विलाप दोनों का:. हाय हमारे प्राण प्यारे चल बसे
,, रजो गम के दुःख के मारे चल बसे.

किसी तरह होगी जीन्दगी बसर
जो थे जीवन के सहारे चल बसे.

मिल गया सारा सुहाग अब खाक में
आज किस्मत के सहारे चल बसे

आरजू उनकी न पूरी हो सकी
मार कर हाय के नारे चल बसे.

विशिष्ट !- देवियों सबर करो. और जितनी जलदी हो सके भरत को खबर कर दो.

११९५९

सीन कैकय पुर भरत शत्रुघ्न

: योधाजीत दूत:

शत्रुघ्न भरत से:- भ्राता जी आज तो आपकी तबीयत कुछ सुस्त है.

भरत शत्रुघ्न से:- हां शत्रुघ्न आपका ख्याल बिलकुल दरुस्त है.

शत्रुघ्न भरत से:- क्या कारण है जरा मैं भी सुन पाऊं. मुझसे छुपा कर क्यों रखते हो.

भरत शत्रुघ्न से:- कारण हो तो बताऊं.

शत्रुघ्न भरत से:- है भइया अफसोस है कि तुम मेरी बात पर इतना ही यकीं रखते हैं.

परदे में से आना योधाजीत:- प्यारे भरत अयोध्या से एक दूत आया है.

भरत योधाजीत से:- मामा जी क्या कुशलता की भी खबर लाया है.

योधाजीत भरत से:- वैसे तो ठीक बताता है. मगर कहता है आपको जल्दी बुलाया है.

दूत भरत से:- प्रणाम महाराज:

भरत दूत से:- अरे कुशल तो है ऐसी जल्दी का सन्देशा लाया है.

दूत भरत से:- हां महाराज वैसे तो ठीक है मगर आपको जल्दी बुलाया है.

भरत दूत से:- पिताजी व माताएं तो राजी हैं.

दूत भरत से: हां महाराज वैसे तो ठीक है, मगर आपको जल्दी बुलाया है।

भरत दूत से: भाई रामचन्द्र व लक्ष्मण जी तो खुश है.

दूत भरत से: वैसे तो सब ठीक है मगर आपको जल्दी बुलाया है.

भरत दूत से:- क्रोध में:- अरे तू आदमी है या गधा जो पूछता हूँ उसका टेढ़ा ही उतर मिलता है.

दूत भरत से:- महाराज कह तो रहा हूं कि आपको जल्दी बुलाया है.

भरत दूत से:- ओह बड़े मुर्ख से पाला पड़ा है.

शत्रुघ्न भरत से:- भैया इस जगड़े को जाने दो. और जल्दी अयोध्या की तैयारी करो.

भरत शत्रुघ्न से:- हां भैया चलो. इस मुर्ख को तो बात करने का भी ढंग नहीं है.

अयोध्या का सीन

भरत : शत्रुघ्न: दूत:

भरत शत्रुघ्न से:- है है अयोध्या की हालत ऐसी ~~अजब~~ क्यों है, तमाम गली कूचे बिलकुल सुनसान पड़े हैं. राज महलों पर चीलें मंडला रही है. न मालूम आज किसका मातम हो गया, जो सूर्यवंशी ... भी ~~[illegible]~~ खत्म हो गया है.

शत्रुघ्न भरत से:- बेसक भैया लक्षण तो खराब नजर आते है, आप जल्दी महलों मे चलिये.

मन्थरा कैकयी:- **कैकयी का महल** भरत, शत्रुघ्न परदे में।।

मन्थरा कैकयी से:- महारानी जी सुना है भरत जी आ गये.

कैकयी मन्थरा से:- अरी मन्थरा जल्दी कर उनको मेरे पास बुला लो।

मन्थरा ईसारा करके:- ये लो वह सामने ही आ रहे है.

भरत, शत्रुघ्न कैकयी के पांव में गिरकर:- प्रणाम माता जी,

कैकयी भरत से:- चिरजीव रहो मेरे लाल, बेटा तुमने बहुत दिन लगाये. कहो तो तुम्हारे नाना मामा तो राजी है।

भरत कैकयी से:- हां माता जी सब प्रकार से कुशल है. मगर मुझको अब तक पिता जी दर्शन नहीं हुऐ वे कहां पर है.

कैकयी भरत से:- बेटा धैर्य करो सफर की थकान उतारो धीरे धीरे सब हाल बता दूगी।

भरत कैकयी से:- मेरी थकान पिता जी के दर्शन होते ही दूर हो जाऐगी.

कैकयी भरत से:- बेटा ~~थकान~~ पहले थोड़ा खा पी लो फिर धीरे धीरे सब हाल बता दूंगी.

भरत कैकयी से:- माता जी जो मैं पुछता हूं उसका घड़ा घड़ाया उत्तर मिलता है; यह धीरे धीरे किस बला का नाम है.

कैकयी भरत से:- वाह बेटा तुम तो बड़े जल्द बाज हो गए हो. मैं कह तो रही हूं कि सब धीरे-२ बता दुगी।

भरत क्रोध से:- क्या खाक बता दोगी. आग लगे तुम्हारी धीरे धीरे को माता जी आप जल्द बताओ पिता जी कहां पर है.

कैकयी भरत से:- बेटा अफसोस है कि तुम्हारे पिता जी स्वर्ग सिधार गऐ।

भरत रोकर:- क्या कहा पिताजी स्वर्ग सिधार गऐ, शोक: कि मैं उनके अन्तिम समय में भी दर्शन नही कर सका. भाई लक्षमण व रामचन्द्र जी ही भाग्यवान है. जिनके हाथो पिता जी ने प्राण त्याग दिये. अच्छा माता यह तो बताओ उनको रोग क्या था,

कैकयी भरत से:- बेटा रोग तो कुछ भी नही था. बस हाय राम हाय लक्ष्मण करते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिये.

भरत कैकयी से:- माता जी क्या भाई रामचन्द्र व लक्ष्मण भी हाजिर नही थे.

कैकयी भरत से:- हां बेटा वह तो पहले ही बन चले गऐ थे। उन्हीं के कारण तो महाराज ने प्राण तजे।

भरत कैकयी से:- सिर पीट कर :- हाय! हाय! चार बेटों के होते हुए भी अन्तिम समय में एक भी पास नहीं था! माता जी भाई रामचन्द्र ने कौनसा अपराध किया था जो बनों को चले गये. जरा पूरा हाल तो सुनाओ।

कैकयी भरत से:- बेटा असल बात तो यह है कि महाराज ने रामचन्द्र को राजतिलक देने की तैयारी की, भला हो इस बेचारी मन्थरा का, इसने मुझे सब हाल बता दिया, हे बेटा मैंने किसी समय महाराज से दो वचन पूरे करने का वचन लिया था। अस्तु मौका पा कर मैंने अपने दोनों वचन पूरे कर लिऐ. अतार्थ रामचन्द्र जी को चौदह साल का बनवास और तेरे लिए राजतिलक मांगा। अस्तु हे बेटा इस ~~समय~~ वचनों को टालने के लिए महाराज बहुत हाथ पांव मारे, परन्तु मैं भी अपनी जीद पर अड़ी रही महाराज तंग आकर, रामचन्द्र को बन भेजना पड़ा, सीता तथा लक्ष्मण भी उनके साथ चले गऐ. सो हे बेटा मैंने अपना वचन पूरा कर दिया! अब तू जाने तेरा काम।

मन्थरा भरत से:- हां महारानी जी सच कहती है. अब जाकर खुशी से राज सम्भालो। और अपने दिल के अरमान निकालो.

शत्रुघ्न मन्थरा से:- वो नमक हराम बदजात ये तुम्हारी ही आग लगाई हुई है। ठहर मैं तेरी खबर लेता हूं।

भरत शत्रुघ्न का हाथ पकड़कर:- भाई जो कुछ होना था सो हो गया. अब अपनी तबीयत को टिकाओ और स्त्री पर हाथ उठा कर कुल के दाग न लगाओ।

भरत मन्थरा से:- वो चुड़ैल तू यहां से दूर होजा और हमारी आंखों से दूर होजा!

भरत का गाना:- हाय फूटी है किस्मत हमारी रे (टेक)

1. छोड़ कर हमको किस के सहारे

ऐ पिता जी किधर को सिधारे,

कि अकेले किधर की तैयारी रे ..... हाय फूटी ......

2. मुंह दिखाने के लायक रहा न

हाय कोई सहायक रहा न

बात विधाता ने कैसी बिगाड़ी रे . . . छूटे . . . . . .

3. फंसी ऐसी जान मुश्किल में,

रह गया यह भी अरमान दिल में,

कर सके ना खिदमत तुम्हारी रे . . . . हाय . . . .

4. हाय ईश्वर हमें भी उठा ले,

ऐ पिता पास अपने बुला ले,

जिन्दगी से हमें मौत प्यारी रे . . . . छूटे . . . . . .

5. राम मेरी ना बिलकुल सलाह ली

हाय तूने भी तो बन राह ली

आज गई किस्मत की हारी रे - - - हाय छूटे - - - - !

कैकयी भरत से: आँसु पोंछकर:- बस मेरे लाल अब अधिक न रो.

भरत कैकयी का हाथ फटकारकर:- बस मेरे सामने से दूर होजा।

कैकयी भरत से:- बेटा नेकी का बदला आया तो इस तरह भागेगा!

भरत कैकयी से:- बदला तो उस समय मिलेगा जब भरत तेरे सामने प्राण त्यागेगा!

कैकयी भरत से:- बेटा अब मेरी तरफ देख, मैंने तेरे लिए खून पसीना एक किया है!

भरत कैकयी से (गीत):- ए मां तूने जुल्म करे बड़े भारी . . . टेक

तु बनगी नागिन काली

1. मेरे पिता से, तूने पापिणी जब मांगे वरदान

पड़े नहीं तेरे मुख में कीड़े टूटी नहीं जबान

तू कदकी बैरण म्हारी . . . . टेक

2. राम, लक्ष्मण से भ्राता हमारे, दशरथ जैसे बाप

कुल के अन्दर होके पापिणी कर तूने नाश

तु मरी नहीं बलिहारी . . . तु बनगी . . . टेक

भरत कैकयी से: दांत पीसकर:- वो डायन मैं तुझे एक बार कह चुका हूं. तु मुझे बेटा कह कर कलंक का टीका न लगा। तू बार बार कह कर मेरी छाती

जला

जला, पहले तूने पिता जी के प्राण लिए, धर्म मूरत राम, लक्ष्मण को बनवास दिलाया,

वो पापिन तूने सत्यवन्ती भावज सीता जी को घर से निकाल दिया, माता सुमित्रा

तथा कौशल्या के दिलों को छलनी किया, वो कलिहारी दुनियां का मुंह कौन

पकड़ सकता है, वह तो मुझे ही धीक्कारेगी और चारो तरफ से मुझे ही मारेंगे।

शत्रुघ्न चार्थैकर :- हाय पिता जी ~~समस्त~~ आपके मरते ही सारा जमाना दुश्मन हो गया है,

भाई रामचन्द्र भी यहां पर नहीं है, हमारी धीर कौन बन्धावे!

भरत शत्रुघ्न से :- प्यारे भईयां तुम क्यों रोते हो तुम्हारे लिए तो मैं रामचन्द्र हाजिर हूं

रामचन्द्र तो मेरे लिए नहीं, उठो भईया उस दुखिया माता कौशल्या तथा सुमित्रा की

खबर लो।

शत्रुघ्न भरत से :- हां भईया चलो, अब यहां रहना ही बेकार है।

कौशल्या लेटी हुई : कौशल्या का महल : सुमित्रा बैठी हुई

भरत, शत्रुघ्न, कौशल्या के पांव लगकर :- प्रणाम माता जी.

कौ० भरत से :- अरे यह कौन है.

सुमित्रा कौ० से :- प्यारी बहन उठो और पहचानो तो सही कि कौन है.

कौ० सुमित्रा से :- हाय कैसे उठू उठा भी जाए:

सुमित्रा कौ० से :- बहन जरा आंखे खोलो:

कौ० सुमित्रा से :- बहन आंखे होती तो रोना ही क्या था. अब आंखे किसकी लाऊं

दोहा :- देखने के थे जो साधन, वह तो सारे चल दिये

खाली गोलक रह गई, आंखों के तारे चल दिये : हे भाई तू बतादे कौन.

भरत कौ० से :- (रोकर) माता जी आपका महानीच अधर्मी बेटा भरत.

कौ० भरत से :- हैं हे भरत बेटा चिरंजीव रहो, कब आये, और तो सब ठीक ठाक है.

हे बेटा चुप क्यों हो. कुछ तो मुंह से बोलो. क्या मुझसे नाराज हो (भरत का रोते रहना

कौ० का गाना भरत से : बहरेतबील :- अब करो चैन से राज बेटा भरत

रामचन्द्र तो बन में पहुंचा ही दिये.

तेरे मन की मुरादें सो पूरी हुई

तेरी माता ने यह गुल खिला ही दिये.

2. तेरे दिल में कोई खटक रहा

रामचन्द्र का कांटा न अटक रहा

अब क्यों खामोश हो के ठिठक रहा

मेरे सीने पर खंजर चला ही दिये

3. यदि मेरी भी सुरत सुहाती नहीं

तो मुझे भी जीन्दगी खुद भाती नहीं

क्या करूं मौत भी तो आती नहीं

मैंने अपने यतन सब बना ही लिये.

4. रामचन्द्र ने वापिस अब आना नहीं

और लक्ष्मण से हिस्सा बटाना नहीं

एक मैं ही हूं मेरा सौ ठीकाना नहीं

कैकयी ने तो फन्दे फैला ही दीये.

5. न किसी की मदद के हो मोहताज तुम

बन गये अवध के महाराज तुम

जाओ बेटा खुशी से करो राज तुम

भेद यशवन्त सिंह ने बता ही दिये.

कौ० नाटक:- बेटा अब तो तेरे मन की मुरादें पूरी हो गई. और अवध का कुल राज तेरे नाम हो गया. और रामचन्द्र का कांटा भी तेरे दिल से निकल गया है. हां बेटा अब यदि मेरी भी सुरत सुहाती नहीं. न मुझे जीन्दगी भी खुद भाती नहीं. मगर क्या यह बेसरम जान भी निकलने में नहीं आती, अगर कुछ खाकर मरती हूं तो आत्महत्या का पाप होता है. अगर जीन्दा रहती हूं तो तेरी जान को सन्ताप होता है.

भरत का गाना कौ० से- बहरे-नं० 3 तेरे चरणों की सौगन्ध है माता मुझे

इस सरारत का बीलकूल पता ही नहीं

यों है इन्तजाम दो तो तुम्हारी खुशी

वरना इसमें मेरी कुछ खता ही नहीं

२. राम को भेज वन में कर राज में

मेरे दिल का तो यह मदवा ही नहीं

माता कैसे दिलाऊं तुमको यकीं

बीना ईश्वर के कोई गवाह ही नहीं।

३. राम मौजुद होते अगर इस जगह

मैं समझता पिताजी मरे ही नहीं

एक तेरा सहारा था केवल मुझे

हाय तुमको भी आती दया ही नहीं..

४. यों न घायल करो बोलियां मार कर

काट लो सिर मुझे कुछ गीला ही नहीं

माता सिर है मेरा और खंजर तेरा

लेना इसमें किसी की सलाह ही नहीं।

भरत का नाटक कोशल्या:- रोकर:- माता जी न जाने भरत से ऐसा कोनसा खोटा कर्म हो गया। जीसके कारण आप भी मुझ पर सक करने लगी। हे माताजी. इस बात के लिए मैं जिन्दा जल मरने के लिये तैयार हूं. क्या आपको यह विश्वास है. कि मैं रामचन्द्र को बनवास दिलावूं और खुद अयोध्या में ऐश उड़ाऊ. हे ईश्वर मुझे मौत की खेरात दो और तो सब शत्रु हो गये. मगर आप तो मेरा साथ दो. हाय पिताजी मुझे भी अपने पास बुला लो (बेहोश हो जाना)

कौ० का नाटक भरत से:- है है मेरे लाल तुझे क्या हुआ. बेटा मैंने व्यर्थ ही तेरा हृदय को दुःखाया है. और मेरी मुर्खता ने तेरी जान को दुःख पहुंचाया है. बेटा वास्तव में मैंने बड़ा पाप किया है. जो निर्दोश पर सन्ताप किया है. बेटा उठ मैं तो पहले ही मेरी किस्मत को रो रही थी. और राम की जुदाई में प्राण खो रही थी. बेटा जवाब तो दिजीओ. एक बार माता कह कर बुलाओ. देखो तेरी माता कितनी देर से तेरे सिहराने

कैंठी रो रही है. अब तो उठ कर हाथ मुंह साफ करो.

भरत आंखें खोलकर रोते: माताजी बस क्षमा कीजिए. मुझे अब न जीन्दगी की चाह है न मौत की परवाह है।

कौशल्या भरत से: बेटा अब इस रंजो गम को दुर करो और जो मैं कहती हूँ उसे मन्जूर करो, तुम देखते हो अयोध्या का तख्त बिल्कुल खाली है इसका कोई वारिस है न वाली है, बेटा अब रोना बन्द करो और कुछ राज का प्रबन्ध करो, अगर दुसरे दुश्मन सुन पाएगें तो अवश्य ही मुँह में पानी भर लाएगें,,

भरत कौशल्या से: माता जी आप क्या फरमा रही हैं और मुझे क्यों पाप के गढे में गीरा रही हैं, मैं किसी भी अवस्था में भी आपकी आज्ञा मन्जूर नहीं कर सकता, राजा वह कहला सकता है, जीसकी प्रजा पर मिसाल हो, माता जी मैं देख रहा हूँ सारी प्रजा की निगाहें मुझसे नफरत करती हैं इसलिए भाई की गैर हाजरी में राजगद्दी पर पांव रखने का मुझे कोई अधिकार नहीं, इसी समय जंगल में जाऊँगा, अगर मेरे कहने वापिस आ गये तो बेहतर है नहीं तो चौदह वर्षों तक सकल नहीं दिखाऊंगा,, कैकयी को भी हाथों हाथ बदला मिल जाएगा, जब उसकी आखें के सामने उसका बेटा जंगल को निकल जाएगा,,

विषेष्ट भरत से:- भरत जी आप के विचार निसन्देह उत्तम और पवित्र हैं राम से बढ़ कर कौन भाई है, मगर उनका आना कठिन है और आपका वृथा ही जतन है, अगर वह मान लेते तो हम ही मना लेते, इसलिए इन विचारों को दिल से निकालिए, और चौदह वर्षों तक आप ही इस राज को सम्भालिए,,

भरत विषेष्ठ से:- गुरू जी अगर रामचन्द्र जी की निस्बत आपका ऐसा विश्वास है, तो चौदह वर्षों के लिए भरत को भी बनवास है, चाहे कितना ही गया गुजरा इंसान हूँ मगर उसी पिता की सन्तान हूँ, अगर रामचन्द्र ने अपना धर्म पालने में इस तरह

हो गया.

तो भरत भी उन्ही का भाई है. जान पर खेलजाना मेरे लिये आसान काम है. मगर राजगद्दी पर बैठ जाना मुझे हराम है।

कौशल्या भरत से:- अच्छा बेटा अगर तुम्हारा यही इरादा है तो हम भी साथ जाएंगी और नहीं तो हम भी एक दफा उनका मुखड़ा ही देख आएंगी।

भरत:- ठीक है माताजी आप सारे साथ चलें:

श्रृंगवेरपुर. राजा गुंह से भेंट नील

मन्त्री गुंह से:- महाराज. आपके मित्र श्री रामचन्द्र का छोटा भाई भरत बेसुमार सेना लिये चीत्रकूट की ओर जा रहा है.

गुंह मन्त्री से:- क्या कुछ पता है किस लिये जा रहा है,,

मन्त्री गुंह से:- महाराज. आम तौर पर तो यही अफवाह है कि रामचन्द्र जी को वापीस लाने की सलाह है.

गुंह मन्त्री से:- तो सारी अयोध्या क्यों लाया है.

मन्त्री गुंह से:- बेशक. यह बात ठीक है कहीं मुंह में राम बगल में छुरीवाला हिसाब न हो.

गुंह मन्त्री से:- कोई बात नहीं आखीर कैकयी का बेटा है, बात प्रसिद्ध है. मॉं पर पूत पिता पर घोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा. शायद पिछे से अकल आ गई हो या फिर किसी ने बात सुझाई हो. कि रामचन्द्र इधर उधर से सेना इक्ठी करके चढ़ाई न करदें.

मन्त्री गुंह से:- सम्भव है यही बात हो महाराज:

गुंह मन्त्री से:- खैर कुछ भय नहीं. मै अभी जाता हूं और इस साजिस का पता लगाता हूं. तुम अपनी फौज की तैयारी करो. और मेरे इसारे की तरफ ध्यान करो.:

यहां पर थाल मे मछली, फूल तलवार लेकर जाता है, और भरत के सामने करता है, भरत का फूल उठाना गुंह को इतमिनान हो जाना.

~~गुंह भरत से: भगवन कहिये किधर की चढ़ाई है. न बाहर के दुश्मन से लड़ाई है. यह तो मौत का चक्कर है.~~

गुंह भरत से:- भगवन कहिये किधर की चढाई है और किस कमबख्त की मौत आई है। रही है. और बड़े मुहिम पर जा रही है.

भरत गुह से :- हे प्यारे मित्र न तो किसी से लड़ाई है. और न बहार के दुश्मन से लड़ाई है. यह तो भाग्य का चक्कर है. हे मित्र स्वयं मेरी माता ने पाप का बीज बो दिया मैं भगवान रामचन्द्र को वापिस लाने जा रहा हूं, सब माताएं व गुरू वशिष्ठ जी भी साथ आये हैं. गुह भरत को साथ लेकर चलेगा :

४ चौथा दिन शुरू ..

चित्रकूट पर्वत का सीन — भरत मिलाप

राम लक्ष्मण से :- भैया लक्ष्मण आज जंगल के जानवर इस तरह क्यों भागे जा रहे हैं. और इस तरह क्यों भय खा रहे हैं.

लक्ष्मण राम से : तख्त पर चढ़कर :- भाई साहिब हुसियार हो जाइये, सूर्यवंशी झण्डा हवा में लहरा रहा है. और भरत बेशुमार सेना लिए आ रहा है..

राम लक्ष्मण से : अगर भैया भरत है तो तुम्हें किस बात का डर है!

लक्ष्मण राम से :- भ्राता जी इधर वह ऊपर चढ़ा आ रहा है इधर आपका यह हाल है!

राम लक्ष्मण से :- भरत से मुझे ऐसी कदापी उमेद नहीं.

लक्ष्मण राम से :- तो इतनी जनता क्या भाड़ मारने के लिए लाया है

राम लक्ष्मण से :- खैर कोई बात नहीं उन्हें आने दो.

लक्ष्मण राम से :- कृपा करो इस भोले पन जाने दो.

राम लक्ष्मण से :- भैया लक्ष्मण पहले भरत को आने दो. मृत्यु से पहले बावला होना ठीक नहीं.

लक्ष्मण राम से :- बस भाई साहब, बहुत सब्र किया, और अपनी तबीयत पर बहुत जब्र किया. आखीर कब तक खूने जीगर खाएं. जरा आप ही इन्साफ से बताएं, अगर सब्र इसी नाम है तो क्षत्रीय पुत्र के लिए डूब मरने का अवसर है.

राम लक्ष्मण से : लक्ष्मण को शस्त्र छीनकर :- लो देखो वह तो बेचारा अकेला ही भागा आ रहा है.

भरत का पांव में गिरना, राम का उठाकर छाती से लगाना, भरत का रोना,

राम भरत से :- प्यारे भरत कहो चीत तो प्रसन्न है. तुम इस तरह क्यों रो रहे हो, कुछ कारण तो बताओ. कुछ अपना हाल भी सुनाओ. मेरे प्यारे भाई मेरी दाईं भुजा बताओ तो ये रंज कहां पहुंचा है, भरत तुम्हें मेरी कसम अधिक हैरान न करो.

भरत का गाना राम से कहते हुए :- ऐ भ्राता भरत से खता (हो) गई
क्या
मेरी नसीबत तुम्हें क्या भरम हो गया

मुझे मुझे चरणों से आपने जुदा क्यों किया
कौनसा मुझसे खोटा करम हो गया.

2 इस सरारत का मुझे पता ही नहीं
आप बैठे यहीं भरत बैठा कहीं
कर लिया आपने किस तरह से यकीं
हाय ऐसा भरत बेशरम हो गया.

3. हाय सारी अवध को बियाबान कर
आ गये आप जंगल में क्या ठान कर
एक उस नीचनी का कहा मानकर
आपको घर में रहना कसम हो गया.

4. मारा भावी ने मुझे चक्कर में देके मुझे
क्या किसी पर गिला क्या विचारा करूं
तुम अयोध्या को मेरे हवाले करो
मैं तुमसे पहले किनारा करूं.

राम भरत से:- भैया भरत मैं तुम्हें निश्चय दिलाता हूं कि मुझको तुम्हारी तरफ से कोई शिकायत नहीं. न माता कैकयी का कसूर है. यह तो ईश्वर को इसी तरह मन्जूर है.

राम भरत से: यह तो भाई शत्रुघ्न भी भागे हुए आ रहे हैं.

भरत राम से:- भ्राताजी शत्रुघ्न क्या बल्कि माता कौशल्या जी व सुमित्रा जी और गुरु वशिष्ठ जी व मित्र गुह भी तशरीफ ला रहे हैं. और मेरे जन्म की शत्रु भी साथ आ रही है.

शत्रुघ्न राम के पांव में गिरकर:- प्रणाम भैया,, शत्रुघ्न को गले लगाकर भरत से: भरत मुझे खेद है तुम्हें सारे कुल को कलेश देना मन्जूर था.

भरत राम से: हां भैया किसी का क्या दोष है, ईश्वर को इसी तरह मन्जूर है.

कैकयी, कौशल्या, सुमित्रा, वशिष्ठ, गुह, मन्त्री, इनका आना सीन चालू,,

राम कैकयी के पांव छू कर:- प्रणाम माता जी:- आपको इस सफर की फिजूल ही तकलीफ

78

उठाई:- कैकयी चुप:: माता जी आप बोलती नहीं क्या है तबीयत तो ठीक है। कैकयी रामसे:- हां बेटा अच्छी है

राम कौशल्या से:- प्रणाम माताजी :

कौशल्या राम लक्ष्मण को गले लगाकर:- चिरंजीव रहो मेरे लाल, बेटा तुम धन्य हो, कि तुम्हारा चांद सा मुखड़ा दुबारा देखने को मिला. मगर शोक है कि वह तो अन्त समय तुम्हारा मुंह भी नहीं देख सके.

राम कौ० से:- हाय माताजी ये क्या कहा. पिताजी का कब परलोक हुआ है.

कौ० रामसे:- बेटा ईधर तुम बन को पधारे, उधर वह स्वर्ग को सिधारे.

राम कौ० से:- हाय ओ फलक कज रफ्तार, तु घर से निकालकर हमको सताता रहा, आह अफसोस कि पिताजी का साया भी सिर से जाता रहा.

सीता रोकर:- हाय पिताजी आप सदा के लिए मुंह मोड़ गये और हमें किसके सहारे छोड़ गये.

लक्ष्मण रोकर:- हाय अफसोस गर्दीश क्यों हमारे पिछे पड़ी है. जो हमें बरबाद करने अड़ी है. एक दुःख हो तो सबर कर ले, दुःखों का भी तो ठिकाना नहीं.

कौ० लक्ष्मण से:- बेटा इसके सिवाय अब चारा भी नहीं और तुम्हारे पिता ने अब वापिस आना नहीं

वशिष्ठ लक्ष्मण से:- बेटा जो बात होनी है उस पर वृथा अफसोस करना है. बेटा जो बना है वह एक दिन टूटेगा. जो घड़ा है वह फुटेगा, बेटा जो पैदा हुआ है उसे आखिर मरना है. और यह सदा तो सबने मरना है.

भरत का गाना रामसे:- बीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है टेक

बस्ती हुई अवध को सुनी बना गया है.

1. बाबुल की प्राण हत्या मेरे ही सिर चढ़ी है.

मुझ कारण यह दिसोटा तुमको दिया गया है.... बीरन.....

2. माँ मेरी कैकयी ने मुझको दुःख दिया है.

टिका मेरे कलंक का ~~सिर माथे~~ मस्तक चढ़ा दिया है. बीरन.....

3. कृपा निधान भगवन मुझ दीन की अर्ज है.

वेदों में भगत वतसल तुम को कहा गया है बीरन वियोग.....

4. तुम बीन है अयोध्या दुखीया मैं लेने आया हूं

चलो साथ मेरे न तुम बीन रहा गया है   बीरन वियोग...... :

भरत का नाटमराम को :- भ्राता जी जो कुछ प्रार्थना करनी थी, वह कर चुका हूं. आप अधिक मुझे क्यों मारते हो. मैं तो पहले ही मर चुका हूं. अब आशा है कि आप गुस्ताखियों को नजर अन्दाज फरमायेंगे. और तख्त अयोध्या को अपने कदमों से सजाएंगे.

राम भरत से :- प्यारे भरत : तुम्हारा प्रेम जो कुछ मेरे साथ है. उसे मैं खुद जानता हूं और इस अभिप्राय को भी बखूबी पहचानता हूं मगर क्या करूं शास्त्रों की आज्ञा और धर्म की पाबन्दी से मजबूर हूं. इसलिए चौदह वर्षों के लिए तुम्हारी नजरों से दूर हूं

भरत राम से :- बहुत अच्छा भैया. अगर आपका यही धर्म है तो भरत के लिये भी सबसे शुभ कर्म है कि आपके चरणों में निवास करूं. और चौदह साल खुद भी बनवास करूं.

राम भरत से :- प्यारे भरत ईश्वर की कृपा से हमारा खान दान आज तक बेदाग रहा है, भारी से भारी काम भी आए तो अपना प्रण नहीं छोड़ा. जैसा महाराजा दलिप. महाराज दधिची. राजा हरिचन्द्र ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए क्या कुछ नहीं किया बस ठीक तो यह है कि तुम अब तुम अयोध्या वापिस चले जावो. और छोटी सी बात के लिये कुल के दाग न लगाओ.

भरत राम से :- अच्छा भैया जो माता जी कहेंगी वह तो मन्जूर होगा...

राम भरत से :- हां भ्राता जी हमें कब इन्कार है.

माँ राम, भरत से :- मेरे बेटो अगर मेरे पर बात छोड़ते हो तो दोनों ध्यान लगाकर सुनो. चौदह साल के लिए भरत अयोध्या में निवास करे. और रामचन्द्र चौदह वर्षों के लिए बनवास करे. धर्म के मुकाबले पर कौशल्या कभी झूठ नहीं बोलेगी. और व्यर्थ ही अपनी जान पत्थर नहीं तोलेगी"

भरत माँ० :- हाय मैं क्या करूं. भरत को हर जगह से मजबूर किया जाता है. और जबरदस्त अपने चरणों से दूर किया जाता है. अच्छा भैया आप इतनी कृपा कीजीये कि अपनी खड़ाऊँ मुझे दे दिजीये. इनको अपने साथ ले जाऊंगा. और इन्हीं से अयोध्या का तख्त सजाऊंगा. भैया मगर इस बात का ध्यान रहे कि चौदह साल

राम .... एक दिन भी अधिक लगायेंगे तो भरत को कदाचित जीवत न पाएंगे.

72

राम भरत से:- खड़ाऊँ देकर :- प्यारे भरत तुम्हारा कहना स्वीकार करता हूं। और इस बात का करार करता हूं कि चौदह साल के व्यतीत होते ही तुम्हारे पास आऊंगा और अधिक एक दिन भी नहीं लगाऊंगा,, सीन समाप्त

राम, लक्ष्मण, सीता परदे में — भरत मिलाप समाप्त — [भरत का दर्गत में चले जाना]

(गाना) "डान्सर"
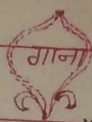
भरत मिलाप समाप्त

पंचवटी

राम, लक्ष्मण, सीता, सरूपनखां से भेंट।

लक्ष्मण राम से:- भैया पंचवटी पर तो कुदरत ने अपनी खूबियां का कमाल कर रखा है।

राम लक्ष्मण से:- बेसक भैया गोदावरी के सुन्दर और निर्मल जल ने इसे बेमिसाल कर रखा है।

सरूपनखां राम से:- अजि आप कोन है। अगर कुछ हरजन हो तो आपका पता ठिकाना बता दिजिए।

राम सरूपनखां से:- देवी हम अवध पति महाराज दशरथ के जाये हैं। और चौदह साल के लिये पिता जी के हुकम से बन भ्रमण करने आये हैं। यह मेरे छोटे भाई लक्ष्मण जी हैं। और यह सीता जी मेरी धर्मपत्नी भी हमारे साथ आई हैं। मेरा नाम राम है। कहिये आपको हमारे से क्या काम है यदि आप गलत न समझे तो आप अपना निवास स्थान का पता बता दिजिये और आपका शुभ नाम भी बता दिजीये,,

सरूपनखां राम से:- जरा मटक कर: मैं लंकापती रावण की हमशीर हूं। और खूबसूरती में मशहूर हूं भाई खर और दुषण भी इसी जगह रहते हैं। और नाम के लिहाज से मुझे सरूपनखां कहते हैं। यदपि बहुत से राजकुमारों की मुझ पर तबीयत आई। मगर मैं तो किसी को भी खातिर में न लाई,,

राम सरूपनखां से:- हे देवी फिर यहां क्यों तकलीफ उठाई"

सरूपनखां से:- इसलिए की तुमने सरूपनखां के दिल में जगह पाई;

राम सरूपनखां से:- हे देवी यह कहानी मेरी समझ में कुछ ना आई।

सरूपनखां का गाना:- जोगी हम तो लुट गये तेरे प्यार में

सरूपनखां राम से:- देखने में तो अकल बन्द दिखाते हो। पर हो पुरे सोदाई; अजी आप मेरे खाविन्द मैं आपकी लुगाई। अब तो समझे मेरे बाप के जमाई।

राम सरूपनखां से:- हे देवी। जब तुम अच्छे-२ राजकुमारों को खातिर में न लाई तो हम बनवासी से

शादी करने की धुन क्यों समाई.

सरूपनखां राम से:- तबीयत है जहां आई, फिर कौन बादशाह कौन सौदाई.

राम सरूपनखां से:- हे देवी, मुझे अफसोस है कि मैं तुम्हारी अभिलाषा पूरी नहीं कर सकता. क्योंकि मेरी पत्नी मेरे साथ है. हां अगर लक्ष्मण जी मन्जूर करें तो हमें बड़ी खुशी होगी. है. वह इस वक्त अकेला है. और वैसे भी बड़ा जवान अलबेला है. आप उसके पास जाईये:

३१ सरूपनखां लक्ष्मण से गीत: गाकर:- छोड़ लक्ष्मण आई हालत सारी

नाटक लक्ष्मण से:- अजी उनसे तो दिल्लगी करती थी. वास्तव में तो आपकी मोहब्बत का दम भरती थी. वह काला कलोटा. अकनुष का सोटा. आदमीन आदमियों की सूरत. हे लक्ष्मण जी जब तक जीऊंगी. तुम्हारे चरण धोकर पीऊंगी:

लक्ष्मण सरूपनखां:- हंस कर: हां देवी मेरी खुश नसीबी का क्या ठिकाना है. जब तक तुम जैसी चन्द्रमुखी. मृगनैनी की तबीयत मुझ पर माईल हो गई. और एक ही नेग बाण से घायल हो गई. रंग है कि कुन्दन की तरह चमक रहा है. और चेहरा ऐसा किया था किसकी तरह चमक रहा.

सरूपनखां लक्ष्मण से:- जरा लचक कर:- तो किस बात का हिजाब है।

लक्ष्मण सरूपनखां से:- हे देवी मैं रामचन्द्र जी का एक छोटा सा सेवक हूँ, इसलिए मेरे साथ शादी करने में तुम्हारी सारी ऊमर मिट्टी खराब है।

सरूपनखां का गाना राम से:- दिल में तुझे बैठा कर ....

सरूपनखां राम से नाटक:- राम के पास पहुँच कर: अजी आप मुझे क्यों हैरान कर रहे हैं और खामखां परेशान कर रहे हैं, वह छोकरा तो बिलकुल नादान है, भला उसे इन बातों की क्या पहचान है, उसपर तो मैं थूकती भी नहीं: उसकी सकल देखते ही दिल कोसों दूर भागता है ऐसा बदसूरत इन्सान तो मैंने कभी नहीं देखा,

राम सरूपनखां से:- हे देवी मुझ पर तो मेहरबानी करो, और जरा अपने फैसले पर दुबारा नजर सानी करो, यदि तू सती है तो वह भी यति है,

सरूपनखां राम से: अजी काहे का यति है वह जितना बदसकल है उससे बढ़कर मन मति है, आप तो मुझे यों ही फरेब देते हैं.(राम की गर्दन की तरफ हाथ बढ़ाकर)

सरूपनखां के कोमल हाथ तो इसी का गर्दन पर जेब देते हैं।

राम सरूपनखां से:- जरा पिछे हट कर; यह हाथा पाई किसी और के साथ करो, जरा मुहँ से बात करो।

सरूपनखां राम से:- मेरे हाथों में कांटे तो नहीं जो आपकी गर्दन में चुभ जाएंगे,

राम सरूपनखां से:- हे सुन्दरी मैं एक बार कह चुका, कि मेरी शादी हो चुकी है नहीं बल्कि मेरी अर्धांगिनी मेरे साथ है तुम लक्ष्मण के पास जावो,

सरूपनखां राम से:- शादी हुई तो क्या बात है, राजे महाराजे शादी होने के इलावा भी दुसरों से मुहब्बत करते हैं।

राम सरूपनखां से:- यह धर्म के विरुद्ध है वे महापाप करते हैं हे देवी यहां पर तुम्हारी दाल नहीं गलेगी, आखीर निरास होकर ही टलेगी, तुम्हारी जोड़ी तो लक्ष्मण के साथ मिलती है।

सरूपनखां लक्ष्मण से:- अजी महाराज आपने किस जंगलु के पास भेज दिया, जिसको न बोलने का तरीका है, न बात करने का सलीका है, वह तो आला दर्जे का बदतमीज, जैसे कोई बर्षों का मरीज हो।(लक्ष्मण की तरफ अंगड़ाई लेकर) हे मेरे भरतार मैं आपको छोड़ कर कहां जा सकती हूँ, अब तो हम और तुम और दफ्तर गुम:

सरूपन खां का गाना लक्ष्मण से:- हाल दिल का न पुछो .... ! कवाली

लक्ष्मण सरूपनखां से नाटक! हे देवी जो सख्स दुसरे का गुलाम हो, वह तुम जैसी सुन्दरी से कैसे हम कलाम हो।

सरूपनखां लक्ष्मण से:- हे महाराज तुम्हें मेरा कुल भी मालुम है,

लक्ष्मण सरूपनखां से:- हां, मैं जानता हूँ तु रावण की आवारागर्द बहिन है,

सरूपनखां लक्ष्मण से:- क्रोध में [illegible] म बस जी बस मांगने को सिखाई तो काटने को आई, जरा जबान को लगाम दो..

लक्ष्मण, सुरपनखां से:- गुस्से, जाती है या बताऊँ मौत का भाव

सरूपनखां लक्ष्मण से :- प्यार में" तुम तो बड़े बेवफा हो;

लक्ष्मण सरूपनखां से :- वह काम करो जीससे लोक परलोक में नफा हो "

सरूपनखां सीता की ओर :- गुसे से" क्यों री वेश्या तुमको शर्म नहीं आती जो बहसीयों की तरह जंगल में फीर रही है जो मेरे काम में रूकावट डाल रही है।

सीता सरूपनखां से :- अरी मैंने तेरा क्या बीगाड़ा है जो खामखवाह मेरे गले पड़ रही है।

राम लक्ष्मण से :- भैया लक्ष्मण, इसकी एक एक रग से शरारत की बूं आ रही है हमारा पिछा छोड़ा तो, अब सीता की ओर लपक रही है जब तक यह अपनी (करनी) बदकारी की सजा नहीं पाएगी, सीधी तरह यहां से नहीं जाएगी,

लक्ष्मण सरूपनखां से :- अजी सुन्दरी इसके साथ क्यों झगड़ रही है जोड़ी तो हमारी तुम्हारी मिलती है, आओ मेरे पास मैं तुम्हें प्यार का सबक सिखाऊं

सरूपनखां लक्ष्मण से :- महाराज आपने तो मेरा दिल रख लिया, नहीं तो यह दिल वैसे ही पिंगला जा रहा था,

लक्ष्मण सरूपनखां से :- हे देवी अब आप अपने कान और नाक मेरी तरफ करो, क्योंकि मैं आपके लिए अच्छे अच्छे गहने बनवाऊंगा, नाक और कानों का पैमाना तो लेलूं (तलवार निकालकर) ताकी रावण को भी पता लग जावे, और नाक व कानों के गहने देख सके (नाक और कान काट देना)

सरूपनखां लक्ष्मण से :- अजी यह क्या कर रहे हैं,

लक्ष्मण सरूपनखां से :- गहने देख रहा हूं कितने बड़े आएंगे"

सरूपनखां लक्ष्मण से :- हाय हाय कैसा जुल्म किया अन्यायी तुने शर्म भी नहीं आई

लक्ष्मण सरूपनखां से :- यह तो थोड़ी मिली है सजा, ज्यादा बोली लुंगा जबां तराश, तेरा हो जाये सत्यानाश,,

सरूपनखां लक्ष्मण से :- अरे देखो तो सोदाई, करू तीनों की मंजाई, यहि ठहरे रहना. पल में भाई को बुला कर लाती हूं. और तीनों को मजा चखाती हूं।

लक्ष्मण सरूपनखां से:- जाती है या बताऊ मौत का भाव !

राम, लक्ष्मण, सीता मन्दर झगड़ खाना खर दूषण व राक्षस सरूपनखां सीन : समाप्त

दुषण खर से:- अरे भाई खर.

खर दुषण से:- यस भाई डीयर सर.

दुषण खर से:- प्याला आगे करके:. मेरे भाई खर पहले प्याला मेरा भर.

त्रीम दुषण से:- अरे लुगाई के गुलाम तु एक तरफ होकर मर.

धर्मा, खर से:- अरे खर जब तक शराब न आवे तो एक दौर नसवार का ही लगा ले.

दुषण धर्मा से:- वाह रे मेरे लाल बुझक्कड़ भला नसवार और शराब का भी भाई होता है भले.

धर्मा दुषण से:- अरे तु इन बातो को क्या जाने. दो चार छींके आकर ऐसा नशा खिलेगा

जैसे अग्नि पर तेल :

परदे के अन्दर से आवाज सरूपनखां ,, हाय-हाय- भाई दुहाई है दुहाई मेरे नाक कान काट लिऐ.

राक्षस:- अरे यह बेढ़गी सी आवाज कहां से आई.

पुरन:- कौन है भाई जो वे वक्त आफत मचाई, आंधी, आंधी, आंधी, आज तो मेरी नाक

ही गुलगला बन गई.

खर राक्षसों से:- अरे नालायकों यह कैसा तुफान है, आन्धी, आन्धी आन्धी.

सरूपनखां करीब आकर राक्षसों से, अरे बेशर्मो, तुमने तो दया और शर्म सब बेच खाई ,,

सतबीर सरूपनखां से:- अरे यह तो सरूपनखां है. कहो बुआ आज तो बड़ी खून से

लथपथ होकर आई हो, यह नया शिकार कहां से मार लाई.

सरूपनखां सतबीर से:- हाय हाय निगोड़ो, तुम्हें मखौल सुझती है, मेरी नाक काट दी गई।

धर्मा सरूपनखां:- कौन मूर्ख कहता है, यह तो नसवार से छिंके आ रही थी, आन्धी-२

अब तो वह भी हट गई आंधी आंधी.

सरूपनखां धर्मा से:- ले देख आखें खोलकर सत्यनाशी.

पूरन सरूपनखां से:- यह मेडल कहां से ले आई मेरी मोसी, अब नजला

जुकाम से भी मिली खलासी.

77

सतबीर सरूपनखां से:- अच्छा हुआ यह मक्खियों का अड्डा उठ गया. न मक्खियों को बैठने के लिए जगह पाइगी, न ही कोई तुम्हें सताएगी.

सरूपनखां राक्षसों:- वो तुम्हारा मुंह काला मखोल करने के लिए यही वक्त निकाला

धर्मा सरूपनखां से: अजी नही हमारी खाला, तुमसे मखौल करे कौन साला. मगर यह तो बताओ. यह मुंह है या खसी परनाला,,

खर बालिया, सब को डांटकर:- खामोश-खामोश अगर ज्यादा शोर मचाओगे सख्त सजा पाओगे - चुप रहो -

खर सरूपनखां: बताओ बहना यह क्या हालत बना रखी है.

सरूपनखां संकेत:- भैया ये कुछ बताने भी दे.

खर का गाना तर्ज लावनी: नाक कटा नकटी हो आई. चेहरा लहू लुहान मेरा हुआ.

टेक:

बता तो बहना सरूपनखां ऐसा क्या घमसान हुआ.

किस जालिम ने कि है हरकत. किसके सिर पर मौत चढ़ी

जीने से बेजार कौन है किस की आई बुरी घड़ी

सांप के मुंह में उंगली देवें. किस की इतनी जरूरत बढ़ी

अदम के रस्ते कौन चला है- किसी आई बुरी घड़ी

कौन है जिसको अपने बाहु बल का इतना अभिमान हुआ .. बता तो -----

सरूपनखां खर से गाना लावनी: बैठ बैठ दिल उकताया यों ही सैर को जाती थी

टेक:

करती फिरती मटर गस्त में अपना दिल बहलाती.

चलते फिरते यों ही अचानक पंचवटी पर जा अटकी.

नजर पड़े दो बनवासी, आर देख उन्हें मैं ठिठकी.

हुई मैं जिस दम उनके सामने. आपस में कुछ गीट पिट की. बुरी नजर से लगे देखने आपस में कुछ गिटपिट की.

वह चाहते थे फुसलाना. मैं खातिर में नहीं लाती थी ... करती फिरती....

खर: वह बनवासी सत्यानाशी कौन है और किसके जाये है.

मेरे ~~इला~~ इलाके में वह अहमक बिना ईजाजत क्यों आये है.

मेरे दुश्मन कौन पंचवटी में जिसने है वह ठहराये हैं।

निश्चय ही उनके वास्ते करें यहां आकर खुरेजी स्त्री न कुछ दिल पर लाये हैं।

निश्चय उनके वास्ते मौत का सब सम्मान हुआ है बता तो बनहम......

सरूपनखा :- वह बनवासी अवधपुरी के राजकुमार कहलाते हैं।

नाम एक का राम दूसरे लक्ष्मण बतलाते हैं

उनकी जो मन्जूर नजर सिता वह उन्हें बुलाते हैं।

हुसन जवानी देख चांद सूरज भी शरमाते हैं।

नाक उड़ा दिया जब मेरा। जब मैं अपने आप बचाती थी... करती फिरती....

खर :- अभी चखाऊं मजा उन्हें राजकुमार कहलाने का।

मेरे ईलाके में आकर मुझ पर ही हाथ उठाने का।

पता चलेगा अभी उन्हें इस तरह खून बहाने का।

जब तक लूं बदला उनसे। भोजन तक न खाने का।

देख तेरी हालत यह मेरे पार जीगर के बान हुआ... बता तो...

खर सरूपनखा से :- नारक। हां हां मालूम हो गया। वह बनवासी सत्यनाशी दही के धोखे में कपास खा गये। और खुद ही मौत के मुंह में आ गए। बहिन आप आराम करो मैं अभी जाता हूं। और उन तीनों का सिर काट कर लाता हूं।

सरूपनखा खर से :- नहीं नहीं मैं भी खुद साथ चलूंगी और उनका खून पीकर गले की प्यास बुझाऊंगी!

दूषन सरूपनखा से :- अगर ऐसी बहादुर थी तो नाक कटवा कर क्यों आई। उस वक्त क्यों न दिलेरी दिखाई। अब बनती है तीसमार खां की ताई।

दूषण खर से :- डांट कर। चुप रह मेरे सरदार, क्यों ज्यादा बक बक लगाई,,

राक्षसों समेत दंगल में जाना, परदा खोलना राम, लक्ष्मण, सीता सीन चालू,,

राम लक्ष्मण से :- भ्राता वह देखो सामने गर्दो गुबार छा रही है। मालूम होता है वह बदकार अपने हिमायतियों को साथ ले आ रही है। तुम सीता जी को यहां से ले जावो

मात का

लक्ष्मण राम से :- भैया मैं तुमको छोड़ कर नहीं जा सकता.

राम लक्ष्मण से :- तुम सब बातों की जीद न किया करो. कभी बात भी मान लिया करो.

लक्ष्मण राम से :- अच्छा भैया दिल तो नहीं चाहता तुम्हें अकेला छोड़ जाऊं मगर तुम्हारी आज्ञा उल्लघंन नहीं कर सकता,, लक्ष्मण सीता का परदे में चले जाना,, सीन चालू दनलमें आवाज.

खर राक्षसों से :- मेरे बीर बहादुरों इस बनवासी को ऐसी मौत मारो की छटी का दुध याद आ जाये;,

दुर्मा राम से :- क्यों बे उल्लू के यहां क्यों आया है.

राम दुर्मा से :- चुपका-२ चला जा नहीं तो तुम्हारा मेरे पास इलाज है.

भीम राम से :- हर एक को सरूपनखां ना समझना,,

दूषण राम से :- हां अगर जान प्यारी है तो सीता को हमारे सरदार के पांव में गीरा दे.

राम राक्षसों से :- वो हरामजादें मरने के लिए तैयार होजा,, बारी-२ सब का मरना,,

खर राम से :- खबर दार होजा तेरी मौत का पैगाम आया है.

राम खर से :- वो मगरूर अब तेरी कसर रही. लशकर तो सब काम आया है.

खर राम से,, वो बेगरत, तुने मेरी बहन पर हाथ क्यों डाला.

राम खर से :- यह तो पहले ही जली भूनी फिरती थी. बड़ी मुश्किल से यहां से टाला, ऐसी बहन का करो मुहँ काला.

सरूपनखां खर से :- भाई खर देना इसका जवाब, हरामी ज्यादा ही सिर पर चढ़ा जा रहा है!

खर राम से :- वो मगरूर होशियार होजा;

राम खर से :- दोनों की लड़ाई; तू मरने लिए तैयार होजा (तीर छोड़कर) इस दुनिया से फरार होजा,,

खर का मर जाना ;- मर गया मेरी भैया.

दूषण खर से :- घबरावो मत मेरे भैया.

कब मेरे

राम दुषण से:- इसको तसल्ली बाद में देना, पहले अपनी जान बचा.

दुषण राम से:- क्या डर है जरा मुकाबले पर आ.

राम का तीर मारना:- चल दफा हो बदकार.

दुषण राम से: अरे जालीम यह क्या आग सी लगादी दुषण का मर जाना सरूपनं खां का दौड़ जाना,,

लक्ष्मण पांव में गीर कर राम से:- भ्राता जी तुम धन्य हो तीर चलाने में भी कमाल कर दिया.

सीता राम से चरणों में: मेरे प्राण नाथ क्षत्रीय धर्म की जिन्दा तस्वीर. प्यारे लक्ष्मण के वीर आप थक गये होंगे. जरा आराम कीजिये ,, पर्दा:

रावण का दरबार

K.K.M

रावण सभा से गाने वाली को बुला कर,, गाना सुनकर, हां. हां - हां. हां मुझसा प्रतापी बलवान दिलेर बहादुर शेर जीसकी भुजा बल का सारा संसार सिक्का मानता है और जीसके नाम को हर एक छोटा बड़ा जानता है, मैं वह रावण हूं जीसने अहंकार अभिमानी सिरों को एक क्षण में कुचल डाला, मैं वह रावण हूँ जीसकी धाक ने जमीन आसमान को हिला दिया, जीसने बड़े बड़े क्षत्रीयों को क्षण में खाक में मिला दिया, (हंस कर) कहा लंका की शहन शाही, कहा इन मामुली रियासतो की बादशाही,

पहरे दार बात काट कर:- महाराज गजब हुआ, खर दुषण सेना सहित रामचन्द्र के हाथों मारे गए।

रावण पहरेदार से:- हैं हैं क्या कहा खर और दुषण से सुरवीर सेना सहित एक तरफ, और रामचन्द्र एक तरफ,, क्रोध से,, अकल से बात कर ओ कमजर्फ मूर्ख बिलकुल बकवास अरे तेरा सत्यानास, कभी ऐसा हो सकता है,,

सरूपनखां दरबार में:- हाय महाराज मैं लुट गई, हाय मैं मर गई,

रावण सरूपनखां से:- अरी बात क्या है, कुछ तो मुंह से बोलो,,

सरूपनखां रावण से,, राध्येश्याम,, दोहा, पड़ जावे इस राज पर और ताज पर खाक
तेरे होते कट गई, आज बहिन की नाक,

रावण सरूपनखां से, क्रोध में:- अरे तेरी दुर्गती किसने बनाई, वह कौन था मौत का

खरीददार, और तुम्हारी यह नाक किसने काटी,

सूरुपनखां रावण से, राधेश्याम:- भाई दो लड़के राम लक्ष्मण, इस दण्डक वन में आये हैं
हमराह एक सीता नामी सुकमारी नारी लाये हैं,

मैं उधर अचानक निकल गई, उस नारी से मिलना चाहा
इतने में छोटे तपस्वी ने, मुझसे कुछ छल करना चाहा,
जब मैंने तेरा नाम लिया, तो उसने मुझको दी गाली
फिर मेरे कान कतर डाले, मेरी यह नाक काट डाली,

मेरी नाक गई सो गई, अब अपनी नाक सम्भालो तुम
जग में ऊंची नाक नहीं तो नकटा नाम धरालो तुम,,
आ गया नाक में दम मेरा, नाकारे तेरी दुहाई है
बहिन की नहीं हंसी है यह भाई की लोक हंसाई है,,

रावण सरूपनखां से, राधेश्याम:- गम नाक न हो तुम उनकी भी मैं नाक नहीं अब रखूंगा
भेजा नथूनों के राह करूं मिर्चों का नाश्ता उन्हें दूंगा।

बहिन की नाक उड़ाने में होती है नाक नहीं ऊंची
अबला पर हाथ उठाने से होती है नाक नहीं ऊंची।
यह धरा धाम पताल लोक, मेरे पिनाक ने जीते हैं।
मेरे भय शेर और बकरी, जल एक घाट पानी पीते हैं।

यह समाचार यह दुराचार क्या खर दूषण से नहीं कहा।
उसका तो वहीं अखाड़ा था, उस कुल भूषण से नहीं कहा।

सरूपनखां रावण से:- वे सेना लेकर गये वहां, अत्यन्त घोर संग्राम हुआ
लेकिन बड़े तपस्वी ने, उन सबका काम तमाम किया,,

पृथ्वी पर नदी लहू की थी, लाशों पर लाशें पड़ती थी।
मैं देख रही थी खड़ी खड़ी, उन सबकी गर्दन कटती थी।

रावण अपने मन में राधे:- जब एक अकेली ताकत ने, इन सब वीरों को मारा है।
तो फिर निश्चय यह सिद्ध हुआ नारायण ने अवतार लिया,,

निश्चय ही वह अवतारी है. तो बैर भाव ही रखूंगा.

दुसरे जनम का बन्धन भी. उनके द्वारा ही तोड़ूंगा-

यह मौत नहीं मोक्ष यह लड़ना है नहीं मिलन है यह

वह भी हो शर भी उनका हो तो भवसागर तरना है यह

रावण सरूपन खा से. राचो:- वह काटे नाक. कान फिर जिन्दा रहे जमाना में.

तो टूटे बीस भुजा मेरी. लानत है सस्त्र उठाने में.

तुम बैठो थोड़ी देर यहां: मैं दण्डक बन में जाता हूं.

इस नाक काटने का बदला. दोनों से अभी चुकाता हूं

रावण सरूपन से: यशवन्तसिंह:- बहिना सरूपन खां तुम जाओ. महलों में आराम करो

(दरबारियों से) आज इसी वक्त दरबार को बरखास्त करहा हूं. जावो तुम आराम

करो और दुसरी आज्ञा का इन्तजाम करो!

अकेला रावण अपने मन में:- सीता मेरी जान व ईमान की मलिका है. निसन्देह

तू सीता है. कितना प्यारा नाम है सीता. ओह जालिम सीता. तूं यद्यपि स्वंयम्बर

में तो नहीं जीती. अब अवश्य जीती जायेगी. और अपने शर्बत दिदार के जाम.

अपने इन नाजुक हाथों से रावण को पिलायेगी. और तेरी मनहोर सुन्दरता

लंका के महलों में जगमगाएगी. वो जालिम तुने यहां आकर मेरा पिछा नहीं छोड़ा.

और बैठे विठाये दिल को बुरी तरह मरोड़ा. मगर याद रख अब अयोध्या लौट कर वापिस

नहीं जायेगी. ताकत से बल से छल से तुम्हे उड़ाकर लाऊंगा..

दुःखी होकर) हां हां किस तरह जावूं, सीधी तरह रामचन्द्र पास जाकर लड़ना लोहे के

चने चबाना है. अब अकेले से यह काम बनना मुशकिल है, किसका साथ लेवूं.

खुश होकर) हां हां याद आया मामा मारिच. मामा मारिच- मेरे बहादुर मारिच उछल

कर अभी जाता हूं उसे अपना हमराज बनाता हूं (पर्दा हो जाना) रावण आग.

मारीच का झोपड़ा

रावण मारिच R.R.M.

रावण मारिच से:- मारिच वो मामा मारिच. मेरे बहादुर मारिच.

य रावण से :- आईये महाराज, मेरे सिर के ताज, किस तरह गरीब की झोपड़ी में आगमन हुआ

रावण मारीच से :- अगेंचे में महाराज, इस वक्त में तेरी मदद का मोहताज हूँ

मारीच रावण से :- महाराज मेरी जान और जिस्म आपके चरणों पर कुरबान है कहिए मुझ से क्या काम है.

रावण मारीच से :- शाबास ! मेरे बहादुर, तू बड़ा दिलेर है। आखिर शेरों का शेर है। चल मेरे साथ में तुझे एक कार्य बताऊ, तेरी माता तथा पिता भाई का बदला दिलाऊ।

मारीच रावण से :- महाराज क्या काम है, आपकी बात बड़ी पेचदार है

रावण मारीच से :- मामा तू तो बिलकुल गंवार है। तेरी माता तथा भाई का कातिल रामचन्द्र तथा लक्ष्मण पंचवटी में आए हुए हैं तथा उस सुन्दर देवी सीता को भी साथ में लाए हैं अगर तू थोड़ा सा साहस करें तो तुझे बदला मिलता है। मेरा काम निकलता है किसी तरह सीता को उठा लाएगें और वो जादु जंगल में भटक-२ कर मर जाएंगें।

मारीच-रावण :- महाराज आपने कोई उपाय तो सोचा होगा।

रावण मारीच से राधे :- तू चल कर माया मृग बनजा, मैं बाबा जी बन जाऊंगा

तू राम लक्ष्मण को बहकाना, मैं सीता को हर लाऊंगा।

मारीच रावण से राधे :- जो उनसे बैर बढ़ाते हैं, वे आखिर मारे जाते हैं

वे मौत मौत के घाट वही, वे वक्त उतारे जाते हैं।

[illegible]ना हरना है तो निज दोष हरो, सीता का हरना ठीक नहीं;

करो तो शुभ कार्य करो, चोरी करना ठीक नहीं,

अच्छे कर्मों के करने से, गृह में प्रकाश हो जाता है.

परनारी घर में लाने से, घर में विनाश हो जाता है.

रावण मारीच से:- यदि नहीं साथ देगा मेरा, तो सारा जान भुला दूंगा,

सीता को हरने से पहले, तुझे यमलोक पहुंचा दूंगा,

मारीच रावण से: यशवन्त सिंह:- कबर में पांव रखने के लिए तैयार बैठा हूं

बुढ़ापा आ गया सरकार हिम्मत हार बैठा हूं।

महाराज मैं तो आपका ताबेदार हूं. हर तरह से आपकी सेवा करने के लिये तैयार हूं। मगर इस वरी बुढ़ापे में कुछ नहीं बनता। सब चोंचले जवानी साथ ले गई। मैं पहले ही उनके हाथों को आजमा चुका हूं। और उनके सामने जाने की कसम खा चुका हूं।

रावण मारीच से:- कड़क कर:- अच्छा देख मैं तेरी कसम तोड़ता हूं और एक तलवार से तेरा भेजा निचोड़ता हूं।

मारीच रावण से:- महाराज मुझे माफ कर दिजिये मैं आपके आगे हाथ जोड़ता हूँ।

रावण मारिच से:- अरे पाजी तूं इन्कार करता है। तुझे पता नहीं मैं कौन हूं। मैं रावण हूं रावण।

मारीच रावण से:- हे महाराज माना की आप रावण हैं. पर वह तो इक्कावन है।

रावण मारीच से:- वो बेहुदा मक्कार उपदेशक के बच्चे. ~~ठहर~~ ठहर मैं तुझे नसीहत सिखाता हूं। और तुझे इन्कार करने का मजा सिखाता हूं। अरे वो गद्दार, तेरा चार दिनों में सारा बल खत्म हो गया। और रामचन्द्र का नाम सुनते ही तेरा परवाना निकल गया।

मारीच रावण से:- ये बिन बुलाये की आफत. न झगड़ा न तकरार आ बैल मुझे मार. फंसा बड़ा बेढब फंसा, उधर रामजी के तीर इधर इसकी ~~तल~~ तलवार अजब तमासा है। ईश्क बाजी सरतन रखा करें,

बीन आई मौत बेचारे मारीच मरे। खीर खावें बमणी,
फांसी चढ़ें शेख, नहीं देखा हो तो यहां आकर के
देख:।

रावण मारीच से:- अरे कमबख्त जल्दी जवाब दे, सोचता क्या है।

मारीच रावण से:- जरा ठहर जाईये, जरा सोचसमझ कर जवाब देंगे। आखिर
मरना है।

रावण मारीच से:- मैं इससे ज्यादा इन्तजार नहीं कर सकता।

मारीच रावण से:- वाह: अजीब जबरदस्ती है १० मिनट तो फांसीवाले
को भी दी जाती है।

रावण मारीच से:- मरना है तो सीधी तरह मर पागलों की तरह क्यों मरता है।

मारीच रावण से:- मरती तो सारी दुनिया है, मगर उल्टा मरना तो आपसे
सुना है।

रावण मारीच से: भड़ककर: अरे ओ मरदूद तेरा किस तरह ख्याल है,

मारीच रावण से:- हुकम से इन्कार करने की किसकी मजाल है।

रावण मारीच से:- शाबाश मेरे बहादुर शाबाश! अगर तू मेरे साथ है,
तो सीता को उड़ा लाना मामूली बात है। हां हां हां हां हां।

मारीच मन में:- या बेईमानी तेरा ही आसरा। अन्दर चले जाना।

लक्ष्मण

सीता हरण

राम: सीता

मायावी मृग

सीता का गाना राम से लावनी तर्ज:- एक वर्ष अब बाकी रह गया, लौट अयोध्या जाने में
तेरह साल खत्म हो गये, भारत पलक झपकाने में,

1\. हम जल्द अयोध्या जायेंगे, और खुशी के मंगल गायेंगे
फिर भरत जी मिलने आयेंगे, खूब होगी धूम जमाने में, एक वर्ष....

2\. माता के दर्शन पाऊंगी, चरणों में शिश निवाऊंगी
सभी बातें उन्हें सुनाऊंगी, जो देखी यहां तक आने में एक वर्ष......

जब निकर अयोध्या जायेंगे, लोग हमको लेने आयेंगे.

नगरी खूब सजायेंगे, खूब होगा जसन वहाने में, एक वर्ष......

सीता, राम से:- हे प्राण नाथ. अब तो तेरह वर्ष खतम हो गये हैं, और बातों ही बातों में काम हो गये हैं। अगले साल तो हम अयोध्या पधारेंगे.

राम सीता से:- ईश्वर की दया से यह दिन भी कट जायेंगे, मगर जिस काम के लिये अवतार लिया है, वह कार्य तो अभी अधूरा है।

राम लक्ष्मण से:- भैया तुम बन में जाकर कुछ कन्द मूल ले आवो हमें भूख लग रही है।

लक्ष्मण राम से:- जैसी आज्ञा हो भ्राता जी, लक्ष्मण का चले जाना विपिन को.

सीता राम से:- प्राण नाथ वह कौन सा काम है।

राम सीता से:- प्राण प्रिय हमने अवतार इस भूमि का भार घटाने के लिये लिया है. जो ऋषी महात्माओं पर अत्याचार हो रहे हैं. उन्हें मिटाने के लिये लिया है। अब आप इस वक्त पाताल लोक में चली जाओ, और यहां पर आप थोड़ी सी शक्ति छोड़ जाओ। फिर देख मैं अपनी नर लीला रचता हूं, और निशाचरों का इस भूमि पर से अंश मिटाता हूं।

सीता राम से:- जैसी आज्ञा हो स्वामी ⊕ साड़ी बदल कर आना अन्दर से.

लक्ष्मण राम से:- भैया यह लीजिये कन्दमूल और फल-फल : मृग का आना.

सीता राम से एकदम इशारा करके:- दोहा: ~~रघुकुल~~ रघुकुल नन्दन

दोहा. रघुकुल भूषण दुख हरण दीन बन्धु भगवान,
दासी की विन्ती सुनों स्वामी दया निधान.

सीता:- मृग ऐसा तो देखा न सुना, जैसा यह सुघड़ सिलोना है.
सिर लेकर पांव तलक सोना ही सोना है,

हे नाथ खाल लाओं इसकी तो कुटियां की श्रृंगार होगी
सोने के मृग की मृग छाला क्या अद्भुत यादगार होगी.

राम सीता से:- हे प्रिय मैं जाता हूं (लक्ष्मण से) भई लक्ष्मण तुम सावधान रहना
अच्छी तरह खबरदार रहना।

राम का मृग के पीछे जाना (परदे में से आवाज) 1.1.187

आवाज :- भाई लक्ष्मण आओ मेरे प्राण बचाओ.

सीता लक्ष्मण से :- लक्ष्मण सुनते हो यह कैसी आवाज आई।

लक्ष्मण सीता से :- हाँ जानता हूँ किसी ने मेरा नाम लेकर आवाज लगाई है।

सीता लक्ष्मण से :- किसी की क्या तुम्हारे भाई की आवाज है।

लक्ष्मण सीता से :- माता जी तुमको पता नहीं इस आवाज के अन्दर क्या पोसीदा राज है।

सीता लक्ष्मण से :- देवर-देवर जाकर देखो रघुराई तुम्हें टेरते हैं.

भाई के थके हुए बाजू भाई को बार हेरते हैं।

भगवान न जाने अपने सुख, कितने कष्टों के दुख में हैं

लक्ष्मण इसमें सन्देह नहीं तुम्हारे भाई इस समय दुख में हैं.

लक्ष्मण सीता से :- किसका साहस है है माता जी उन्हें दुख पहुंचाएगा

सूरज जिस जगह प्रकाशीत है वहां कब अन्धेरा छाएगा,

अच्छा माना दुख आया तो दुखी नहीं कर पायेगा.

विधाता के दर्शन कर सुख का स्वरूप बन जायेगा.

मेरा इस समय धर्म यह मैं रहूं आपकी रक्षा पर

मेरा सर्वस्व निछावर है मेरा अपने भाई की आज्ञा पर

यह वन विशाल व्याघ्र व्याल भयचारी और घनेरा है।

मां तुम्हें अकेला छोड़ू मैं यह कर्तव्य नहीं मेरा है।

सीता का गाना बहरतवील :- तु अभी जा के भाई की इमदाद कर

मौत मुझको यहां कोई खाती नहीं

पासबानी की मुझको जरूरत नहीं

मैं यहां से कहीं भग जाती नहीं

भाई ही भाई का दुश्मन हुआ

क्या करूं पार मेरी बसाती नहीं

है बनी के मददगार सौ सैकड़ो
बिगड़ी का दुनियां में साथी नही.

3. तेरा होगा न पूरा इरादा कभी
यदि तक तुझे मेरी पाती नही
नही मालूम तुने समझा है क्या
बेहया तेरी आंखें लजाती नही.

4. अभी करदूंगी, यहीं खातमा
अपना
जिन्दगी श्री राम बिन भाती नहीं
तुं चला जा जहां दिल करे
तेरी सुरत अब मुझे भाती नहीं

राधेश्याम :- लक्ष्मण अब मैने जान लिया मतलब का भाई चारा है।
तुम घर को बन जो आए हो इसमें कुछ स्वार्थ तुम्हारा है.

हे लक्ष्मण तुम व्यर्थ बहाने बना रहे हो। मैं तुम्हारे मतलब को अच्छी तरह से जानती हूं। तुम धोखा देकर भाई को मरवाना चाहते हो। यदि इसको जीना है तो श्री राम के साथ वरना जिन्दगी पर खेलजाना मामूली सी बात है।

लक्ष्मण सीता से :- माता; माता: तुम यह क्या कह रही हो.

सीता लक्ष्मण से :- मैं जो कुछ कह रही हूं, बिलकुल सच्च कह रही हूं, जहां तुम्हारी तबीयत करे चले जाओ और मुझे मुंह न दिखाओ. शोक, सभी मतलब के यार हो

लक्ष्मण का गाना :- मेरी माता तुम्हे क्या हो गया
किस किसम की बाते सुनाती मुझे
आज दिल तुम्हारे क्या हो गया
बे गुनाह तोहमत लगाती मुझे.

२. सब करा और धरा मिट गया खाक में

आप बदमाश कह कर बुलाती मुझे

आज अपने ही कानों से क्या सुनरहा

मौत भी तो नही आती मुझे.

३. साथ आया था शायद इसी वास्ते

ऐसी बातें कह कर रूलाती मुझे

खूब की परवरीश खूब बदला दिया

खूब दे दे के लोरी सुलाती मुझे.

५. अच्छा माता तुम्हारा क्या दोष है

मेरी किस्मत ही चाके दिलाती मुझे.
धक्का

बे धरम. बेशर्म, बेरहम बेहया

बेवफा बेनवा [illegible] कहलाती मुझे.

आत्म लक्ष्मण सीता से :- माताजी आप किस किसम की बातें कह रही है। क्या मेरी वफादारी का यही सीला है। हां माता किसी का क्या दोष है। दोनों ने साथ लाकर यही गुल खिलाने थे. और मेरे जूमें लगाने थे। हां माता किसी पर क्या अफसोस है। यह तो मेरी कर्मो का फल है मुसीबत के दिन आए तो माता तुमने भी डंक चलाए।

परदे में राम की आवज :- भाई लक्ष्मण जलद आवो मेरे प्राण बचावों।

सीता अपने दिल में :- हां एक औरत आपकी क्या सहायता कर सकती हूं। यह आपकी दासी हर तरह मजबूर है! हां इतनी बात जरूर है। अगर तुम जीते आए तो मैं तुम्हे जीती पाउंगी अन्यथा मैं तुमसे पहले स्वर्ग की राह लुगी।

लक्ष्मण सीता से :- हे माता तुम्हारा कसूर नही, जब आप अपनी जबान से ऐसे शब्द कह रही तो कोई नया बखेड़ा तैयार है। अच्छा मैं चल गया तो यहां आपका निगाहवान कौन है।

सीता लक्ष्मण से रोते :- मेरी तुम कुछ चीन्ता न करो. रक्षक है ईश्वर मेरे

तुम जावो वहीं चले आवो. जीस जगह गये प्रभूवर मेरे.

१०

माता तुम मुझे समझते हो. तो आज्ञा मानो माता की
मैं आज्ञा तुमको देती हूं जावो सुधी लेने भ्राता की.

लक्ष्मण सीता से राधे श्याम :- रोकर :- हे पवन देव तुम साक्षी हो. हे पक्षी गणों गवाह तुम्ही
मेरी इस धर्म नाव के अब हे सूर्य देव मल्लाह तुम्ही.

आज्ञा पालन करता हूं मैं बस इतना है सन्तोष मुझे
रघुराई अगर उलहना दें. तुम कह देना निर्दोष मुझे.

रेखा खिंच कर) मैं अब जाता हूं मां. तुम सावधान हो कर रहना
आज्ञा के भीतर दास रहा तुम रेखा के भीतर रहना
इस रेखा का उल्लंघन कर जो पर्ण कुटी में आयेगा.
है आन उसे लक्ष्मण की. वह वहीं भसम हो जायेगा.
अब अपनी सीता माता को तरूवरो छोड़ता हूं तुम पर
अपनी रखवाली में रखना बन चरो छोड़ता हूं तुम पर
पक्षियों तुम्ही अब रक्षक हो, तुम पर ही अपना घर सौंपा है.
हे पंचवटी हे पर्ण कुटी. सीता मां को तुम पर सौंपा है.

लक्ष्मण का चले जाना

अनोखा साधू

दगल में इकतारा के साथ K.K.H.

रावण का गाना :- औलाद वालो फूलो फलो :-

सीता साधु से :- हे योगीराज आप कौन है. और कहां से पधारे है.

साधु सीता से :- हे देवी. इसका जवाब मैं क्या दूं आपके सवाल ही दुनिया से न्यारे है।

सीता साधु से :- हे महात्मा. आखीर आपका नाम व रहने का कौर मुकाम.

साधु सीता से :- फकीरों का क्या नाम. जहा रात पर गई वही विश्राम..

सीता साधु से :- हे ऋषि फिर यहां पर किस तरह दर्शन दिये;

साधु का गाना :- तेरे द्वार खड़ा एक जोगी :

साधु सीता से नाटक : हे देवी सिर्फ भिक्षा के लिये.

सीता साधु से :- अयो आग्य जो. जो कन्द मूल हाजीर है. ग्रहण कीजिए महाराज.

साधु सीता से :- देवी, भीक्षा तो बाद लूंगा पहले अपना व पता बता दीजीये,

सीता साधु से:- हे माहत्मन, सीता मेरा नाम है, और मिथिलापुरी पैदायशी मुकाम है. श्रीरामचन्द्र जी की अर्धांगनी हूं. और महाराज जनक की राजकुमारी हूं. पिता की आज्ञा से मेरे स्वामी चौदह वर्ष के लिये बनों में आये हैं. और मेरी सौतेली सास के जाये. लक्ष्मण जी हमारे साथ आये हैं। तेरह साल से इन बनों में भ्रमण कर रहे हैं. और आप जैसे साधुओं के दर्शन कर रहे हैं।

साधु सीता से राधे:- हे माई अब मुझे भीक्षा दो मरतबा रहे. भाला तेरा,

भगवान तुम्हें जिन्दा रखे. हो सदा बोला बाला तेरा.

तू दूधों नहा पूतों फल. तू दिन पर दिन बड़भागीन हो.

भूखों को थोड़ा भोजन दे. देवी तू अटल सुहागीन हो,

सीता साधु से:- भीक्षा लीजिए महाराज.

साधु सीता से:- लाइऐ देवी: जब रेखा में बढ़ता था, एक दम पिछे हट जाता हूं।

साधु सीता से: राधे:- अगर भिक्षा देनी हो तो. रेखा बाहर आ माई.

जोगी लेते नहीं. इस तरह बन्धी भीक्षा माई.

सीता साधु से:- मुनीवर मुझे क्षमा करे. रेखा यह छूट नहीं सकती

है आन लक्ष्मन देवर की. जो मुझसे टूट नहीं सकती.

साधु सीता से राधे:- मैं कहता हूं तोड़ो नही तुम देवर की आन

बाबा जी कभी लेगा नही इस प्रकार का दान। अच्छा देवी हम जाते हैं।

सीता साधु से ठहर जाईये महाराज:- राधे:- देवर की आन रहे न रहे. रखूंगी धर्म गृहस्थी का

अब मैं रेखा का ध्यान छोड़. करती हूं करम गृहस्थी का.

सीता का नाटक साधु से:- अच्छा महाराज यह तो बताईये. मैं आपको किस तरह भीक्षा दूं और मैं किस तरह रेखा से बाहर आसकती हूं।

साधु सीता से:- हे देवी तुम इस तरह से करो. पहले रेखा पर पारा रखो. पारे पर पांव रखो फिर भीक्षा डालो।

सीता साधु से:- लीजिए महाराज भीक्षा, रावण पारे से उठा कर हो हो हो हो हो-

रावण सीता से: राधे:- प्यारी सीता हो सावधान, अब तूं मेरे पंजे में है।

मैं लंका पती रावण हूं तू रावण के कब्जे में है.

सीता रावण से: रोंचे:- वो दुष्ट खड़ा रह खबरदार. स्वामी अब आने वाले हैं.

जो धनुष तोड़ कर लाये हैं वह मेरे रखवाले हैं.

अब तक तो मैं उस रेखा में थी अब मैं सत की रेखा में हूं

अबला हूं पर इतना बल है, पतिव्रता की रेखा में हूं.

तूं क्या संसार अगर आये तो भी बल तोल नही सकता

सत्वन्ती के सत के आगे ब्रमा भी बोल नही सकता.

रावण सीता से:- हां हां हां. अब मालूम हुआ की तेरी सकल ही सकल है. वैसे तु आला दर्जे की बेअक्ल हो. अरी नदान सोचती नही इस तरह इन बनको के साथ अपनी जीन्दगी बरबाद करेगी. हां हां चौदह साल का तो एक बहाना है. इन बेचारो का तो जंगलो में ठिकाना है. राम तो भटक-२ कर मर जाएगा. आखीर तुझे एक दिन रांड कर जायेगा मेरे साथ चलेगी तो रावण की पटरानी कहलायेगी. और लंका तेरे पांव में अर्पण किया

सीता रावण से क्रोध:- आग लगे तेरी लंका को चुल्ह में पड़े तूं. ऐ रावण क्यों अपनी तलाश रहा है. राजा होकर करता है ऐसा कर्म, डूब मर दुष्ट वो बेशर्म.

रावण सीता से क्रोध में:- वो मुंह जोर बेबाक. मुठी भर हड्डिया और इतनी तकरार. तेरी जबान बहुत चल रही है और कैंची की तरह चल रही है. आखीर तूं जंगल की रहने वाली बहसी है. तुझे पता नही राजा के साथ किस तरह कलाम किया जाता है. और किस तरह प्रणाम किया जाता है. मैं तुझे अपने साथ ले जाऊंगा, और तुझे अकल सिखा कर इन्सान बनाऊगा.

सीता रावण से:- चला जा चला जा क्यों खोपड़ी खुजला रही है.

रावण सीता से:- वो बद जबान क्यों अपनी मौत को बुला रही है. पुकार अपने सहायक को (हाथ पकड़कर) जो मेरे इस जबरदस्त हाथ से छुड़ाए!

सीता रावण से:- पुकारने की जरूरत नही. वह परमेश्वर जो तुझमें और मुझमें व्यापक तो तेरे इस जुर्म को देखता है. बल्कि तेरे पापों को भी जानता है।

रावण सीताको, उठाकर :- बहुत अच्छा देखा जायेगा जो तुम्हें मेरे पंजे से छुड़ायेगा.

सीता रावण से: रोकर :- हे ईश्वर तेरी दुहाई है. एक तरफ गरीब औरत, दूसरी तरफ मजस्म कसाई है. हे प्राण नाथ बचाओ. वीर लक्ष्मण तुम्ही आवो. हां लक्ष्मण तुम्हारा क्या दोष है. मैंने अपनी करनी का फल पा लिया. हाय हाय मैंने तुम बेगुनाह पर दोष लगाये. जो कभी सुनने में नही आये.

राम लक्ष्मण मिलन

रावण सीता को उठाकर परदे में.

१८-१८-१३
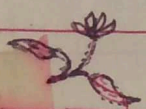
राम लक्ष्मण से :- हैरानी से :- हे भैया लक्ष्मण मैं तुम्हें वहां बैठाकर आया था.

लक्ष्मण राम से :- मगर भैया यहां पर भी आपने तो बुलाया था.

राम लक्ष्मण से :- किसने ~~कब~~ और कब.

लक्ष्मण राम से :- आपने और अब.

राम लक्ष्मण से :- मालूम होता है आप किसी के धोखे में आ गये. और सख्त गलती खा गये.

लक्ष्मण राम से :- भ्राता जी मैं न तो गलती खा सकता हूं. और न ही किसी के धोखे में आ सकता हूं. मगर होनी को किस तरह टाल सकता हूं आप की आवाज ने मुझे सहायता के लिए पुकारा भाई लक्ष्मण जल्द आओ और प्राण बचाओ, जिसे सुनकर जान की जी रोने लगी और वही प्राण खोने लगी. मुझे भेजने के लिए इसरार किया था, जब मैंने इन्कार किया तो बदनियत और दगाबाज ठहराया.

लक्ष्मण राम से राम - मारीच बना था माया मृग यह गहरी चाल उसकी थी और स्वर में मरते-२ आवाज विशाल उसी की थी

~~भैया मैं सोच~~

भैया मैं सोच रहा था खड़ा-२ दुःख ती चित आश्रम में
कहता है मेरा बायां नैत्र अब नही जान की आक्रम में

श्रावत सिंह - भईया मैंने तुमको अति दफा इतना समझाया, मगर अफसोस तुम्हारी समझ में
कुछ नहीं आया। रोकर। दुशमन मौका पा कर अपना वार चला गया और
मुझे खाक में मिला गया

लक्ष्मण राम से हे भैया आप पहले इस कदर न घबरायें पहले पंचवटी की तरफ तो आयें.

पंचवटी में आकर - सीता ओर प्यारी सीता, तू कहां पर है सीता मुझे अति हो रहा

राम राम से उठो भैया इतना बेचैन क्यों हो रहे है आपकी तबीयत पर तो बड़ा

इस्तक़लाल का

लक्षमण - भैया मेरा इस्कबाल सब रवाक मे मिल गया जीसम है मगर कलेजा सिम से निकल गया.

लक्षमण राम से - हे भैया मुसिबत के समय घबराना अपनी मुसिबत को बढ़ाना है हे भैया आप इस कदर न घबराएं! देखेगे भालेगे अगर आसमान पर चढ़ जाए या पाताल मे उतर जावे माता जी को ढुड निकालेगें जो कुछ हो चुका उसके लिए रोना फजुल है

राम का गाना लक्षमण से - फिरे स बनो में दुःखी तेरे बिना राम सिया

टैक टोहे है ना पाई होगी सवेरे से शाम सिया

तुम बनवासी जीव बता दो इधर गई या उधर बताओ

खोल के सुनादो गई कौन से मकान सिया. फिरे से बनों,,

2 मधुर बोल सब सुन्दर प्यारी है सुख दायक जनक दुलारी

है पतिव्रता नारी तेरा कैसा सुन्दर नाम सिया, फिरे से बनो,,

3 सीता राम प्रेमी टोहे कर-2 याद रात दिन रोये,

मन मेरा मोहे गई कौनसे स्थान सिया, फिरे से बनो में दुःखी,, । ,,,,

राम का नाटक लक्षमण से - आय वही पंचवटी जिसमे जिन्दगी बड़ी ऐसो अराम से कटी अब बिल्कुल नहीं भाति वो मनहुस पंचवटी तुने ऐसा जुल्म अपनी आखों से देखा मगर तेरी छाति नहीं फटी वो जालिम तुझे मेरी प्राणा प्यारी को खा लिया या किसी जगह छुपा लिया ऐ सीता के नन्हीं फुलवारी के बुटों और तुम्ही कुछ मुह से फुटो मुर्छित होना

लक्षमण राम से - हे भ्राता जी होस करो, आपने दिवानो जैसा हाल क्यो बना रखा है जरा अपनी तबियत को सम्भालिए,, ॥

राम लक्षमण से टैक ~~विरह काल दुःख-सुख की साथी~~

वीर अब कैसे धारु धीर

विदप काल ~~के~~ दुख-सुख की साथी रहीन वह भी तीर.

1 अवध पुरी में जावो भैया. तुम क्यों हो दलगीर

नहीं किसी का दोस है भैया उलट गई तकदीर वीर

2 बैठे बैठे आज अचानक लगा कलेजे तीर

न घर के न घाट के युही मरे आखिर ...... बीर

6 क्या जाने वह किसी दरिन्दे न ही दी हो चीर ---- बीर

मुश्किल है अब उसका मिलना, लाख करो तदबीर

7 न दिल में रहा सब्र न नैनों में नीर

क्यों रोये अपने कर्मों को, रह गये वही फकीर बीर

8 कितने ताव दिए गर्दिश में जिनकी नहीं नजीर

मर कर भी यह खाक हमारी बन जाएगी अक्सीर" बीर ----

राम का वाक्य लक्ष्मण से- हे प्यारे लक्ष्मण तुम अयोध्या चले जावो और काज राज में भरत का हाथ बटाओ, मेरा तो इन्ही जगलों में ठिकाना है, आखिर यहीं भटक-२ मर जाना है हां भैया मैं अयोध्या कैसे जा सकता हूं और माता जी को कैसे सूरत दिखा सकता हूं क्योंकि उन्होंने तो पहले ही कह दिया था कि आवो तो इकट्ठे आना अकेला मुंह न दिखाना हे भैया जब जनक अपनी पुत्री का हाल पूछेंगे तो मैं क्या बताऊंगा और कौन सा मुंह लेकर उनके सामने जाऊंगा"

लक्ष्मण राम से- हे भ्राता जी तसल्ली रखीए, जिस तरह तीनों इकट्ठे आये थे उसी तरह तीनों इकट्ठे जाएंगे, वरना अकेले-दुकेले हरगीज मुंह न दिखाएंगे, भैया अब ज्यादा देर न लगाईये, और जल्दी खोज कि जाए-

राम लक्ष्मण से- ठण्डी सांस भर कर, चलो भ्राता अब तो इस मनहुस जगह की तरफ देखने को दिल नहीं चाहता

सीता * रावण * जटायू पर्दे पर * लड़ाई:-

जटायू रावण से- महाराज यह काम आपकी शान के खिलाफ है K.K.M

रावण जटायु से- कौन है जो मुझको टोकता है और ख्वांमख्वां मेरा रास्ता रोकता है ओ! जान बुझ कर अपने आपको मौत के मुंह में में झोकता है"

जटायू रावण से- महाराज मौत का सम्मान तो खुद लिए जाते हो, और दुसरो को मौत तलबगार बनाया

रावण जटायु से- लापरवाही से :- जब तुम्हे इमदाद के लिए बुलाऊं तो मत आना,

जटायू रावण से- आते कहां हो जरा सम्भल कर कदम उठाना" (सीता को अपनी तरफ करना)

रावण जटायू से:- मुझे रोकने की क्या मजाल है.

जटायू रावण से:- बगैर मेरे मारे नहीं जाने दूंगा. आपका किस तरफ ख्याल है.

रावण जटायू से:- अरे मरदूद तेरे सिर पर काल छाई है।

जटायू रावण से:- मौत तेरी यहां खींच लाई है.

रावण जटायू से:- तेरा इससे क्या ताल्लुक न समझ में आई है.

जटायू रावण से:- राम, लक्ष्मण का पिता मेरा धर्म भाई है.

रावण जटायू से:- अच्छा हाथ सीता के बदन के न लगाने दुंगा क्रोध.

जटायू रावण से:- जीते जी इस पर आंच नहीं आने दुंगा. अहंकार

रावण जटायू से:- एक ही वार में तेरी गर्दन उड़ा दूंगा।

जटायू रावण से:- ठहर जा तुझे चोरी करने का मजा चखाता हूं.

रावण जटायू से:- वो बुजदिल खबरदार होजा तुझे अदम का रास्ता दिखाता हूं.

दोनों की लड़ाई जटायू का घायल होजाना

जटायू रावण से:- जमीन पर गीर कर: अरे जालिम बुरी तरह घायल किया, अफसोस दिल का अरमान भी न निकलने दिया.

रावण का जटायू को तड़पते हुए छोड़ जाना (परदे में) जटायू परदे में,, राम लक्ष्मण परदे पर))

राम लक्ष्मण से:- प्यारे भैया अफसोस की सीता जी का अभी तक पता नहीं चला.

परदे के अन्दर से आवाज, जटायू:, अरे कोई रामचन्द्र तक खबर पहुंचावो, और उनको मेरे पास बुला लावो.

राम लक्ष्मण से:- जरा सुनना भाई यह आवाज किधर से आ रही है.

लक्ष्मण राम से:- हे भ्राता जी ऐसा मालूम होता है कोई दर्द की वजह से कराह रहा है. और आपका नाम लेकर पुकार रहा है

राम लक्ष्मण से: चलो भैया यहां से सीता जी की खबर मिले: परदा खुलना.

लक्ष्मण राम से:- हाय हाय भाई गजब हो गया. यहां तो महात्मा जटायू घायल पड़े हुए हैं.

राम जटायू से:- हे देवता हम तो अपनी किस्मत को रोते थे. मगर आप किस जालिम के हाथ पड़े.

राम जटायू का सिर अपनी जांघ पर रख लेते हैं

जटायु रामसे राधे:- हां राम एक राक्षस दाढ़ीका. हां राम ले चला था उनको.

हां राम न बोला जाता है. हां राम छुड़ाव सका उनका.

हां राम लड़ा था उनसे. हां मुझे अब मरने दो

हां राम सामने आ जावो. हां राम यह रूप निरखने दो.

राम जटायु से:-दर्द में:- हाय इस जगह हमारा एक ही गम स्वार था. मगर अफसोस वह भी

मुसीबत के वक्त साथ छोड़ रहा है. हे महाराज आप इस तरह न तड़पे, मैं उस जालिम से

बदला ले कर छोड़ूंगा,

जटायु राम से:- भगवन मुझे न बदला लेने की इच्छा है, अब तो आपकी सूरत की लालसा है.

राम जटायु से:- अच्छा महात्मन मेरा एक काम कर देना,,

जटायु राम:- क्या काम है भगवन:

राम जटायु से: राधे:- महात्मा भाई यह समाचार कहना ना पिता जी से जाकर

मैं राघव हूं दुष्ट चोर कुल सहित करेगा कत्ल आकर.

अच्छा जावो हे भक्तराज. जावो परम धाम को तुम

जाते जाते इतना सुनलो मोक्ष पाकर चलो राम को तुम.

जटायु राम से:- अच्छा भगवन यह ध्यान रहे मेरा दाह संस्कार उस जगह करना जहां

किसी का भी न हुआ हो।

राम जटायु से:- अच्छा भक्तराज यथा अस्तु ऐसा ही होगा। जटायु का स्वर्गधाम चले जाना.

राम जटायु से:- हे भक्तराज मुझे ऐसी जगह कहीं नहीं दिख रही है. मगर मैं आपका दाह

संस्कार अपनी हथेली पर करता हूँ। **जटायु सीन समाप्त। परदा**

राम लक्ष्मण से:- भैया लक्ष्मण हमारी सहायता करने वाला एक ही था, वह भी इस

दुनिया से ~~नहीं रहा~~ मुंह मोड़ गया ! अब तो यह जगह खाने को आती है.

लक्ष्मण ~~से~~ रामसे:- हां भ्रात इस जगह रहने को मेरा भी दिल नहीं करता है.

5 (पांचवा दिन शुरू)

शबरी की कुटिया ✖

राम लक्ष्मण परदे में.

शबरी का गाना, मैं तो कर रही रास्ता साफ आज घर राम जी आयेंगे.

राम शबरी से:- कहो भक्तों में श्रेष्ठ शबरी, चित्त तो प्रसन्न है.

शबरी राम से:- आहा, आईये महाराज, पधारिये बड़े सुकुमार. क्षमा के भण्डार हे त्यागं

पहले आसन लगाऊं, नहीं पहले चरण धुलाऊं, ओह भूल गई, पहले कुछ खिलाऊं, क्या क

राम शबरी से:- घबराओ नहीं देवी, हम तो केवल प्रेम के भूखे हैं. तुम काहे की चिन्ता करती हो.

शबरी राम से:- हाथ जोड़ कर:- क्षमा कीजिये महाराज, बड़ी भूल हुई, जल्दी में आपके पांव छू लिये. आपको स्नान करना पड़ेगा.

राम शबरी से:- क्यों क्या हो गया क्यों स्नान करना पड़ेगा मुझे.

शबरी राम से:- भगवन मेरे हाथ लगने से आपके वस्त्र अशुद्ध हो गये होंगे। और मेरी छाया पड़ने से लोग तुरन्त नहाते हैं.

दोहा: कोई मुझ नीच से पतला नहीं अपना मिलाता है.
मेरा रास्ता रोक कर सारा संसार जाता है.

राम शबरी से:- हे देवी, यह उनकी भूल है. मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान माना जाता है

दोहा: बड़पन धन कुटम्ब वैभव. सकल गुण और चतुराई.
यह कुछ नहीं काम आएगा यह भक्ति नहीं पाई.

शबरी राम से:- भगवन मैं नीच कुजाती. कबूदि और अज्ञान हूं. मेरे से दूर रहने में संसार का कल्याण है.

राम शबरी से:- ऐसा न कहो शबरी. जो धर्म मुख्य सिद्धान्त नहीं जानते हैं. वही जाती और भेद मानते हैं. जिसके मन में भक्ति और प्रेम का दरिया है बहता है. वह संसार में किसी को नीच नहीं कहता है. दोहा: है कोई चण्डाल या ऊंचा किसी का वंश है
आत्मा सब की उसी प्रमात्मा का अंश है.

शबरी राम से:- धन्य है भगवन आज आपने मेरा सारा भ्रम मिटा दिया, ज्ञान का महा दरिया बहा दिया.

राम शबरी से:- इसमें हैरानी की क्या बात है देवी. धर्म तो नीच को ऊंचा बनाता है.

दोहा: नीच है या ऊंच है. या दुष्ट हत्यारा है वह
जिसका प्यारा धर्म है. भगवान का प्यारा है वह.

शबरी राम से:- जय हो प्रभो की, जय हो संकट मोचन की.

राम शबरी से:- देवी. भूख लग रही है. यदि कुछ खाने की वस्तु हो तो लाओ.

राम शबरी से :- नहीं शबरी कुछ संकोच न कर. लाओ जो कुछ भी हो, तुरन्त लाओ.

शबरी राम से :- महाराज. मैंने झाड़ी के बेर तोड़ रखे हैं.

राम शबरी से :- ला बेर क्यों देर करे. यह बेर सुधा से बढ़कर हैं.

मक्खन मिश्री से भी अच्छे. ताकतवर मधुर मनोहर हैं.

शबरी राम से :- लीजिए भगवन.

राम शबरी से :- यह बेर तेरे बड़े निराले हैं. भक्ति रस के प्याले हैं.

शबरी राम से :- बेर देकर :. यह लिजिए महाराज यह बहुत मिठा है.

राम शबरी से :- बेर खा कर :. सुखे बेरों में जो मिला यहां

राज घरों में स्वाद कहां.

शबरी लक्ष्मण से :- यह बेर आप भी लीजिये महाराज.

लक्ष्मण बेर खाकर :- दोहा : महल के भोजन. जिन्हें भाते न थे सदभाव से.

आज वे ही खा रहे हैं. बेर सूखे चाव से.

राम लक्ष्मण से :- राधेश्याम :- लक्ष्मण तुमने खाया न बेर. यह देखो कैसा मिठा है.

पृथ्वी से लेकर आकाश तलक. जो कुछ है इससे फीका है.

मैंने भी बहुत खिलाए हैं. पर इनसे बढ़ कर सवाद नही.

सीता का परोसा भोजन भी. देता ईतना स्वाद नही.

लक्ष्मण राम से :- भैया अब सीता जी की भी सुधी लिजिए. बेरों का स्वाद छोड़िये और

माता जी को बन्धन से छुड़ाने की चिन्ता किजिये.

राम शबरी से :- भिलनी तू सच्ची भक्तिनी है. भक्तों में नहीं कमेता है.

क्या खान पान की बात यहां. भक्ति मार्ग अलबेला है.

राम लक्ष्मण से :- हां हां लक्ष्मण तुमने ठिक ही कहा अब यहां से चलना चाहिये.

शबरी राम से :- किस ओर जाना है भगवन. जरा सारा वृतांत सुनाओ.

राम शबरी से राधे :- हम दोनो भाई राम लक्ष्मण. बनवासी बन कर आये हैं.

सीता को अपने साथ-साथ. इस दण्डक वन में लाये थे.

दुर्दिन ने ऐसा कर डाला. उस ओर पिता का मरण हुआ.

इस और स्वर्ण मृग के मारण. कुटिया से सीताहरण हुआ.

दोहा: तू भी है बनवासनी, बतलादो कुछ राय:

कहा जाये किससे कहें. क्या हम करें उपाय;

शबरी राम से:- हे भगवन मैं बावरी क्या बतलाये राय.

पूछ रहे हैं तो आप. तो सुनिये एक उपाये.

राधेश्याम:- आगे है ऋष्यमूक पर्वत. सुग्रीव वहां पर रहता है.

अपने भाई के कारण वह. अत्यन्त कष्ट नित सहता है.

बस वहीं पधारे महाराज. सीता की सुधी मिल जाएगी.

जो कली यहां मुरझाई है. वह उसी जगह खिल जाएगी.

राम शबरी से:- हे देवी आपने बड़ी कृपा की. मुझे आप जैसे भक्तो पर नाज़ है.

परदा होना:- सुग्रीव राम मित्रता — शबरी सीन खत्म

सुग्रीव हनुमान से- राधेश्याम:- हनुमान देखना जाकर, दो पुरुष इधर को आते हैं।

दोनो ही तपवसी तेजस्वी नरसिंह समान सुजात हैं।

मातम शाप वश यद्यपि न यहां आ सकता है

मैं जब तक इस दुनिया में हूं, वह चैन नहीं पा सकता है

सम्भव है उसके गुप्त दूत. मेरा यो भेद लगते हैं.

छल से बल से यो कोशल से; वध करने मुझको आते हैं।

इसलिए प्रथम चतुराई से - सब पता ठिकाना लेना तुम-

फिर हो मेरा सन्देह सही, तो मुझे इशारा देना तुम

हनुमान सुग्रीव से- जैसी आज्ञा हो महाराज, मैं जाता हु और सारा भेद निकालकर आता

हनुमान राम - राधेश्याम- कठिन मार्ग है यहां का, वन अति गम्भीर

आप कौन श्रीमान हैं श्यामल गौर शरीर हैं

हनुमान का गाना, राम से तर्ज लावनी- कौन ग्राम क्या नाम देवता, कहां से आप पधारे हैं

ज़ाहिर में तो हो तपस्वी फिर शास्त्र क्यों धारे हैं

इधर तुम्हारी युवा अवस्था उधर फकीरी बाना है

कारण वन में फिरने का असल्ली कौन ठिकाना है

इधर जलाल अजब चेहरे का सुरत सकल सुहाना है
इधर हवाईयां उड़ रही मुँह पर इसका भेद न जाना है
उत्तम कुल और क्षत्री पन के बसब आप में सारे हैं, - कौन ग्राम क्या —

राम का गाना हनुमान से लावनी - क्या पूछोगे महाराज हम प्रारब्ध के मारे.

टेक: कहने पर तो हम दोनों दशरथ के राज दुलारे हैं.

लेकिन अब तो अरसे से दर पर अजार जमाना है.

बेघर. बेजर. बेधर. बेदर न कोई खास ठिकाना है.

परे काटते दिन बदर्दशी के. इसी तरह मर जाना है.

जगह-२ हम फिरे ढूंढते सीता का नहीं मिला ठिकाना है.

साथ मेरे यह छोटे भाई लक्ष्मण प्राण प्यारे हैं. - - - क्या पूछो - - - -

हनुमान :- कहो साफ हाल कंवर जी क्या बिपता तुम पर आई है.

हो गया ऐसा क्या कारण. घर से निकले दोनों भाई है.

असल हकीकत वजह उदासी. अब तलक नहीं बतलाई है.

हो रही हालत क्यों अबतर चहरे पर जर्दी छाई है.

पड़ी मुसीबत क्या तुम पर भारी. जो उड़े औसान तुम्हारे हैं - - - कौन ग्राम...

लक्ष्मण हनुमान से :- सचे :- राम पिता की आज्ञा से. बन भ्रमण करने आए थे.

इस सेवक और सीता जी को अपने संग लाए थे.

फिरते फिरते यों ही बनों में. नौ दस साल बिताए थे.

कुछ अरसे से पंचवटी में डेरे आन लगाए थे.

सीता को हर ले गया रावण ढूंढ-ढूंढ हम हारे हैं. क्या पूछोगे महाराज - - -

लक्ष्मण हनुमान से. माता सीता को ढूंढ रहे सुधी न अबतक पाई है.

धनियों के हैं सब मददगार. निर्धन का कौन सहाई है.

हम दोनों भाई राम लक्ष्मण. अब खेल रहे हैं प्राणों पर

कर देंगे दुष्ट हीन धरती. आशा है अपने बाणों पर

पुछा तो हमने प्रकट किया. अन्यथा न कहना ही अच्छा था

जग में तो सभी स्वार्थी है. कोई न कीसी की सुनता है.

हनुमान राम से :- श्री महाराज हम वानर है. ब्राह्मण शरीर का चोरवा है.

सुग्रीव यहीं पर रहता है. जो हम लोगो का राजा है.

जिस दुष्ट ने सीया हरी. हम उसका पिया जुआएंगे.

आज्ञा हो तो प्रभू की . पालन हम करते जाऐंगे.

बल अपना पूर्ण लगादेंगें. स्वामी का दुःख मिटाने पर.

बलिदान सुःखों का कर देंगे: सीता का पता लगाने पर.

जो काम आप करने आऐ है. उसमें हाथ बटाऐंगें.

धरती दुष्टों से हीन करें, इस प्रण पर प्राण लड़ाएगें.

हनुमान :- भगवन आप सुग्रीव के पास तसरीफ ले चलें तो आपकी बड़ी

मेहरबानी होगी। मेरा नाम हनुमान है। सुग्रीव किष्कंधा का आज कल निगहबान है

राम हनुमान से :- हां हां प्यारे हनुमान हमें क्या इन्कार है.

हनुमान राम से :- चलिये भगवन: (दोनों को कन्धों पर बैठाकर ले आना सुग्रीव के पास)

सुग्रीव राम से :- प्रणाम भगवन मेरे अहो भाग्य है. जो आपने दर्शन दिये.

हनुमान राम से सुग्रीव की ओर इशारा करके :- देखिये भगवन यही हमारे स्वामी सुग्रीव किशकंधा

नरेश है. जो अपने दुष्ट बाली के हाथों बड़ा कष्ट पारहे है. और नगर को छोड़

कर इस पर्वत पर जीवन बीता रहे है.

राम सुग्रीव से :- सुग्रीव जी मुझे आपके साथ सच्ची सहानुभूति है.

सुग्रीव हनुमान से :- प्यारे हनुमान मुझे भी तो परिचय कराइए. और निवास स्थान

भी बताएं हनुमान सुग्रीव से :- महाराज यह दोनों होनहार महाराज अयोध्यापति

दशरथ के राजकुमार है। जो कि आपकी तरह जमाने के हाथों सख्त बेजार

है (राम की ओर इशारा करके) इनका नाम शुभ रामचन्द्र जी है।

लक्ष्मण की ओर इशारा करके) इनका नाम लक्ष्मण जी पुकारते है।

103

सुग्रीव राम से (हाथ जोड़ कर) मेरा सौभाग्य है जो आपका दिदार हो गया है। और आज विलासक मझधार से पार हो गया। भगवन मुझे आप पूरी कहानी तो सुनाइये।

राम सुग्रीव से :- हे सुग्रीव मेरी सौतेली माता ने पिता जी से दो वचन पूरे करने का इकरार किया था। मेरी माता ने उन्हें पुरा करने के लिए मेरे लिए चौदह वर्ष का बनवास, और छोटे भाई भरत के लिए राजतिलक का इसरार किया था। मैंने उनका हुक्म खुशी से मन्जुर किया, इधर लक्ष्मण तथा मेरी पत्नि सीता मेरे साथ आई। तेरह साल से वनों में भ्रमण कर रहे थे। इक दिन दुष्ट रावण हमें धोखा दे गया। मेरी तथा लक्ष्मण के गैर हाजिरी में सीता को चुरा ले गया, उनकी तलाश में आवारा फिर रहे हैं।

सुग्रीव राम से - हां महाराज: मैं एक दिन इसी पर्वत पर बैठा हुआ था, मैं दुर्भाग्य से आंसु वहा रहा था, उसी समय एक विमान आकाश में उड़ा जा रहा था। जानकी जी बड़ा विलाप करती हुई जा रही थी, अपने आभूषण को नोच कर गिरा रही थी, उनमें से कुछ मैंने भी इक्टठे कर लिए थे, और सम्भाल कर अपने पास रख लिए थे।

राम सुग्रीव से - तो सुग्रीव वह आभूषण हमको भी दिखाओ।

सुग्रीव राम से - लिजिए महाराज इनकी पहचान कीजिए।

राम रामा बहरे तबील लक्ष्मण से :- भाई लक्ष्मण जरा तुम्ही पहचान कर

(1) कि यह सीता का गहना भी है या नहीं

देखले भानले खूब अच्छी तरह

कभी सीता ने पहना भी है या नहीं

जितने जेवर रतन और जड़ाऊ जड़े.

(2) हार माला व बिन्दी व जुगनी कड़े.

जो हैं सारे तुम्हारे अगाड़ी पड़े.

उसके माथे का ~~जेवर~~ महिना भी है या नहीं

३. मुझे जेवर यह सुग्रीव ने दिए

और कहा जाता था रावण उसके लिए

ताने सिता ने यहां तक दिए

कि तेरी माता बहिना भी है या नहीं

(५) मेरे होश हवाश ठिकाने नहीं

इसलिए यह जेवर पहचाने नहीं

अब जोहरी अयोध्या से आने नहीं

कुछ जवाब इसका देना भी है या नहीं

राम लक्ष्मण से नाटक- भैया मैं कैसा पागल हो गया हूं भैया इनका पहचानना भी मेरे लिए मुश्किल हो गया है, भैया लक्ष्मण तुम्हीं आगे सीता जी का कुण्डल है या नहीं

लक्ष्मण राम से कहते हैं:- मैंने तो चरण निहारे हैं. देखे माता के कान नहीं.

मैं तो बीधुओं का सेवक था. कुण्डल की मुझे पहचान नहीं.

नाथ सबूत यह अच्छा है. खड़कन है तीर कमानों में.

जलदी ही दिन वह आयेगा. कुण्डल होगा उन कानों में.

कुण्डल वाली बहही का. उस मानी हनन करने वाले.

अब सावधान हो कर सोना. आते है रण करने वाले.

सतवन्ती सीता की आहें. नाचेगी तेरे प्राणों पर.

दक्षिण दिशा को जानेवाले - अब मरना हमारे बाणों पर.

लक्ष्मण यशवन्त सिंह:- भैया मैं इन जेवरों को नहीं पहचान सकता. हां अगर पांव की पाजेब हो तो दीजिए. जब मैं प्रात: उठकर आता था. तो पांव में आकर शीश झुकाता था. और मुझे पांव का जेवर ही नजर आता था.

राम लक्ष्मण को पाजेब दिखाकर देखिए भैया इस पाजेब की पहचान कीजिये.

लक्ष्मण राम से:- हां भैया बिलासम सीता जी का गहना है.

~~इसका माथे का बैना भी है या नहीं॥~~

सुग्रीव लक्ष्मण से :- लक्ष्मण तुम धन्य हो. आपकी शर्म लज्जा का क्या कहना है. यह भी भाई है.

जिसने प्रेम भक्ति की मिशाल पैदा कर दिखाई है. मेरा वह कमीना भाई. जीसने अपने भाई की

स्त्री ही भाही. और मुझे जंगलों की खाक छान वाई है.

राम सुग्रीव से राधेश्याम :- जब से हम ऋषिमुक पर्वत पर आए तुमको उदास ही पाते है.

चीन्ता में डूबा देख तुम्हें. हम भी चीन्तित हो जाते है.

छीप कर पहाड़ पर रहने का. क्या गुप्त भेद क्या कारण है.

हम साथी सुख दुःखो के है. कह चलो तुम्हारा क्या प्रण है.

सुग्रीव राम से राधे :- मैं जिसके भय गाय बना. वह नाहर सा दुःखदाई है.

यद्यपी है मेरा भाई ही. पर भाई नही कसाई है.

छोटी छोटी सी बातों पर. रहता सर्वदा तना वह

है लिया राज पत्नि छिनी. अब मेरा काल बना वह.

जो भाई कभी चाहता था. वध पर अब तत्पर रहता है.

है आस्तीन का सांप वही. जग जिसको भुजा बल कहता है.

उसके डर से ही ऋषिमुक. में जान छुपा कर बैठा हुं

आ सकता नहीं शापवश वह. ~~इसी~~ इसलिये यहां पर रहता हुं.

इन सात ताड़ के वृक्षों को. जो एक बाण से ढायेगा.

ऋषि ने यह कह रखा है. वह विजय बाली पर पायेगा.

राम सुग्रीव से राधे :- बस अधिक नही सुन सकता मैं. अब भुज को दण्ड तोलती है.

मालूम मुझे यह होता है. उसके सिर मृत्यू बोलती है.

पि चुके शोणित अपना. अब उसका रक्त पिलायेंगे.

सब राज पाट सुग्रीव तुम्हे. हम सन्ध्या तक दिलवाएंगे.

यशवन्त सिंह :- हे सुग्रीव. जो वृक्ष मेरे बाण के सामने आएगा. सात नही सब के सब छिद जाएंगे.

तीर छोड़ना.

[illegible] राम से :- भगवन कमाल किया. एक ही बाण से सात वृक्षों को उखाड़ दिया.

सुग्रीव रामसे:- धन्य हो प्रभो. अब मुझे विश्वास हो गया. कि आप अवश्य ही बाली को मारेंगे. और मेरा कष्ट मिटायेंगे. महाराज उसे ब्रह्मा का वरदान है. कि जो उससे युद्ध करने सामने जायेगा. उसका आधा बल बाली में चला जायेगा। अच्छा महाराज मैं जाता हूं। किन्तु याद रखिये आप थोड़ी देर भी लगायेंगे तो मेरे प्राण पखेरू आकाश में उड़ जायेंगे.

राम सुग्रीवसे:- नहीं ऐसा नहीं होगा तुम सावधान होकर जावो.

बाली का दरबार

मन्त्री साथमें. RKM

बाली मन्त्रीसे:- मन्त्री वर. अब तो सुग्रीव कई दिनों से लापता है.

मन्त्री बालीसे-हाथजोड़कर.- महाराज उस पर रहम कर दिया जाये तो अच्छा है. क्योंकि वह भी रखता है.

बाली मन्त्रीसे:-क्रोधमें:- मालूम होता है तुमने उससे कुछ रिश्वत खाई है.

मन्त्री बालीसे:- नहीं महाराज वह आपका भाई है.

सुग्रीव बाली से ललकारकर:- जरा बाहर आ जावो भाई: आज मैं रोजन्र का झगड़ा मिटा या तो आपकी जान लूंगा. या अपना सिर कटवाऊंगा.

बाली सुग्रीवसे:-क्रोधमें:- जरा ठहर आज मैं तेरी अच्छी तरह से मरम्मत बनाऊंगा.

सुग्रीव बाली से क्रोधमें:- जरा मैदान में आवो. वही बैठे बातें न बनाओ.

बाली सुग्रीवसे मैदान में आकर:- मालूम होता है आज फिर तेरी खाल खुजलाई.

सुग्रीव बाली से:-क्रोधमें:- न मालूम मेरी खाल खुजला रही है. या तुम्हारी मौत तुम्हें बुला रही है.

दोनों की लड़ाई सुग्रीव का नीचे गिरना, बाली पांव रखकर। बतो मरदूद कर दूं एक के दो.

सुग्रीव मनसे बोलकर: व्यर्थ ही किसी के दम झांसो में आकर जान फसाई. उसे भले मानस ने तो अभी तलक अपनी सकल भी नहीं दिखाई. | उठ कर भाग जाना |
. . . .

बाली सुग्रीवसे:- वो बुजदिल कुछ शर्म आई. आखीर भागकर ही जान बचाई.

रामचन्द्र का कैम्प में सुग्रीव का पहुंचना। राम लक्ष्मण: हनुमान आदि.

सुग्रीव राम से रोके.-सांस भरकर:- हे राम तेरे कहने से. यह झगड़ा मोल लिया मैंने है काल समान बाली. बल तोल लिया मैंने.

आज्ञा पर राम तुम्हारी ही. मेरे बाजू लड़ते ही रहे.

तुम खड़े-२ तकते ही रहे. मुझ पर मुक्के पड़ते ही रहे.

राम सुग्रीव से राघो:- मैं सोच रहा था खड़ा-२ दोनों का बैर निकलने दूं

यह दोनों भाई भाई हैं. मिल जाएं तो मिलने दूं.

इतने पर भी मैं बार बार. धनुष पर बाण चढ़ाता था.

तुम दोनों का रूप एक. इसलिये धोखा खाता था.

अच्छा यह हार पहन जावो. जिससे मुझे पहचान रहे.

यह तुम पर कवच समान रहे. मुझे भी हार का ध्यान रहे.

सुग्रीव राम से:- हे भगवन देखना. अब भी लापरवाई से काम लिया तो. मुझको जान से मार देगा.

राम सुग्रीव से:- नहीं प्यारे सुग्रीव. वह मैदान में आते ही. अपनी जान गवाएगा. और अधिक

देर तक जीवत नही रहने पायेगा। (सुग्रीव का मैदाने जंग में जाना) परदा

बाली और तारा

R.K.M.

सुग्रीव बाली को ललकार कर:- बड़ा अच्छी बहादुरी दिखाई. कुछ न बन पड़ा तो घर में बैठ

जान छुपाई. जरा बाहर आ जावो भाई.

बाली सुग्रीव से:- अरे वो सौदाई. मालूम होता है. तेरी खाल फिर खुजलाई.

सुग्रीव बाली से:- बाहर भी आएगा या वहीं बैठ बातें बनाएगा.

बाली सुग्रीव से उठकर:- वो सैतान. तू इसी तरह जबान चलाएगा. या अपनी शरारत से

बाज आयेगा.

तारा बाली के [illegible] कर:- स्वामी जी जरा ठहर जाइये. और मेरी बिनती सुन लीजिये.

बाली तारा से गुस्से में:- अच्छा तो यही था. कि तुम चुप ही रहो. वरना जो कहना जल्दी से कहो.

तारा बाली से:- हे प्राणनाथ. सुग्रीव आपका भाई है. जिस माता का आपने दूध पिया है. उसी गोद में

उसने परवरिश पाई है. इसलिये उसका हक उसे दे दो. और इसी बैर भाव को दिल से निकाल दो.

बाली तारा से:- हां हां मैं समझ गया. दिल की आग ने तुम्हें मजबूर कर रखा है. और प्यारी

रोमा की सौतिया डाह ने तेरा सीना चकना चूर कर रखा है. इसलिये यह मसले सुना रही है.

तारा बाली से :- हे प्राणनाथ. आपके चरणों की सोगन्ध खाती हूं. और आपको विश्वास दिलाती हूं. कि आज लड़ाई आपके लिये खतरनाक है. अभी मुझे अंगद ने बताया है कि अयोध्या के दो राजकुमारों को अपना मित्र बनाया है. हे स्वामी इतनी मार खा कर सुग्रीव दोबारा लड़ाई में आया है. यह तो आप अच्छी तरह से सोच सकते है.

बाली तारा से क्रोध में :- बस बस. वो बेकुफ अधिक बक-बक न लगा. और मेरे आगे से हट जा. न मैं उनसे डरता हूं. न किसी मददगार का खौफ खाता हूं. वो जालिम तू मुझे कायर बनाना चाहती है. और मुझे घर में छुपना चाहती है. उन छोकरो की मेरे सामने क्या औकात है.

तारा का गाना बहरेतबील :- मैं हूं दासी तुम्हारी हे प्राण पती.

1\. जो सजा दो खुशी से गंवारा करू.
मान लो विनती मेरी इतनी मगर.
आप से अर्ज ये मैं दोबारा करू

2\. आप रोमों से बसके मोहब्बत करो
मैं योंही बैठी घर में गुजारा करू
आपके दर्शनों की तलबगार हूं
और सब झंझटों से किनारा करू.

3\. लोंडी बन कर रहना मुझे मन्जूर है
काम घर में तुम्हारे संवारा करू
हाथ जोडू. कहा मान लो मेरा
जो कहो मैं कहा तुम्हारा करू

बाली तारा से :- तुम मेरा दामन छोड़ दो.

तारा बाली से :- ईश्वर के वास्ते इस जिद को छोड़ दो.

बाली तारा से :- तुम्हारे कहने से मैं अपने आपको बरा नहीं लगा सकता.

तारा बाली से :- स्वामी मान जाओ. गया वक्त फिर हाथ नहीं आ सकता.

सुग्रीव, बाली से ललकार कर :- घर में बैठा बाते बनायेगा या फिर बाहर भी आयेगा.

बाली तारा से हाथ छुड़ाकर:- छोड़ छोड़ सुनती नहीं. वह किस तरह ललकार रहा है. (जाना)

तारा मुँह मुँह गिरकर: बाली से:- प्राण नाथ अब उसे और कोई उबार रहा है. (परदा)
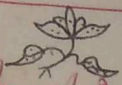
बाली और सुग्रीव युद्ध

K.K.H

बाली सुग्रीव से:- अरे बेशर्म, उस वक्त भाग कर जान बचाई. अब दुबारा लड़ाई में आया है तुझे शर्म नहीं आई.

सुग्रीव बाली से:- मुझे मेरा हक दे दो. बात गई आई. न भगवान लड़ाई.

बाली सुग्रीव से:- सिवाय अवारा गर्दी के कोई हक नहीं.

सुग्रीव बाली से:- तो आज तुम्हारी मौत में भी कोई शक नहीं.

बाली सुग्रीव से:- वो बुजदिल होशियार होजा.

सुग्रीव बाली से:- वो संगदिल तू भी मरने के लिये तैयार होजा.

"दोनों की लड़ाई" "बाली का सुग्रीव पर बैठ जाना" "राम का तीर मारना"

बाली राम से दुःख में:- अरे यह कौन अन्यायी, जिसने छुपकर चोट चलाई.

राम बाली से:- किसी का क्या दोष है तुम्हारी करनी तुम्हारे आगे आई.

बाली राम से:- सोचे:- हे कर सुग्रीव के प्यारे, तुमने ही उसे उबारा है.

इन वृक्षों के पीछे छुपकर. क्या मुझे तुम्हीं ने मारा है.

सच मुच मेरा भाग्य जागा. घर बैठे जगवन्दन आये है.

भाई के कारण मैंने भी .समदर्शी के दर्शन पाये है.

बैरी का छल वध करना, है शूरवीर का कर्म नहीं

छुपकर जो मेरे प्राण लिये, यह रघुवंशी का धर्म नहीं.

राम बाली से:- तूने वर ऐसा मांगा था. सामने न मारा जायेगा.

सन्मुख लड़ने वाले का बल. तुझमें खींच कर आ जाएगा.

वरदान किसी का नष्ट न करे. ऐसा न स्वभाव हमारा है.

बस इन्ही विचारों से हमने. यह बाण आड़ से मारा है.

बाली राम से:- सुग्रीव हमारा भाई है. भाई भाई है हम दोनों.

प्रभु की नजरों में चाहिये एक ही सम दोनों.

सुग्रीव मित्र. बालीशत्रु. यह कैसा न्याय विलक्षण है.

रघुकुल के नायक उत्तर दें. वध करने का क्या कारण है.

राम-बाली से राधे:- कन्या. बहन सुत की पत्नी. या छोटे भाई की नारी है.

जो इन्हें कुदृष्टी देखता है. वह वध के योग्य दुराचारी है.

सुग्रीव भाई की पत्नी को अपने घर डाला है.

इस कारण बाण मार कर. तुम्हें समाप्त कर डाला है.

जो मेरी बिछड़ी सीता को. परण करे मिलाने का

क्या मैं कुछ भी न प्रयत्न करूं. उसकी तकलीफ मिटाने का.

बाली राम से राधेश्याम:- निर्बल सुकंठ से यह आशा. वह सीता सुधी से काम करे.

गीदड़ में शक्ति कहां है. यह जो सुरो से संग्राम करे.

हां प्रभू मुझसे पहले मिलते. तो मैं अवश्य दिखला देता.

अग्नि की साक्षी फिर होती. सीता से प्रथम मिला देता.

मैं उसे खूब जानता हूं. जो उसे चुराकर भागा है.

मैंने उस तुच्छ अनाड़ी को. छः मास कांख में दाबा है.

अच्छा जो बीती बीत गई. अब बकने से क्या होता है.

अब तो मुझ सा भाग जगा. यह बाली सदा को सोता है. बेहोश हो जाना

राम बाली से राधे:- अब तक न जानते थे हम. तु ऐसा है तूं इतना है

अब बातें कुछ हो जाने पर समझे हैं. तू कितना है.

जो कुछ इच्छा हो मांगो बाली. बतला तुमको क्या वर दें.

यदि मरना नहीं चाहते हो. तो तुम्हें अभी जीन्दा कर दें.

बालीराम से:- अच्छा भगवन जो कुछ हो गुजरा. अब उसका क्या अफसोस है. मुझे वरलेने की कोई

जरूरत नहीं. जब आप सन्मुख है. मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं. अब मुझे हर तरह से सन्तोष है.

(सामने देखकर) मेरी प्राणपती तारा आ रही है. और अंगद को भी ला रही है. (बेहोश हो जाना)

तारा बाली से रोकर:- हाय प्राण नाथ तुम कौन सी नींद में सो गये.

तारा का गाना बाली से:- मेरे स्वामी सीर के ताज. मुख से बोलो तो सही. (टेक:...)

1. जीसके बलसे कांपते धरती और आकाश।
पड़ा चरण पर ले रहा लम्बे सांस,, मुख से बोलो……

2. छोड़ मुझे मझदार में सो रहे लम्बे तान
क्यों होती ये दुर्दशा जो लेते कहना मान मुख से बोलो……

3. जीसको मुझे खोफ था। वही हुआ आखीर
अंगद मेरे लाल की कौन बधाऐं धीर। मुख से……

4. क्या बीगड़ा सुग्रीव का फुटे मेरे भाग
एक एक आन की मान में हो गया नष्ट सुहाग। मुख से बोलो……

5. कहना मेरा माना नही। बहुत मचाया शोर।
होनी तो अपने बल चली। चला न कीसी का जोर मुख से……

तारा का [illegible]:- हाय मेरे सरदार, आह मेरे प्राणों के आधार, आप क्यों मुझसे क्यों मुख मोड़ जाते हो। मुझे अपनी जिन्दगी की परवाह नही जीस तरह हो सका निभाऊंगी। नहीं तो आपके साथ स्वर्ग की राह लुंगी।

राम तारा से: देवी, यदि दुःख तेरे लिये बड़ा सख्त है। ऐसा कौन है जीसने तुझ पर तरस न आता हो। हे देवी अब तो सबर करने में ही भलाई है। अंगद तथा आपकी इसी में भलाई है। बाली के साथ बस आपका इतना ही सम्बन्ध था।

तारा राम से, क्रोध में:- तु अपने आप में धर्मात्मा जरूर हो। मगर मेरी आखों से थोड़ी दूर रहो। अरे बेरहम अन्यायी तुझको बीना कसूर हत्या करते गैरत नही आई।

बाली तारा से आंखे खोलकर।- आह प्यारी तारा। तुमने समझाने में बहुत मगज मारा। अफसोस मैने तेरी नशीहत का कोई फायदा नही उठाया, जीसका यह नतीजा सामने आया। आह प्यारी तारा सब्र करो। भगवान परतो तुम्हारा मजूल गीला है।

बाली सुग्रीव से।- मेरे प्यारे भाई। तुमको मुंह दिखाने को मन नहीं चाहता। मगर तेरे सीवा मुझे और कोई नजर नही आता। जीसको अंगद का हाथ पकड़ाऊं। मुझे उमेद है। कि तुम दिल से बैर भाव नीकाल कर मेरी दुस्मनी का अंगद पर बोझ नहीं डालोगे यह जैसा बेटा मेरा है। वैसा ही आपका है। यह राक्षसों की लड़ाई में वह हाथ दिखायेगा। जीससे छटी का दुध याद आ जायेगा।

सुग्रीव बालीसे रोकर:- भैया मैंने बड़ा उत्पात किया. जो चार दिन की जिन्दगी के लिये भाई का घात किया. भाई मैं इस राज को लेकर क्या सुःख पाऊंगा. और परमेश्वर को क्या मुंह दिखाऊंगा. भैया यह काम आप अंगद के सुप्रद कर दीजिये. और मुझे साथ चलने की आज्ञा दीजिये.

बाली सुग्रीवसे:- भैया जरा तबीयत को सम्भालिये. ऐसे कायर पन की बाते मुंह न निकालिये. यदि ऐसे कायरपन दिखायेगा तो रामजी का वायदा कैसे निभावोगे. प्यारे भाई मेरी घड़ी बहुत नजदीक आरही है. और सिरहाने खड़ी मौत मुझे बुला रही है. इसलिये मेरे आन्तिम संस्कार की तैयारी करो। (किजमी लेकर) हे प्रभू मुझ पापी का कल्याण करो.

अंगद बालीसे रोकर:- हाय पीता जी. आप किसके सहारे छोड़ गये, और हम से क्यों मुंह मोड़ गये.

तारा:- हे प्राण नाथ मुझे भी साथ ले चलो रोना :। राम तारा से:- हे देवी अब सबर करो. अब तुम्हारा फजुल रोना है. अब तो बाली को जिन्दा नही होना है. जैसा बाली ने क्रम किया वैसा ही भोग लिया है।

बाली तारा सीन समाप्त

सुग्रीव को राजतिलक

पम्पापुर

रामलक्ष्मणसे:- भाई लक्ष्मण अब किश्कन्धा नगरी का राज्य राजा के बीना सुना पड़ा है. इसलिये तुम जाकर सुग्रीव को किष्ठकन्धा का ताज पहनावो!

हनुमान, राम से:- महाराज राज्य भिषेक का कार्य आपके हाथोंसे होना चाहिये, बानर जाती की यही इच्छा है

राम हनुमानसे:- हनुमान जी मैं पिता की आज्ञा और अपनी प्रतीज्ञा के कारण चौदह वर्ष से पहले नगरी में प्रवेश नही कर सकता. इसलिये तुम लक्ष्मण जी को ही ले जावो और सारा काम विधी पूर्वक कर आवो.

सुग्रीव राम से, भगवन पहले जानकी जी का पता लगाना चाहिये. यह काम तो बाद में भी होते रहेंगे.

राम सुग्रीवसे:- नहीं सुग्रीव जी ऐसे सुभ कार्य में विलम नही होना चाहिये. इसके अलावा अब वर्षा ऋतु शुरू होने वाली है. इस ऋतु में जानकी जी की खोज करना भी मुश्कील है.

हनुमान राम से:- धन्य है. दयालु भगवान आपकी उदारता धन्य है.

दोहा: दे दिया प्रेमी को सब कुछ. पास रखा कुछ नही
भक्त की चीन्ता है केवल. अपनी चीन्ता कुछ नही.

राम लक्ष्मण से:- भैया लक्ष्मण तुम जल्दी जावो. और अधिक देर न लगाओ. क्यों कि किष्ठकन्धा तख्त बिलकुल खाली पड़ा है :। लक्ष्मण राम से:- जैसी आज्ञा हो भ्राता जी. (प:

सुग्रीव को राज देना

अंगद, लक्ष्मण, सुग्रीव. हनुमान:- बोलो सुग्रीव महाराज जय :

राम लक्ष्मण से: राधे:- ऐ लक्ष्मण वर्षा ऋतु बीत गई. अब शुद्ध शरद ऋतु आई है.

मैं बड़ा अभागा हूं. अब तक न सुधी सीता की पाई है.

कपि पति का मुझे भरोसा था. वह भी तो मुझ से दूर हुआ.

माया की महा तरंगों में. वचनों का बेड़ा चूर हुआ.

आई है सच्ची बात यही. पदवी सब कुछ कर सकती है.

सुग्रीव नहीं दोषी इसमें. यह सब दौलत की खूबी है.

जब तक मनुष्य कंगाल रहे. तब तक उत्पात नहीं करता है.

जब वही धनी हो जाता है तो. मुँह से बात नहीं करता है.

लक्ष्मण राम से राधे:- भैया तुम आराम करो मैं पम्पा पुर में जाता हूं

धन मदवाले मतवाले को. अभी बान्ध कर लाता हूं.

भरपूर उसे शिक्षा दूंगा. जो झूठा बन कर बैठा है.

सब गर्व मिटाऊंगा उसका. जो राजा बनकर बैठा है.

लक्ष्मण राम से:- अग्नी बाण चढ़ा कर। धन्य हो प्रभो। परन्तु आज्ञा हो तो पहले उस कपटी मित को ठिकाने लगाऊं. जिसने आज तक मुंह तक नहीं दिखाया. वचन देकर भी जानकी जी का पता नहीं लगाया. मैं पर गांदुर को एक बाण से समुन्द्र में फेंक डालूंगा.

राम लक्ष्मण से:- भैया ऐसा कदापी नहीं होना चाहिये. जिसे एक बार मित्र बना लिया उसे कभी नहीं खोना चाहिये.

लक्ष्मण राम से:- गुस्से से:- परन्तु भगवन नीच लोग नरमी से नहीं माना करते. लातों के भूत बातों से नहीं माना करते।

राम, लक्ष्मण से:- अच्छा तो भैया तुम चले जावो, आदर सहित सुग्रीव को ले आवो.

लक्ष्मण, राम से:- जैसी आज्ञा हो भ्राता जी. लक्ष्मण का चले जाना.

सुग्रीव अंगद नल, तारा, हनुमान की वार्ता.

हनुमान सुग्रीव से:- महाराज वर्षा ऋतु बीत गई. किन्तु जो आपने वायदा किया था वह भी याद है.

सुग्रीव हनुमान से:- ओह भूल गया. बड़ा अपराध हुआ. इस विषय भोगों ने मेरा सात ज्ञान हर लिया.

और क. सुग्रीव से:- अनर्थ हो गया लक्ष्मण जी महान क्रोध में किष्किन्धा पधार रहे हैं.

निकाल कर मैं:- ओह! देव अब क्या होगा, आज मेरी रक्षा किस तरह होगी.

राक्षसों की लड़ाई महाराज अब समय नष्ट न करें. उन्हें शान्त करने का उपाय किया जाये.

सुग्रीव हनुमान से :- अच्छा प्यारे हनुमान तुम शीघ्र चले जावो और विनय याचना के साथ उन्हें यहां बुला लावो।

हनुमान, सुग्रीव से :- जैसी आज्ञा हो महाराज. (परदा) (हनुमान का जाना)

हनुमान लक्ष्मण से :- प्रणाम महाराज,,

लक्ष्मण हनुमान से :- खुश रहो प्यारे हनुमान,,

हनुमान लक्ष्मण से :- महाराज चल कर दरबार सुशोभित कीजिए!

लक्ष्मण, हनुमान से :- मैं दरबार में पधारने के लिये तो यहां आया हूं। चलो,,

परदा खुलना [सुग्रीव, अंगद, जामन्त, बैठे हैं सुग्रीव के पास लक्ष्मण का पहुंचना]

सुग्रीव, लक्ष्मण के पांव में गीरकर :- ~~अच्छा~~ मा क्षमा कीजिये महाराज मुझसे अपराध हुआ.

लक्ष्मण सुग्रीव से क्रोध में :- हे सुग्रीव तुमने मित्र बनकर हमे धोखा दिया है. जानते हो विश्वास घात का क्या फल होता है।

सुग्रीव लक्ष्मण से :- राधे :- माया के चक्कर में पड़ कर. मेरी दुर्दशा हो गई.

मैं हुआ हूं पागल सा गति मति सम्पूर्ण खो गई.

नारी पर जो मोहित न हुआ. दुर्लभ है ऐसा नर जग में.

बच गया लोभ फांसी से जो. है वही तसस्वीर जग में.

लक्ष्मण सुग्रीव से :- अच्छा तो चलो तुम्हे भगवन बुलाते है.

सुग्रीव लक्ष्मण से :- चलिये लक्ष्मण जी,

राम का आश्रम
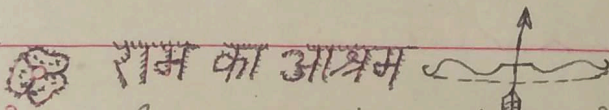
सुग्रीव राम से राधे :- रघुवीर बाण भी रखा है. अपराधी भी चरणों में है.

चाहे मारो या क्षमा करो. निर्णय प्रभु के हाथों में है.

राम सुग्रीव से राधे :- अब मत रोवो अब मत रुलाओ. मेरे तो परम सखा हो तुम.

मुझ रोगी की औसद हो. मुझ विरह की आशा हो तुम

जीसका सच्चा प्यारा है. वह उसे प्राण सम होता है.

दर्शन चाहे वर्षो में हो. अनुराग कम नही होता है.

पिछली बातों को जाने दो. आगे का ध्यान धरो भाई.

सीता जिससे पता लगे. अब वह काम करो आर्ह.

हनुमान सुग्रीव से:- महाराज बहुत से बानर रिछ तसरीफ ला रहे है।

राम हनुमान से:- कुच करने से पहले इतमिनान कर लिया जाये तो अच्छा है.

सुग्रीव हनुमान से:- हे प्यारे हनुमान दुसरी दिशाओं में तो और दुत भेज दिये जायेंगे मगर लंका के लिये खाश तुम्हे ताईनात करता हुं - अंगद तथा जामंत को तुम्हारे साथ करता हुं क्योंकि तुम होशियार हो: और लंका के गली कुंचो से वाकीफ कार हो.

राम सुग्रीव से:- हे सुग्रीव आपने मेरे मुंह की बात छीनी है. बेशक हनुमान जी इस कदर तकलीफ करे तो हमारी कामयाबी यकिनी है.

हनुमान राम से: हाथ जोड़कर:- भगवन जिसे आप तकलीफ कह रहे है. वह मेरे लिये बिल्कुल आसान काम है. फिर भी हे भगवन माता सीता मुझे कैसे पहचानेगी. और मेरी बातों का कैसे यकीन मानेगी. इसलिए आप इतनी मेहरबानी कीजिए. और मुझे कोई खास निशानी दिजिये. जिसको उन्हे पहचान दो. ताकी मेरी तरफ से उन्हे पुरा इतमीनान हो.

राम [illegible] महरबानी हनुमान से:- हे पवन सुत दिलावर हनुमान जी

आप ईमदाद इतनी हमारी करे.

(1)

लिजिये यह अंगूठी निसानी मेरी.

आप चलने की जल्दी तैयारी करे.

(२) लिजिये साथ सम्मान अपना सभी

और कबजे मे खंजर कटारी करे.

सीधे लंका में जाना जरुरी नहीं.

बस यहीं से तलाश आप जारी करे.

(३) जानकी जी को कहना मेरी ओर से

कि हरगीज न वह आहो मारे ~~करे~~.

अब मुसीबत का होने को है खातमा

चार दिन तक जरा इन्तजारी करे.

हनुमान राम से कहते है:- साथ मेरे है आशीर्वाद आपका

तो मैं लंका को जड़ से हिला कर दूं

(1)
झुलस दूं फूंक दूं आन की आन में

खाक मिट्टी में उसको मिला कर दूं

(2) जो हुकम हो तो रावण के कुनबे सहित

मैं लगा आग जिन्दा जला कर दूं।

जो कहो तो पकड़ कर लाऊं जिन्दा यहां

या उसको वहीं पर सुला कर दूं

ध्यान मारूंगा आकाश पाताल तक

(3)
सारी तदबीर अपनी चला कर दूं

जान में जान है जब तक यह वक्त है

मैं पता जानकी जी का ला कर दूं।

राम हनुमान से राघो :- सब प्रकार उसकी कुशल पूछ फिर मेरी द[illegible] बता देना।

निज दल बल का परिचय देकर। धीरज भी उसे बन्धा देना

उसकी मणी मुन्दरी है। यह बजरंग उसे देते आना

मेरे लिये भी निशानी लौटते समय लेते आना।

हनुमान राम से, पांव में गिरकर :- भगवन आप कुछ फिकर न करें। मुझे आप आशीर्वाद देकर

कृतार्थ करें। अंगद, जामवन्त, हनुमान तीनों बारी-बारी प्रणाम करना ।।।

राम का गाना सबसे :- जाओ वीरो रणधीरो सीताजी की खोजन को। टेक...

(1) कोई पूरब, कोई पश्चिम, कोई ~~[illegible]~~ उत्तर कोई दक्षिण को।

काम राम का नाम श्याम का, नाम जाती का रखन को जाओ वीरो.....

(2) इधर उधर को जीधर तीधर को। पहाड़ी बस्ती [illegible] को

तन मन धन से प्राण वचनसे प्रभू की आज्ञा पालन को। जा

(राम लक्ष्मण सुग्रीव परदे में) सीन समाप्त।

सागर तट

अंगद जामवन्त से :- अहा वन नदी पर्वत और गुफाओं में बहुत जगह ढूंढा, परन्तु कहीं भी पता नहीं लगा। अब कौन मुंह लेकर लौट कर जायें, इससे तो अच्छा है अपने प्राण यहीं

जामवन्त अंगद से:- ठीक है सुग्रीव ने जो समय दिया था. वह समाप्त होने को आया है. परन्तु जानकी जी का कहीं पता नहीं पाया है. परदा खुलना सम्पाती का बोलना.

सम्पाती सब से राधे:- वर्षों से भूखा प्यासा हूं. भर पेट न भोजन खाया है.

बिधना ने आज अनुग्रह कर. सब एकसाथ भिजवाया है.

दो चार निमिष में ही आकर. दस बीस ग्रास कर जाता हूं.

भागो मत बैठे रहो वहीं. तुम सबको को आकर खाता हूं.

जामवन्त हनुमान से:- प्यारे हनुमान जी सुनो. कश्यप ऋषि की विनता नामक स्त्री के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे. एक अरुन दूसरा गरुड़. फिर अरुन के दो पुत्र हुए थे. एक सम्पाती दूसरा जटायु. एक दिन वह दोनों भाई सूर्य को पकड़ने के लिए उसकी ओर उड़े. बड़ी देर तक उड़ने पर. सूर्य की गर्मी से घबरा कर जटायु तो लौट आया. किन्तु सम्पाती उड़ता ही गया. अन्त में सम्पाती के पंख जल गये. और सम्पाती मुर्छित होकर महेन्द्रगीरी पर्वत पर आ गीरा. उस पर्वत पर चन्द्रऋषि तप करते थे. सम्पाती उनकी सेवा की. फिर चन्द्र ऋषि ने उन्हे वरदान दिया कि जानकी जी खोज करते वानर जब इधर पहुचेगें. तो तेरे पंख निकल आयेगें. उसी समय से यह पंखहिन पड़ा है. और अपना जीवन बीता रहा है.

हनुमान गन से:- धन्य है जटायु महाराज तुम धन्य हो तुमने रामचन्द्र जी की सेवा में अपने प्राण लगा दिए।

सम्पाती हनुमान से:- हे वानरो क्या कहा जटायु ने प्राण गवां दिए सारा हाल सुनाओ/ हनुमान सम्पाती से:- राधेश्याम, कौशल की रानी सीता का, जब दण्डक वन में हरण हुआ,

तब उन्ही दिनो उपकार हेतु वह गीद्धराज हरिशरण हुआ।

जीसने सीता का हरण किया उसने ही उसे मारा है,

दण्डक वन का वही अनु है भाई शत्रु तुम्हारा है"

हम सब तलाश में हैं उसकी तुम भी उसे तलाश करो,

भाई का बदला लेना हो तो उस बैरी का नाश करो"

गरों से, राधेश्याम:- बरता है सज्य वहां रावण वह ही सीता ~~का~~ हर्ता है,

हनुमान राम र अपने अशोक बाग में उसने, उस महासती को रखा है"

सौ योजन सिन्धु लांग कर, जो बलवीर वहां पर जाऐगा,

वह ही सीता सुधि लाऐगा, वह ही यह यश कमाऐगा,,

अंगद हनुमान से,, युवराज कहा कर मौन रहू तो मुझ पर लांछन आता है,

इस कारण सिन्धु लांघने को यह अंगद बालक जाता है,,

उस पार पहुच ही जाऊँगा, यह तो मेरा द्रढ निश्चय है,

लेकिन इस पार लौटने में थोड़ा सा मुझको संशय है,,

लाघुंगा सिन्धु इधर से तो जगदम्बा सम्मुख आऐगी,

वे अपना बल देकर मुझको लंका नगरी पहुचाऐगी,,

पर सुधि लेकर जब लौटूंगा तो पीठ उधर हो जाऐगी,

मेरी वह महाशक्ति पुजा उस समय न कुछ कर पाऐगी,,

जामवंत अंगद से राधेश्याम:— हम तुम सब लोग अधूरे हैं पुरा वह राम दुलारा है,

बाजी उसके ही हाथों दो वही मल्लाह हमारा है,,

अंगद हनुमान से, राधेश्याम:— हे पवन पुत्र अंजनी लाल अपनी तन्द्रा को त्यागो तुम,

सम्पुर्ण शक्ति के साथ-साथ हे राम दुलारे जागो तुम,,

हे काम रूप हे शंकर रूप बजरंगी नाम तुम्हारा है,

अपने जीवन को याद करो यह जंगी काम तुम्हारा है,,

सुरज को तुमने ग्रास किया शैलों को तुमने तोड़ा है,

जीस बल से ऐसे काम किये वह बल कहां रख छोड़ा है,,

रणधीर उठो बलवीर उठो, अब लाज तुम्हारे हाथों है,

हे कृपा धाम के कृपा पात्र यह काज तुम्हारे हाथों है,,

हनुमान अंगद से छाद में,:— ओ अंगद क्या कहते हो, जा कर बादल पर गरजु मैं,

पहले लंकेश्वर को मारू या लंका उलटी करदु मैं,,

खारे जल की धारा को, लांघू या अभी लील हो जाऊं,

जीस जगह लंका पुरी है वह गीरी कुट ही ले आऊं,,

सौगन्ध पूर्वक कहता हूं जो कहता हूँ दिखलाऊँगा,

अपनी माता सीता को, अब राघव से अभी मिलाऊँगा,,

अंगद हनुमान से, राधेश्याम:- तुम केवल लंका में जाकर माता का पता लगा आवो,

आवश्यक समझो तो कुछ बल रावण को भी दिखला आवो,,

हम यहीं मिलेंगे वीर तुम्हें, अति शीघ्र कार्य यह कर आवो,

शुभ आशिश साथ तुम्हारे है हे बजरंगी बली जावो, जावो,,

हनुमान जामन्त से:- राधेश्याम, मैं जब तक लौट नहीं आवूं, तब तलक यहीं ठहरे रहना

श्रीराम नाम का किर्तन कर आशीश मुझे देते रहना,, (बोलो श्री रामचन्द्र की जय,,)

पर्दा गिर, शुरू

लंका का सीन

लंकनी पहरे पर:

लंकनी हनुमान से:- अरे वो निडर वानर ऐसा निर्भय होकर कहां जाता है

क्या तुझे ज्ञात नहीं तेरे सामने काल बैठा है!

दोहा:- जाता है किस ठौर, बता क्या मौत तेरी यहां लाई है,

खौफ नहीं तुझको मेरा, क्या जी मैं तेरे समाई है,,

नाम लंकनी है मेरा लंका का पहरा देती हूं,

जो लंका में वानर आता है भेट मैं उसकी लेती हूँ,,

आकर तूने संकट में क्यों अपनी जान फसाई है,

पांव बढ़ाया आगे को क्यों मरता बीन आई है,,

हनुमान लंकनी से, राधेश्याम:- क्या बोली दुष्ट चण्डालनी, शामत तेरी आई है,

हनुमान को नहीं जानती इतनी राड़ बढ़ाई है,,

राह खड़ी जो रोक रही क्या मरना ही चाहती है,

देख गदा हमारी क्यों, इतनी इतराई है,,

लंकनी हनुमान से, गरज कर:- अरे मुर्ख ठहर अभी आती हूं और दांतो

से चबा कर तेरा चूरण बनाती हूँ

लंकनी का मुंह फाड़ कर आना:- हनुमान का घुंसा मारना,, लंकनी का गीरना

120

लंकनी हनुमान से :- महाराज तुम भगवान राम जी के दुत तो नहीं,

हनुमान लंकनी से :- हां हां मैं उन्ही का दुत हूं अब रास्ता छोड़ कर प्राण बचाली है या परलोक जाना चाहती है,

लंकनी हनुमान से :- हाथ जोड़ कर) बस महाराज अब दुसरा घुसा मत मारना नहीं तो मेरे प्राण पखेरू उड़ जाएंगे, हां मुझे ब्रमा जी का वरदान याद आया, जो उन्होंने रावण को वरदान देकर लौटती बार मुझे कहा था जब तूं एक वानर के घुसे की मार खा कर विकल हो जाएगी तभी राक्षसों की आखीरी घड़ी आएगी।

हनुमान लंकनी से :- अच्छा यदि बात है तो मार्ग से हट जा रास्ते में रोड़ा न अटका, लंकनी हनुमान से, राधेश्याम, :- हे महावीर हे महावीर रघुवर का तुझ पर हाथ रहे, जा के खटके अब लंका में जय और विजय साथ रहे,,

लंकनी सीन समाप्त : परदा :: | हनुमान परदे से बाहर

हनुमान मन में :- सभी बाग बगीचे छान मारे परन्तु जानकी जी का पता नहीं मिला, ए विधाता यह किस महात्मा का मकान है, कोन एसा भक्त है, जो आधी रात के समय भगवान का नाम ले रहा है बस तो अब इसी ओर जाता हूं शायद यहीं से जानकी जी का सुराग मिले,

भक्त विभिक्षण का भवन

हनुमान विभिक्षण से :- राधेश्याम,, हे विप्र आपको देख देख, यह हृदय आप ही खींचता है, है निश्चय आप भक्त कोई, यह मुझे दिखाई पड़ता है,,

विभिक्षण हनुमान से, राधेश्याम, बड़ भागी करने आए हो क्या मुझे मुढ निसाचर को, हे महाराज श्री चरणों से करोगे पवित्र मेरे द्वार को,,

हनुमान विभिक्षण से, राधेश्याम, अचरज है कागों के दल में यह हंस रूप दर्शन कैसा, ~~यह लक्षगलत है (असुरों में कैसे भक्त राज) मन्त~~ कांटो से भरे करीलों में, फूल गुलाब का चन्दन कैसा,,

असुरों में कैसे भक्त राज तुम जीवन यापन करते हो,
रावण की सेवा में रह कर, श्री राम भजन तुम करते हो,,

विभिषण हनुमान से, राधे: जैसे जुबान रहती हैं बतीस नुकिले दांतो में,
रहता है दास विभिषण भी उसी प्रकार राक्षसों में,,
प्यारे भक्त आप कौन हैं, और किस तरह लंका में तसरीफ लाए हैं सारा हाल सुनावो!

हनुमान विभिषण से, राधे: प्यारे विभिषण मैं किष्किन्धा का हनुमान हूं वानर हूँ,
सीता सुधि लेने आया हूं, श्री रामचन्द्र का सेवक हूँ,,

विभिषण हनुमान से:- क्या मुझ अनाथ निशाचर के भी, रघुनाथ बनेंगे नाथ कभी,
क्या मुझसे अधर्म दास को भी रखेंगे राघव साथ कभी,,
सीता की सुधि पिछे लेना, पहले मेरी सुधी लो भाई,
जीन चरणों में रह रहे आप, मुझको भी पहुँचा दो भाई,,

हनुमान विभिषण से:- राधे: प्यारे भगवान दया निधि हैं, अपने को नित अपनाते हैं,
जो जन उनकी शरणागत हो छाती से उसे लगाते हैं,,
उनसे मिलने की राह यही विशवासी हो जावो भईया,
अपना सब अर्पण कर उनके ही हो जावो भईया,,
हो सकता है वह दिन आए जब भाग्य इस तरह चमका है,
सिर पर राम विभिषण के चरणों में सारी लंका है,

विभिषण हनुमान से, राधे: अच्छा अब जीस कारण आए हो, उस सेवा में जावो भाई,
है माता अशोक वाटिका में, सुधी उनकी ले आवो भाई,,
वे माता हैं तुम भ्राता हो दोनों का तुच्छ दास हूँ मैं,
निर्भय हो कर विचरो लंकापुर में, छाया की तरह पास हूँ मैं,, "प्रणाम भ्राता जी चले जाना,,
"परदा, विभिषण और हनुमान"

अशोक वाटिका

पहरेदार, हनुमान से:- ललकार, खबरदार इस तरह मुँह उठाए कहां जाता है,
क्या तुझे अपनी जान प्यारी नहीं!

हनुमान पहरेदार से:- भाई जीस काम के लिए आया हूं उसके सामने
जान कोई चीज नहीं,

128

पहरेदार, हनुमान से: अरे मुर्ख तूं खफ कान का तो मीज नहीं.

हनुमान, पहरेदार से: अरे भले मानस तुम्हे तो बोलने की भी तमीज नहीं.

पहरेदार, हनुमान से: मालुम होता है, आज तूं मौत का भाव पूछने आया है.

हनुमान, पहरेदार से: भाई मैं पहले ही कह चुका हूं। जीस काम का बीड़ा उठाया है. जीव एक दम भुलाया है।

पहरेदार, हनुमान से: आखिर हमे भी पता हो वह कौन सा काम है.

हनुमान, पहरेदार से: मुझे सीता जी से मिलना है. यही मेरा आने का परिणाम है.

पहरेदार, हनुमान से: क्रोधः बहुत ठीक है. तेरे लिये साधारण सा काम है. परन्तु मेरे लिये मौत का पैगाम है.

हनुमान, पहरेदार से: भला तुम्हारी मौत किस तरह से आयेगी.

पहरेदार, हनुमान से: बीगड़कर:] अरे मूर्ख अगर तुने सीताजी से बातकर ली. तो मेरी मौत मे क्या फरक है.

हनुमान बेफरवाही से बाग मे जाते हुऐ । पहरेदार, हनुमान से: मुका मारकर. इस तरह मुंह उठाये कहां जाता है जैसे बाबा जी का बाग है।

हनुमान, पहरेदार से मुका मारकर: - यहीं पड़ा रहो कम्बख्त तेरा आखिरी यही ईलाज है. लड़ाई [illegible]

हनुमान मन में: अब रात्री भी बहुत व्यतीत हो चुकी है. दिन निकलने में अभी कुछ ही घण्टे बाकी है. अशोक वाटिका का कौना-२ छान मारा. परन्तु माता सीता का कहीं भी पता नहीं चला. अब उधर और देखता हूं। हनुमान का एक तरफ हो जाना) K.R. Hodkhasia

रावण की सवारी

रावण — चन पालकी

रावण सीता से: प्यारी सीता मुझे आशा है: कि आपने उच्च नीच को सोचकर कोई नेक नतीजा निकाला होगा.

सीता रावण से दुःख. - वो अधर्मी तेरा न जाने यहां से कब मुंह काला होगा.

रावण, सीता से: प्यारी मेरी दशा पर ईश्वर के वास्ते कुछ तो रहम कर.

सीता रावण से: - वो जालिम कुछ तो ईश्वर का भय कर.

रावण सीता से: - अरी आखीर कब तक अपनी हट निभायेगी.

सीता रावण से: जब तक यह आत्मा शरीर से निकल न जायेगी.

रावण, सीता से: प्यारी जीनकी ओर तेरा ध्यान है. उनके फरिसते भी यहां कदम नहीं धर सकते.

सीता, रावण से: अगर यहां कदम नहीं धर सकते तो स्वर्ग का रास्ता आप बन्द नहीं कर सकते.

रावण सीता से क्रोध: - आखीर मुझे कठोरता से ही काम लेना पड़ेगा.

सीता, रावण से :- तेरी तो ताकत ही क्या है. ईश्वर भी मेरे इस ख्याल को नही बदल सकता.

रावण सीता से प्रेम से :- सीता तु फूल है. मगर तुझमे बू नही :

सीता, रावण से :- तु विद्वान है. मगर तुझमें इन्सानियत की खुसबू नही.

रावण सीता से क्रोध में :- बस बस ओ बद लगाम. जरा अपनी जबान को थाम.

सीता रावण से :- दर्द में :- मैने अपनी जबान को बहुत सम्भाला. और आज तक अपने मुंह से कोई ऐसा शब्द मुंह से नहीं निकला. जो कुछ तुने कहा मैने ठण्डे दिल से सहा. आखीर सहन करने की भी कोई सीमा होती है. तेरे जैसे हरामी के साथ सख्ती से ज्यादती का बर्ताव न किया जाएगा. तब तक तु किसी भलाई की आशा न रखना.

रावण का दोहा :- सीता अब भी मानले हर यह तेरी फजूल.

अब तु मेरी कैद से छुट कर जाये न भूल.

सीता का दोहा : रावण क्यूं बक बक करे इस जबान को बन्द

कामी, कपटी कायरे बुजदिल हो फरजन्द.

रावण सीता से प्यार से :- सीता तूं इतनी सौदाई न बन.

सीता रावण से :- तूं राजा होकर अन्यायी न बन.

रावण सीता से :- मेरे ~~[illegible]~~ न्याय की सारे संसार में धाक है.

सीता रावण से :- यूं कहो जुल्म का बाजार गर्म है न्याय क्या खाक है.

रावण सीता से गहरी सोच में :- आज मैं हैरान हूं कि मेरा खंजर क्यों बेकार हो रहा है. जबकी मेरी शान में ऐसे शब्दों का व्यवहार हो रहा है. एक साधारण औरत और इसकी इतनी हिम्मत. एक मैं और मेरी ताकत. परन्तु परन्तु यह अजीब तरह की सीता है. जीस पर मेरा जादू नहीं चलता है. न नम्रता को जानती है और न कठोरता से मानती है. जैसा मैं मुंह से बोलता हूं. उसका घड़ा घड़ाया उत्तर मिलता है. बेसक इसने भी मुझे बहुत अजमाया मगर मुझे भी रावण कौन कहेगा जो इसे सीधा न बनाया (सीता की ओर बोला) ओ अभागी स्त्री. ज्ञात होता है तेरे सीर पर मौत मंडला रही है.

सीता रावण से दोहा मिलका :- नहीं मालूम तेरी खतम कब तकरार होवेगी.

तु आज सुन ले या फिर सुनले मेरी इन्कार होवेगी.

रावण :- तेरे जैसे सरकसों को खूब अजमाया है.

मेरे कब्जे में तो एक दिन आखीरकार होवेगी।

सीता:- उधर जो राज हट है। उधर भी हट त्रीया का
भला मैं देखूं दोनों में किसकी तकरार होवेगी।

रावण:- तूं जीद करले या हट करले मगर एक दिन जरूरी है।
भुजा रावण की तेरे इस गले का हार होवेगी।

सीता:- दो ही चीजें लग सकती हैं सीता की गर्दन से
भुजा रघुवर की होगी। या फिर तेरी तलवार होवेगी।

रावण:- यह निश्चय है बिल्कुल तूं नरमी से नहीं मानेगी
मेरे खंजर से सीधी अरी मक्कार होवेगी।

सीता रावण से रोषी:- हो कायर पामर रजनीचर। क्यों अबला पर इतराता है।
पिंजरे में फंसी सिंहनी को नंगी तलवार दिखाता है।
लंकेश बड़ी कायर है तूं। लंका में मुझे छुपाया है।
जलजा डूबजा जल निधि में क्यों खड़ग दिखाने आया है।

रावण सीता से प्यार से:- हो प्यारी सीता, मैं तेरे प्यार का दिवाना हूं। और तेरे रूप का मस्ताना हूं। जो बात करता हूं। तेरी भलाई के लिए करता हूं। अब भी कहा मान ले। नहीं एक दिन पछतायेगी।

सीता, रावण से, क्रोध में:- अरे निर्लज यदि कोई लज्जा वाला होता तो। इतनी लानत सुन डूब मरता। और किसी को मुंह न दिखाता। न मालूम ईश्वर ने तुम्हें किस मिट्टी का बनाया है। शर्म और हया को तो तुने बेच खाया है।

रावण सीता से क्रोध में, वो तलवार की अभिलाषी। जरा अपनी जबान को सम्भाल। मैं तेरा काम अभी तमाम करता हूं। और सदा के लिये खत्म करता हूं।

धनपाल्नी तलवार पकड़कर:- रावण से: महाराज जरा शान्ति से काम लिजिये, स्त्री पर हाथ उठाना सुरवीरों के खीलाफ है। बल्कि इसे क्षमा कर देना ही इन्साफ है। इस निर्भाग के रोना लिखा है। रोती रहेगी। और इसी तरह अपनी जवानी खोती रहेगी।

रावण, धनपाल्नी से:- तलवार म्यान में करके। विचार तो यही था जब तक इसके मस्तक हवा न निकलता तब तक तलवार म्यान में न डालता, किन्तु तुम्हारे कहने से अपने इरादे को बदल रहा हूं। और एक महीने का अवकाश दे देता हूं। या तो फिर कहा मान लेगी नहीं तो यही खड़ग इसके प्राण लेगी।

| रावण का सीन समाप्त | सीता सीन चालू | सीता अपने मन में रस सोच मन्त्र चलकर :-

परमात्मा इन दिनों से तंग आकर खुशी से मरना चाहती हूं. परन्तु एक प्रार्थना जरूर करती हूं कि अगले जन्म में श्री श्री रामचन्द्र जी मेरे पती हो. या ऐसा कोई कार्य किया हो जिससे मेरी यह गती हो.

हनुमान सीता से वृक्ष से अवाज :- देवी. ईश्वर का नाम ले. और धैर्य से काम ले.

सीता हैरानी से :- यह आवाज किधर से आ रही है. इस पाप भूमि पर कौन पवित्र आत्मा है. भाई जरा सामने आ. और मुझे अपनी सकल तो दिखा.

हनुमान सीता से :- माता जी आप यह क्या कह रही हैं. जो इतनी समझदार होकर बुरी मौत मर रही हैं. आत्मघात करना तो महापाप है.

सीता हनुमान से :- भाई तुम्हारा क्या नाम है. मैं तो तुमसे न जान हैं न पहचान है.

हनुमान सीता से :- माता जी. मैं भगवान रामचन्द्र जी का सेवक हूं. मेरा नाम हनुमान है. निसन्देह आपका कहना ठीक है. आपकी हजारी में मेरी उन तक कोई रसाई न थी. किन्तु आपकी खोज करते हुए. भगवान ऋष्यमूक पर्वत पर आये. हमारे राजा सुग्रीव ने आपस में मित्रता की उसी दिन से यह सेवक आपकी सेवा में आया है.

सीता हनुमान से क्रोध में :- पीछे हटकर. दूर दूर हो कपट आत्मा दूर. मैंने तुझको जान लिया और भली प्रकार जान लिया. अरे वो दुष्ट वह वही समय था. जो सख्त गलती खा गई और तेरे धोखे में आ गई. अब तो मैं तेरी मिट्टी सुधं कर बता दूंगी यह दुष्ट रावण की कबर है.

हनुमान सीता से :- माता जी आपको सच बद गुमानी है. मगर आपके विश्वास के लिए मेरे पास श्रीरामचन्द्र जी की खास निशानी है. | अंगूठी दिखाकर | लीजिए माता जी इसकी पहचान कीजिए. और भली प्रकार इतमिनान कीजिए।

सीता अंगूठी देखकर, चूमकर रोकर :- हाय हाय मेरे प्राण प्यारे की अगूंठी. मेरे भाग्य के साथ-२ हूं जो रूठी. तुमको मेरी इस अवस्था पर दया न आई. और इतने दिनों बाद सक्कल दिखाई. हे प्रियतम की अंगूठी तू ही मेरी जिन्दगानी है.

हनुमान सीता से :- हे माता जी. अब इन बातों को जाने दीजिए. और मेरी तरफ ध्यान दीजिए.

सीता हनुमान से :- प्यारे हनुमान जी मुझे क्षमा करना. मैं तो अंगूठी को देख कर इतनी भूल गई कि आपको भी भूल गई. हनुमान इस खुशी में जो शब्द गलत निकल गये हो तो माफी चाहती हूं

हनुमान सीता से :- माता जी अब मुझे अधिक लज्जीत न कीजिए. मैं तो आपका खादिम मददगार हूं. और आपके लिए प्राण देने को तैयार हूं. मां अब विपत के दिन खतम हो गये हैं. पिछली दशा को मन से

मुलाओ और प्रकार रुदन करके दिल क्यों न जलाओ अब मेरा सीर्फ लौटने का इन्तजार है और

वानर दल का एक-एक बच्चा जान हथेली पर रखे तैयार है ऐ माता जी आप मुझे भगवान राम जी

का विश्वास जितने के लिए कोई खास निशानी दीजिए।

सीता हनुमान से :- मैं हैरान हूं इस वक्त तुझे क्या निशानी दूं और तो सारे आभूषण राह में फेंक

आई थी बतौर यह चुड़ामणी खास निशानी साथ में लाई थी जो तुम ले जा सकते हो और स्वामी

जी को दिखला सकते है।

हनुमान सीता से रायो :- हे माता अब है विनय एक यदपि कुछ हृदय हिचकता है

फिर भी मुख खोल कहू मां से बालक का चीत मचलता है

आया समुन्द्र लांघ कर मैं इस कारण भूख सताती है

यह पेड़ फलों से लदे हुए देख भूख भी बढ़ती जाती है

सीता हनुमान से :- सिर पर हाथ फेर कर) हनुमान मेरी ओर से तुम्हे पूरा अधिकार है किन्तु ख्याल रखो

यहां का एक-एक राक्षस खूंखार है।

हनुमान सीता से :- माता जी उनकी मुझे परवाह नहीं जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है।

परदा हो जाना) पर्दे पर रख्खा है अशोक वाटिका उजाड़ना) बागवान ललकार कर :- अरे तू कौन है जो

बाग को उजारत है।

हनुमान बागवानों से - क्यों मेंढक की भांती टर्रा रहा है और अकारण ही सिर पर चढ़ा आ रहा है।

बागवान हनुमान से :- भलो भयो एक तो फल तोड़ खावत है दूसरा हमको ही धमकावत है।

हनुमान बागवान से :- अच्छा है तुम यहां से चले जावो व्यर्थ अपने प्राण न गवावों।

बागवान हनुमान से :- अरे हमको मौत का भय दिखावत है भला तलब कौन बात की आवत है। हनुमान का हाथ

पकड़ कर) हम देखत है तोन भाग कर कहां जाता है।

हनुमान, बागवानों को घुसा मारकर) ~~एक देखता~~ भाग कर नहीं जाऊंगा, बल्कि तुम सबको यमलोक पहुचाऊंगा।

बागवानों का पुकार :-

रावण की राज्य सभा।

रावण मन्त्री से :- महामन्त्री सताबी, गाने वाली को बुलाओ।

मन्त्री रावण से :- जैसी आज्ञा हो पृथ्वी नाथ।

रावण गाना सुनकर :- हां हां दुनियां में अगर जादू है तो गाना है गाने वाली अगर सुरीली है तो आनन्द

का क्या ठिकाना है हां हां हां।

बागवान रावणसे रोकर :- दुहाई महाराज की। सारी अशोक वाटिका उजड़ गई। हमारी भी दुर्गती भई। काहू को सिर फूटो काहू को मुंह फूट गयो।

रावण बागवानों से :- किस दुष्ट की मृत्यु आई है। जो यहां आकर आफत मचाई है।

रावण अक्षयकुमार से :- बेटा अक्षयकुमार तुम अभी जाओ। और उसे गिरफ्तार करके दरबार में हाजिर करो।

अक्षयकुमार रावण से :- जैसी आज्ञा पिताजी। अक्षयकुमार का जाना (परदा)

अक्षय कुमार हनुमान युद्ध.

अक्षयकुमार हनुमान को ललकार कर :- खबरदार हो बन्दरे, अब जाने नहीं पायेगा।

हनुमान अक्षयकुमार से :- मुझे भी तुम्हारा इन्तजार था। अब जरा दो हाथ दिखाने का मजा भी आएगा।

अक्षयकुमार हनुमान से :- या तो सीधी तरह मेरे साथ चल ~~अक्षय~~ अन्यथा समझ ले, मेरा नाम अक्षयकुमार है।

हनुमान अक्षयकुमार से :- यदि तूं भी मुझे गिरफ्तार न करे तो तेरे जीने पर धिक्कार है।

अक्षयकुमार हनुमान से तलवार खींच कर :- चलता है या बातें ही बनाएगा।

हनुमान अक्षयकुमार से तलवार को सम्भाल : मार कर :- यदि तेरे जैसे छोकरे मुझे गिरफ्तार करलेंगे तो मुझे हनुमान कौन कहेगा।

रावण का दरबार

सभी बैठे हैं।

दूत रावण से :- महाराज की जय हो। अक्षयकुमार बानर के हाथों मारा गया।

रावण दूत से :- क्या कहा अक्षय कुमार मारा गया।

दूत रावण से : जी हां महाराज।

रावण मेघनाथ से :- बेटा मेघनाथ तुम जल्दी जाओ। और जिस तरह हो सके। उस बानर को दरबार में हाजिर करो।

मेघनाथ रावण से :- जैसी आज्ञा पिताजी। (परदा)

मेघनाथ हनुमान से :- अरे बन्दरे। क्या तूं यहा से जीवित जाने की आशा रखता है।

हनुमान मेघनाथ से : अगर मैं जाना चाहूं तो मुझे कौन रोक सकता है।

मेघनाथ हनुमान से :- जरा कदम तो उठा। या मुंह की और क्या बकता है।

हनुमान मेघनाथ से :- जरा आगे को आ। वहीं छिनाला औरत की तरह वहीं [illegible] मटकता है।

दोनों की लड़ाई, मेघनाथ का ब्रह्म फांस फेंक कर: हनुमान को गिरफ्तार करना।

हनुमान मेघनाथ से:- अरे बेईमान. आखिर यही धोखा करना था.

मेघनाथ हनुमान से:- अरे तेरे साथ हाथापाई करके क्या मरना था.

हनुमान रावण से:- अच्छा चलिए. अब तो रावण के साथ ही बातें करेंगे: अगर मौका मिला तो दो हाथ भी करेंगे।

रावण का जंगी दरबार

विभीषण, मेघनाथ

रावण मन्त्री से:- महामन्त्री बताओ. कुछ मालूम हुआ. अशोक वाटिका को उजाड़ने वाला और अक्षयकुमार मारने वाला कौन है.

मन्त्री रावण से:- जी हां मालूम हो गया. वह पवन पुत्र हनुमान है.

रावण मन्त्री से:- महामन्त्री क्या तुमने धोखा तो नहीं खाया.

मन्त्री रावण से:- नहीं महाराज वह देखो वीर मेघनाथ उसे पकड़ कर ही ला रहे हैं.

मेघनाथ, रावण से, हनुमान आगे करके:- पिता जी अक्षयकुमार को मारने वाला बाग को उजाड़ने वाला हाजिर है. जैसी इच्छा हो दण्ड दिया जाये.

रावण मेघनाथ से:- दण्ड देने से अच्छा है. पहले इससे अपराध का कारण पूछ लिया जाये.

मन्त्री हनुमान से:- ओ बन्दर. जरा बताइये कि तेरे मन में क्या हवा समाई है. जो कदाचित मृत्यु नजर नहीं आई है. (हनुमान चुप) मन्त्री हनुमान से:- चुप रहने से आपके प्राण नहीं बचेंगे. जरा मुंह खोल कुछ जबान से बोल.

हनुमान मन्त्री से:- क्योंकि बन्दा इस वक्त असीरे सुलतानी है. इसलिये ऐसे गैर से बात करने में मेरी हानी है. जब कोई ~~पूछने~~ पूछने वाला पूछेगा. तो जवाब देंगे और पाई का हिसाब देंगे.

दोहा:- पड़ा हो शेर पिंजरे में. मगर वह बू नहीं जाती.
दिलावर की कज़ा के सामने रूं नहीं जाती.

रावण हनुमान से:- रस्सी जल गई मगर बल नहीं ज़ला.

हनुमान रावण से:- दोहा:- जले बल किस तरह मेरा. मुझे किस बात का गम है:
वही तुम हो वही मैं हूं - वही दम है वही खम है.

रावण हनुमान से:- क्रोध में:- अरे मूढ़. यह नीच कार्य स्वीकार करने से तो अच्छा था. कहीं डूब कर मर जाता और प्रहलाद के नाम पर तेरे जैसे बालक के नाम पर कलंक का टीका न लगता.

हनुमान रावण से :- दोहा :- अभी तक भी है. तेरा काम पश्चाताप करने का.

किया है काम तुने बिलासक डूब मरने का.

रावण हनुमान से :- राधे :- तु कौन कहा से आया है. कुछ अपनी बात बता बनरे.

बाग उजाड़ा क्यों मेरा - क्या कारण था बतला बनरे.

लंका के राजा का तुने क्या. नाम कान से सुना नही.

तु इतना ढीठ निरकुस है . क्या मेरे प्रताप से डरा नही.

मारा है अक्षयकुमार मेरा. तो तेरा क्यों न संहार करु

तु ही न्याय बन कर कहदे. तुम से कैसा व्यहवार करु

हनुमान रावण से :- राधे :- दस मुःख की किताब के पन्ने. क्रम-२ से लेता हूं.

पहला जो प्रश्न पुछा उसका ही उतर देता हूं.

वे दशरथ अजीर बिहारी है. कहलाते रघुकुल भूषण है.

जो थी जीन पर सरूपनखा. हारे जिनसे खर दुषण है.

फिर और ध्यान दे लो. जीनकी सीता को हरकर लाए हो.

मे उसी राम का सेवक हूं. जीनसे तुमने वैर बढ़ाये हो.

अब सुग्रीव लंका आया था. माता का पता लगाने को.

तन में भुख लगी ऐसी. हो गया विवश मन फल खाने को.

सुची तुमने न ली मेरी. निश्चर कुल है अभाव यह.

फल खाकर पेड़ तोड़ता है बानर का तो स्वभाव यह.

मार का उतर यह है. सबको तन मन प्यारा है.

उस मुझ को मारा है. तो मैने भी उसको मारा है.

रावण हनुमान से : प्रश्न तो यह है अशोक वाटिका मे जाने के लिए किसने कहा था तुम्हे.

हनुमान रावण से :- कहा था श्री राम ने और सुग्रीव ने सीता जी खबर लाने के लिए.

रावण हनुमान से : हैं हैं सीता जी की खबर लाने के लिये.

हनुमान रावण से : हां हां सीता जी की खबर.

रावण हनुमान से :- परन्तु सुग्रीव का रामचन्द्र से क्या सम्बन्ध है.

हनुमान रावण से:- जब वह सीता जी को खोजते हुए ऋषि एक पर्वत पर आए तो. दोनों ने आपस में मित्रता की

जैसे बाली ने आपको छः मास खाक में दाबा है. रामचन्द्र जी ने एक ही बाण से दुनिया से लोप कर दिया.

अब आप ही उसकी ताकत का अनुमान लगा सकते हैं. अगर अब मेरा कहना मानो तो आपकी भलाई है.

अब सीता जी को भगवान राम जी के चरणों में पहुंचा दें. और उनसे माफी मांग लें. वह अवश्य माफ कर देंगे.

रावण हनुमान से:- क्रोध:- अरे मूढ़ जरा जबान को सम्भाल. और ऐसे अशुभ शब्द मुख से न निकाल. अरे

मतिमन्द क्या तू यहां से जीवित जाने की आशा रखता है. हां जिनकी महिमा तू भाटों की तरह गा रहा है.

और इतना चौड़ा मुंह फैला रहा है. अच्छी तरह से जानता हूं (हंसकर) प्रथम तो बनवासी रामचन्द्र

और लक्ष्मण, दूसरा साथ कौन मिला सुग्रीव बाली का दुश्मन. कहीं ईंट कहीं का रोड़ा. भानमती

ने कुनबा जोड़ा. सौ पचास आदमी इधर-उधर से इकट्ठे किये. और रावण से मुकाबला करने

के मनसूबे बान्ध लिये. अरे मतिमन्द उन पर तो मैंने लंका का एक कुत्ता भी छोड़ दिया तो उन्हें छुपने

की जगह न पाएगी.

हनुमान रावण से:- सच है जब किसी मनुष्य की बुरी घड़ी आती है. तो उसकी समझ ही उल्टी हो जाती है.

कौन समझाए. और सोये को सोया कैसे जगा सकता है. मगर याद रख आखिर रोयेगा पछतायेगा

किन्तु वह समय हाथ नहीं आयेगा. मैं नहीं कहता हूं. तू किसी मनुष्य से डर, किन्तु उस

परमेश्वर का तो भय कर. नहीं तो तेरे कुत्ते भौंकते रह जाएंगे. और तेरी खोपड़ी को कौवे नोंच

नोंच कर खाएंगे.

रावण हनुमान से राग:- है खाक धरनी से गगन तलक. रचना समस्त मुझ में ही है.

आता है सूर्य चन्द्र सब उदय अस्त मुझ में ही है.

मेरे त्यौरी के चढ़ते ही. त्रिलोकया नाचने लगते है.

ग्रह काल सुरेश कुबेर मेरे घर पानी भरते है.

आती है बड़ी हंसी मुझको. यह ऊट पटांग बात सुनकर.

उस अदम तपस्वी बच्चे को. किसे भाती बखाना चुन चुन कर.

ना समझे किस घमण्ड में है. स्वामी को अपने समझाले.

उस वानर वाले तपसी से. क्या डर जावें लंका वाले.

हनुमान, रावण से:- तेरा यह फजूल ख्याल है. मेरी ओर उंगली उठाने की किसकी मजाल है.

शायद तू इसलिये फूल रहा है कि मेघनाथ मुझको पकड़ लाया. तेरे इस वीर को तो एक आन में निचोड़ देता. पर समझा कि किसी तरह तुझ तक पहुंच जाऊं. कुछ समझा बुझाकर सही रास्ते पर लाऊं. मगर जब मनुष्य की बुरी घड़ी आती है तो उसे न आंखों से दिखाई देता है न कानों से सुनता है. मगर मैं पुराने सम्बन्धों के कारण ही आपसे हमदर्दी कर रहा था. अन्यथा मुझको क्या. चूल्हे में पड़े तू भाड़ में पड़े तेरी लंका.

रावण हनुमान से दोहा :- अरे नालायक बता तो मुझको. तू ख्वाब किसको दिखा रहा है.

मैं वह बला हूं जिसके भय से काल खुद ख्वाब खा रहा है

हनुमान :- लोग खुद ही देख लेंगे. क्यों इतना तलमला रहा है.

मत जो खाता था खौफ जिसका. वह आज तुझे खा रहा.

रावण न मैंने उठाया खंजर तभी तलक चहचहा रहा है.

तू अपने हाथों अदम का रास्ता बना रहा है.

हनुमान :- चन्द दिनों में होगी यह चर्चा. वह दिन भी नजदीक आ रहा है.

कहेगी दुनियां देखो रे लोगों. जनाजा रावण का जा रहा है.

रावण हनुमान से तलवार उठाकर :- अरे वो ~~नाबा~~ नासा कार ~~शरीर~~ शरीर. रावण से ऐसी बेहूदा तकरीर, अब मेरी तलवार ही तुझे खामोश करायेगी, और सदा के लिए सुख की नींद सुलायेगी (तलवार उठाना)

विभीषण, रावण की तलवार पकड़कर :- भाई साहब जरा धैर्य कीजिये. यह काम आपकी शान के खिलाफ है. भला दूत का वध करना कहां का इन्साफ है.

रावण विभीषण से :- हट हट मेरा हाथ छोड़ यह तुम्हारा ख्याल झूठ है. कौन कहता है यह दूत है.

विभीषण रावण से :- भाई साहब जब यह अपने स्वामी का सन्देश लाया है तो इसमें दूत होने में क्या शक है.

रावण, विभीषण से :- ~~भ्राताजी यह राजनीति का असूल है.~~ मारने का क्या हक है.

परन्तु तुम्हे ऐसी बेहूदा बकवास

~~रावण, विभीषण~~ विभीषण, रावण से :- जो कुछ इसने कहा वह इसके मालिक की जबानी है.

रावण, विभीषण से :- मुझे हैरानी है.. कि तुमने यह बिना फीस की वकालत करने की क्या ठानी है.

विभीषण, रावण से :- भ्राताजी यह राजनीति का असूल है.

विभीषण रावण से :- यह कहना फजूल है बल्कि इस की वजह खास माकूल है.

132

हनुमान रावण से:- अगर तु भी मुझे गीरफ्तार न करे तो तेरे जीने पर थूत है.

रावण सभा से:- पकड़लो-पकड़लो भागने न पाये: हाथ में शीशी लेकर लगा फूंक देना.

नल-नील
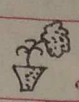
श्री रामचन्द्र जी का कैम्प

लक्ष्मण सुग्रीव अंगद जामवन्त

हनुमान जी का नारा बोलना: राम जी के पांव में,, प्रणाम भगवन,

राम हनुमान से,, कहो महावीर तुम धन्य हो. कहो कुशल से तो आये.

हनुमान, राम से:- हे भगवन जब आपका आशीर्वाद ~~आपके~~ मेरे साथ है. तो मुझे कष्ट क्यों होने पाये.

सुग्रीव, हनुमान से:- कहो बजरंगी सीता जी की खबर लाये.

हनुमान, सुग्रीव से:- हां हां हनुमान जाये और सीता जी की खबर न लाये.

राम हनुमान से,, कहो महावीर तुम लंका में कैसे पहुंचे,

हनुमान राम से, :भगवन: मैं कई स्थानों पर खोज करता हुआ लंका पहुंचा वहां कई जगह पर देखा भाला, बड़ी मुश्किल से माता जी का पता लगा, भगवन माता जी अशोक वाटिका में कैद है. माता जी एक साधारण सी साड़ी में अपना शरीर ढांप रही थी, और मारे सीत के थर-2 कांप रही थी मैं यही सोच रहा था कि इतने में रावण वहां आ पहुंचा(~~वहां कई जगह पर देखा भाला~~) उसने माता जी को खूब धमकाया ऐ भगवान माता जी कुछ देर तो चुप रही, परन्तु तंग आकर जबान खोली जो कुछ मुंह में आया सो बोली, जिसे सुनकर रावण ने तलवार निकाली परन्तु एक स्त्री ने बीच में आकर माता जी की जान बचाई, अस्तु उसका अरमान दिल ही दिल में रह गया, और जाता हुआ कह गया (1) महीने और सबर करूंगा, उसके जाने के पश्चात. मैं जीस वृक्ष पर बैठा था, (~~उसी~~) वह उसी वृक्ष के निचे आई, और साड़ी में से पला काट कर गले में लटकाई, जिसके देखते ही मैंने सोचा माता जी आत्म घात करने लगी है, मैंने वहां से कुद कर सम्भाला पहले तो मुझे रावण समझ कर मुझे बुरा भला कहा, जब मैंने आपकी निशानी दी तो उनका भ्रम जाता रहा, किन्तु इस बीच माता जी रोती रही. और आती दफा मुझे यह निशानी दी लिजिये भगवन पहचान किजिये,,

राम चूड़ा मणी लेकर निसन्देह, यह मेरी प्राण प्यारी की निशानी है, रोकर प्यारे

किन्तु आप यह तो बतायें तुम्हारी रावण से भी मुलाकात हुई या नहीं

हनुमान राम से :- हां भगवन : मैं रावण से भी मुलाकात कर आया हूं और उसके बहादुरों को भी नीचा दिखा आया हूँ, कइयों को मारा कइयों को पछाड़ा

राम हनुमान से :- हे प्यारे हनुमान निचा दिखाने की बजाए, उसे सीधे मार्ग पर लाते तो अच्छा था,

हनुमान राम से :- भगवन मैंने अपना सारा बल लगाया. लेकिन अभिमानी ने मेरी बातों को मखौल में ही उड़ाया, यहां तक की मुझे मारने के लिये तलवार उठाई किन्तु बीच में पड़कर विभिषण ने मेरी जान बचाई,,

राम हनुमान से :- प्यारे हनुमान जो कष्ट मेरे लिये सहन किया है मैं आपका सच्चे दिल से मशकूर हूँ

हनुमान राम से :- बस भगवन मुझे अधिक लज्जित न कीजिऐ,

राम सुग्रीव से :- हे सुग्रीव जी कहो अब क्या विचार है

सुग्रीव राम से :- हमें अब किस बात का इन्तजार है उधर रावण का सिर और हमारी तलवार है

राम सुग्रीव से :- तो प्यारे सुग्रीव जी यहां से चलने की तैयारी कीजिऐ

सुग्रीव राम से :- जैसी आज्ञा हो भगवन,

हनुमान सीता मीत समाप्त : **रावण की परेशानी** मेघनाथ विभिषण रावण

रावण सभा से :- न जाने वह कौन सी मनहूस घड़ी थी. जब की यह नागहानी मेरे गले पड़ी थी साप के मुंह में छछुन्दर खाये तो कोढी उगले तो कलंकी, जब से इसे चुरा कर लाया हूँ, न नींद भर सोया हूँ न पेट भर खाया हूँ. या तो कोरे जवाब सुनता रहा, या इसके वीरह में तड़पता रहा. इसी के लिये हनुमान जला गया. और मेरी मान इज्जत को एक क्षण में खाक में मिला गया.

मेघनाथ रावण से :- पिता जी जब तक मेघनाथ संसार में मौजूद है किसी प्रकार की चिन्ता करना बेसुद है, मैं वही मेघनाथ हूँ, जिसका हनुमान एक झटका भी नहीं . उसे मैं मामूली इन्सान समझता हूँ. और आगे पीछे लगातार अपना अपमान समझता

रावण मेघनाथ से,, शाबास बेटा, खैर जो कुछ हुआ है उसका अब क्या फीकर करना है अब तो आगे की रोकथाम का जिकर करना है. यो तो मुझे किसी बात का गम नहीं क्योंकि मेरे बहादुर किसी से कम नहीं भला लंका के बहादुरों से मुकाबला करने का किसी में दम नहीं।

विभिषण रावण से:- भ्राता जी आपके सारे सला सद आपसे डरते हैं लेकिन अग्नि तथा दुश्मन को तुच्छ नहीं समझना चाहिये, इसलिये मेरी आपसे यही ताकिद है जिस प्रकार हो सके उस बला को गले से टालें. और सारे कुल को इस आने वाली बर्बादी से बचा लें अब साधारण सी बात यह है कि आप सिता जी को श्री रामचन्द्र जी के पास पहुंचा दें और उनसे मित्रता का हाथ बढ़ायें, वह न्याय कारी परमेश्वर आपको हृदय से लगायेंगे।।

मेघनाथ विभिषण से क्रोध में: चाचा साहिब बस हो चुकी. जरा चुप हो जाइये. अगर राम से अधिक लाव हो तो, वहीं जाकर छुप जाइये कुल पर चाहे कितनी तबाही मचे, परन्तु तुम ऐसी जगह छुपना जहां आपकी जान बचे: शोक। आप जैसे निर्लज हमारे कुल में कहां से पैदा हो गये न आज हम अपने बाप को रोते बहन की नाक कटी जावे और लाने को शर्म आये जावो जल्दी जावो वरना मौत दीख जायेगी, और फिर छुपने को जगह न पाएगी।

विभिषण मेघनाथ से "क्रोध में", अरे ना समझ गुस्ताख लड़के तूं इस प्रकार जबान चला रहा है पृथवी तथा आकाश को कुलावे मिला रहा है माना की तू जवानी में मगरूर है परन्तु बुद्धि और समझ से कोसों दूर है बिलसत भर का लड़का, और हाथ भर की जबान, इस समय इतनी बहादुरी दिखा रहा है, तू तब कहां मर गया था, जब हनुमान महलों की सैर करी कर गया था।

मेघनाथ, विभिषण से "क्रोध" में: चाचा साहिब मैं इस बात को कहना न चाहता था अब आप कहला कर ही रहोगे, चाचा साहिब उसमें तो आपकी साजिश थी, जो हनुमान भाग गया मानो आपका तो भाग जाग गया, अफसोस तुम्हारी बहन की जिसने नाक कटी. (आये) तुम उसी का पक्ष लेते हो यदि कुछ शर्म हो तो चलू भर पानी में डूब मरो:

विभिषण, रावण से, भाई साहब देखते हो यह कल का छोकरा मुझे किस प्रकार गुस्सा (जलील — दुरुस्त)

रावण विभीषण से :- "निःसन्देह जो कुछ कह रहा है बिलकुल दुरुस्त कह रहा है।

विभीषण रावण से :- ठीक, फिर आप भी उसका पक्ष ले कर मेरा अपमान करा रहे हो और उसकी पीठ ठोक कर मुझे सारे दरबार में कड़वे वचन सुनवा रहे हो।

रावण विभीषण से :- अरे निर्लज्ज अगर मैं उसका पक्ष भी लेता हूँ, तो वह शत्रु का वफादार तो नहीं और तेरी भांति कौमी गद्दार तो नहीं निःसन्देह तेरी दुश्मन के साथ गहरी साठ गांठ है हनुमान की वकालत करने के लिये तू बीच में पड़ गया. जब मैंने उसका वध करना चाहा तो फिर बीच में अड़ गया, अब मेघनाथ ने युद्ध की सलाह दी तू उसके सिर पर चढ़ गया।

विभीषण रावण से :- भ्राता जी यह आपकी भूल है और मेरे सम्बन्ध में ऐसा ख्याल लाना बिलकुल फजूल है पर मैं अब भी कहता हूँ कि आप सोई हुई चिड़ को छेड़ रहे हैं एक स्त्री वह भी पराई. जिसके कारण इतनी आफत आई.

रावण विभीषण से :- परन्तु उनके दिल में ये क्या हवा समाई जो अकारण ही सूर्पनखा की नाक कटाई, अरे हाय अब कुछ शर्म न आई,

विभीषण रावण से :- निःसन्देह यही एक बात है. जिससे अपनी तबीयत इतनी भड़काई पर कैसा वह खाम खाह उनके सिर आई और किये की सजा पाई।

रावण विभीषण से :- विभीषण जरा कान खोल कर सुन. तेरी निसबत चारों ओर से नाराजी का इजहार है. जिससे स्पष्ट प्रकट होता है तू शत्रु का खुल्लम खुल्ला वफादार है.

विभीषण रावण से :- भाई साहिब जैसे आप खुद फरामोश हैं. वैसे ही आपके सभासद हैं. इस समय आपके सुर में सुर मिला रहे हैं. और आपको उल्टे मार्ग पर चला रहे हैं, यह आपको अहित के [illegible] में विष पिला रहे हैं. समय आने पर यह निश्चय अपने ही मुख से कहेंगे रावण की सख्त गलती थी

मगर हम क्या करें हमारी पेश नहीं चलती थी.

रावण विभीषण से :- क्रोध में :- अरे पाजी मक्कार बेगैरत गद्दार. तूं इसी वक्त यहां से काफूर होजा. और मेरी आंखों से दूर होजा. तेरे प्राणों की रक्षा इसी में है. किन्तु मेरी सीमा से निकलजा, अरे निर्लज्ज यदि मैं तेरे साथ कुछ भलाई करता हूं तब भी उसकी हमदर्दी का दम भरता है. वह तेरी बहन की इज्जत पर हाथ डाले, किन्तु तुझको कुछ शर्म न आए. खर और दूषण का सेना सहित हनन करें. और तेरा रक्त जोश न खाए. अरे पापी इस बेहाई की जिन्दगी से तो अच्छा था कुछ खाकर सो जाता. हां मगर मैं तेरे जैसा बेशरम नहीं, अपने मां जाये भाई का वध करना मेरा धर्म नहीं. माना की आला दर्जे का तूं पाजी और शैतान है, किन्तु तेरे जैसे मुरदे को मारना मेरा अपमान है। (लात मार कर) जा बेगैरत चला जा, निकल जा दूर होजा अब लंका के भीतर कदम न धरना, और सारी जिन्दगी मुझे मुंह न दिखाना.

विभीषण का गाना, बहर तवील : रावण से :-

तेरे बरबाद होने के दिन आ गये.
दोष इसमें है भाई तुम्हारा नहीं.
(1)
तेरी बुद्धि में रावण खलल आ गया
तूने अपना बेगाना विचारा नहीं.

(2) आप अपनी जबां से कहो न कहो.
मुझे रहना खुद गवारा नहीं.
तेरी मतिमन्द के राज्य में
अब विभीषण का कोई गुजारा नहीं.

(3) तुम्हें भाई की भाई सहित नहीं
आज तुमको विभीषण प्यारा नहीं
अब मरने में न छोड़ी है कसर.
शिश धड़ से अजेय उतारा नहीं.

५. तरसते लबों को तरसता छोड़ते हो
क्या करूं मेरा चलता इजारा नहीं
मेरे चलते समय का नमस्कार लो।
तो दर्शन करूंगा दो बारा नहीं।

विभिषण जाते रावण से:- शोक मेरी शुभ कामनाओं का यदि ऐसा मिलना था, और मुझे इसी प्रकार भरे दरबार से जलील हो कर निकलना था। अच्छा भैया तुम्हारा क्या कसूर है [हाथ बान्ध कर] अब मेरा अन्तिम नमस्कार लीजीये॥ K.K.H.

श्री रामचन्द्र जी का कैम्प

राम. अंगद. हनुमान. लक्ष्मण. नल. नील. सुग्रीव

सुग्रीव राम से:- भगवन एक आश्चर्य की बात सुनीये, रावण का भाई विभिषण आपकी शरण मांगता है।

राम सुग्रीव से:- है है रावण का भाई विभिषण.

सुग्रीव राम से:- हां भगवन;

राम सुग्रीव से:- तो आपका इस विषय में आपका क्या विचार है. क्या विभिषण वास्तव में काबिल इतबार है.

सुग्रीव राम से:- मेरी राय में तो हनुमान जी से पूछ लेना ठीक रहेगा.

हनुमान राम से:- भगवन और तो मैं कुछ नहीं कह सकता. मगर इतना कहे बगैर रह भी नहीं सकता. यदि विभिषण रावण के दरबार में मुझे न बचाता तो मैं कदाचीत लौट कर वापिस न आता.

राम हनुमान से:- तो बस ठीक है. प्यारे हनुमान जाइये, और विभिषण को आदर सहित ले आइये.

हनुमान राम से:- जैसी आज्ञा हो भगवन" "परदा"

हनुमान विभिषण से:- प्रणाम महाराज;

विभिषण हनुमान से:- खुश रहो प्यारे हनुमान जी खुश रहो.

हनुमान विभिषण से:- महाराज आपकी भक्ति पुरी हो गई. मुझ दास को आपको बुलाने के लिये भेजा है. चलिये भगवन के दर्शन कीजीये"

विभिषण राम के पांव में गिरकर रोना: प्रणाम भगवन: [गाना तर्ज] मेरे भक्त विभिषण क्यों खोया तुम खाया.

टेक:- आंखों में जल भरा है. किस दुष्ट ने सताया.

(१) जीसने मेरे भक्त को दुनियां में दुख दिया है

वंश नष्ट उसका हुआ कहीं न पाया   मेरे भक्त......
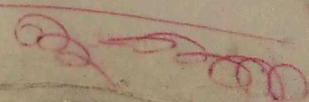
2. तू मेरी शरण में आया. तुमको गले लगाया

क्यों रोते हो विभीषण. क्यों इतना नीर बहाया   मेरे भक्त.....

3. जल हाथ लेकर मस्तक तेरे चढ़ाया

जा आज से विभीषण लंका पति बनाया,   मेरे भक्त....

राम का नाटक विभीषण से:- विभीषण को उठाकर, प्यारे विभीषण उठो क्यों जोर जोर से रो रहे हो. अब आपको यहां पर कोई कष्ट नहीं होगा. अब लंका जीतने पर शाही मुकुट आपके सिर होगा. आज से मेरा यह वचन निश्चत रहेगा.

गाना विभीषण का राम से:- भक्त ~~दास~~ मैं विभीषण दास आपका रखना लाज हमारी॥   हो प्रभु आया हूं शरण तुम्हारी.

विभीषण, राम से नाटक:- भगवन जैसा आपको सुना था. उससे भी बढ़कर पाया है. जिसने अपने शत्रु के भाई को खुले दिल से गले लगाया है. भगवन यह अहसान मैं जिन्दगी भर नहीं भूलूंगा.

राम विभीषण से,, प्यारे मित्र यह कोई अहसान नहीं. जो दुखी इन्सान पर हमदर्दी नहीं करता पहले सिरे का कमीना होता है. मगर यह तो बताओ, तुम रावण को क्यों छोड़ आये. क्या उनसे कोई खास तकरार हो गया. या उन्हें तुम्हारा कुछ बिगाड़ दिया.

विभीषण, राम से:- भगवन. मैंने उस अभिमानी ~~[illegible]~~ को समझाया. किन्तु उसने मेरी बातों को मखौल में ही उड़ा दिया. मुझको कायर और बुजदिल ठहराया. आखीर उसने नाश होने पर पाया. तो विवश होकर मैं आपकी शरण में आया. भगवन मेरी ओर से रावण मर गया. मैं रावण की तरफ से मर गया. हे भगवन अब तो यह शरीर आपके चरणों में कुरबान कर चुका हूं.

राम. विभीषण. से. यदि रावण आपको और रावण को आप साफ जबाव दे चुके है. तो हम आपको लंका की उपाधी तुम्हे दे चुके है. यहां आपका हर तरह से आदर किया जाएगा. और मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि लंका विजय होने पर लंका का राज्य तुम्हे दिया जाएगा,,

हनुमान राम से,, ~~[illegible]~~ धन्य हो भगवन, जो सम्पदा महादेव जी ने रावण को दस शीश का बलिदान पर दी थी. वह आपादी आपने विभीषण को शरण मे आने पर दे दी:

राम हनुमान से:- प्यारे हनुमान जी हम भक्त को क्या दे सकते है. भक्त का दर्जा तो हर वक्त सिर पर

होता है. सबक: बोलो कृपा निधान भगवान राम चन्द्र की जय॥

सुग्रीव राम से,, भगवन अब लंका पर चढ़ाई करने का हुक्म दिजीये.

राम सुग्रीव से,, मेरी सम्मति में एक बार फिर किसी दुत को भेज कर रावण को समझाना चाहिये. और जहा तक हो सके. आगे आने वाली तबाही को टालना चाहिये.

हनुमान राम से,, ठीक है भगवन मेरी समझ में भी रावण को एक अवसर और देना चाहिये. और उसको समझाने के लिऐ युवराज अंगद को भेजना चाहिये.

राम, हनुमान से,, हां हमारा विचार भी ऐसा ही है. अंगद युवक निपुर्ण तथा सबल भी है. और वीर होने के नाते निति कुशल भी है.

अंगद राम से;, तो नाथ मुझे आशीर्वाद दिजीये. और उस अभिमानी से भेट करने के लिये विदा किजिए.

राम अंगद से,, हे वत्स जावो मेरा आशीर्वाद है कि तुम संसार में अमरकीर्ती पावोगे,,

अंगद राम से:. जयो हो प्रभो॥ दोहा: चीन्ता ही क्या है: आपका सिर पर जो हाथ है.

देखूंगा जाके उसको जो देवों का नाथ है. [परदा]

सातवां दिन शरू
सीनरस्क्रीन.

रावण का दरबार

मेघनाथ. प्रहस्त, मन्त्री, निकुम्भ। अंगद रावण सवांद

रावण मन्त्री से:- महामन्त्री सताकी. गाने वाली को दरबार में हाजीर करो;

मन्त्री रावण से:. जैसी आज्ञा हो महाराज,, : गाना सुनना :

द्वारपाल रावण से:- महाराज की जय हो: किष्किन्धा से एक दुत आया है.

रावण द्वारपाल से:. जावो आदर सहित दरबार में ले आवो: [प्रणाम महाराज]

रावण अंगद से, राधे:- मैं कहता हूं कौन है तु बतला अपना नाम.

हुआ कहा से आगमन, क्या है ~~क्या~~ मुझसे काम.

अंगद रावण से:. राधे:- मैं कहता हूं लिजिए नमस्कार दसभाल.

दुंगा चार जबाब में जब है चार सवाल;

महाराजा राजाधिराज. मैं, दुत रामरघुबर का हुं
युवराज देश किष्किन्धा का. सुत बाली राज बानर का हुं.

महाराजा राज धिराज. मै ~~दुत~~ राम रघुबर का हु
युवराज देश किष्किन्धा का, बाली राज बानर का हु

रावण अंगद से. दोहा:- मैं कहता हूँ लिये हैं तुने जीसके नाम

ध्यान नहीं उनका मुझे कौन कालिया राम

अंगद रावण से: राध्ये:- मैं कहता हूँ ध्यान न हो. कारण तब बुरी अवस्था थी.

जब बाली की कारख में बन्दी थे उस समय आपको मुर्छा थी.

इसलिये बाली को भूल गये, तो बड़ी न भूल महोदय की

इसमें अचरज है नहीं मुझे. पर एक बात है विस्मय की.

अभिमानी श्री लक्ष्मण जी को प्रतिदिन दश वदन देखते हैं.

इसलिये अचम्भा तो यह है श्री राम नाम भी भुले हैं.

उन ही का सेवक अंगद है. यह कर्तव्य चुकाने आया है

इस उलटी राजसभा में कुछ सीधी समझाने आया है.

रावण अंगद से राध्ये:- क्या तू ही है अंगद हे अंगद. क्या तू ही बाली का बालक है.

क्या तु ही बांस की ज्वाला है. क्या तु ही बाली का घालक है.

यदि तेरा गर्भ नष्ट होता तो, होता आज अकाज नहीं

तपस्वी का दूत कहलाने मे आती तुझको लाज नहीं

मारा जीसने बाली बाप. धिक है तु उसका दास हुआ.

जो मित्र पिता का है तेरे. उस पर न तुझे विश्वास हुआ.

अब भी तु मुझ से मिल जाये. तो तेरी शुभ गती हो जावे

इस बड़े राज्य का लंका का काल से सेना पति हो जाये.

अंगद रावण से. राध्ये:- मैं यह सेवा करता परन्तु. मुझ में इतनी योग्यता नहं

लंका का सेना ध्यश बनु. यह बुद्धि और वीरता कहां.

सेना पति अगर चाहते हो तो. रामदल में कालील है.

दो चार नहीं सैकड़ो वहां. सेना पति बनने काबिल है.

अन्यथा सन्देशा है उनका. इस लंका धीशवर

सारी लंका मे एक वही. बस भेद रहेगा तर्पण

अन्यथा एक विभिषण तो इस सेना को आ सकता है.

सेना पाते तो तुम चाहो. वह राज्य भी चला सकता है.

रावण, अंगद से: रावण :- अच्छा अगर सन्धी चाहते हैं स्वीकार मुझे इन नियमों पर

पहले दे भेज विभिषण को सिर रख मेरे चरणों पर.

फिर तोड़े सेतु समुन्द्र का. आ सके न कोई लंका में

फिर हनुमान का मान मिटा. भेजे रावण की सेवा में.

उस समय पकड़ा तिनका दांतों में. शरणागत हो इन पावों की

कर जोड़े हाथ मेरे आगे. राम लक्ष्मण भीक्षा मांगें प्राणों की.

अंगद रावण से :- बस यही है या कुछ और अधिक, यह तो मांगें साधारण है.

मैं जाकर उनसे कह दूंगा. चारों बातें साधारण है.

जिन हाथों से [illegible] बान्धा है. वह उसे तुड़वा भी डालेंगे

लंका का भाल विभिषण है. लंका में उसे भेज देंगे.

हो चुकी हानीयां जो अब तक. उन सब को तो हम भर देंगे.

पर हुई एक महा हानी उसे कैसे पूरी कर देंगे.

जब जब तुम घर जाओगे. तब-२ नजरों में आएगी.

जो सरूपनखा की कटी नाक. वह कैसे जोड़ी जायेगी.

रावण अंगद से क्रोध में:- ओ घमण्डी निर्लज्ज. तूने अभी तक मेरा नाम नहीं सुना. जो इतनी ढिठाई करने पर उतर आया है. मैं सरूपनखा की नाक नहीं जो तुम काट सकोगे. मैं रावण हूं रावण. जमीन आसमान पर मेरी धाक है,

अंगद रावण से,, नाम: हां सुना है आपका नाम रावण है. परन्तु एक रावण तो राजा बली को जीतने के लिए पाताल लोक गया था. जिसको बालकों ने घुड़ साल में बान्ध लिया, और एक रावण किसी विधि के चुगल में आया. जिसको पुलिसत मुनी ने बड़ी मुश्किल से छुड़ाया. एक रावण शास्त्रबाहु से लड़ने गया वहां भी मार खाकर आ गया. चौथे रावण को मेरे पिता बाली ने छः मास कांख में दबा लिया. सन्ध्या होने [illegible] ढेले की तरह फेंक दिया. अब बतलाये आप इनमें से कौनसे रावण हैं.

मर्यादा के भीतर ही रह, अधिकार न राड़ बढ़ाने का.

बक वादी तेरा काम नहीं. फिर हो कर समझाने का.

वह दोनो आप निपट लेंगे. जीन में छन रहीलड़ाई है.

तू तो पेड़ो पर उछल कुद. क्यों बक बक यहां लगाई है.

नाटक: तू अभी बच्चा है नदान है, और रावण से अनजान है. मैं वह रावण हूं जीसने कई बार अपने

शिश काट कर महादेव जी प्रदान किया. और मैंने अपनी शक्ति से सारे देवताओं को पराहस्त किया. आज

मेरे बल का सारा संसार सिक्का मानता है. दोहा:. मही डोले गगन कांपे. कदम मेरे जमाने से.

हिल जाते है पर्वत भी जरा सा नव हिलाने से.

मेरे आतंक से काल कलेजा थाम लेता है.

है क्या गीनती में यहां उनकी जीसका तू नाम लेता है.

अंगद रावण से: अहो: यदि ऐसे वीर थे तो शस्त्रबाहु को जीतकर क्यों न नाम पाया. धनुष तोड़ कर क्यों न

बल दिखाया. आह मैं बिवस हूं. नहीं तो तुम्हे भूमि पर पटक कर सभी सेना को मारकर, मन्दोदरी सहित

जानकी को ले जाता. दोहा:. सह है सिर झुकाकर. आज, सब कड़वे वचन तेरे.

पिये है बिष की ~~तरह~~ घुटं, ~~पी तरह~~ पापी कथन तेरे.

अगर बनवास न आता दुत तो लेखा चुका देता

पल में भाव आटे दाल का तुमको चखा देता;

रावण अंगद से:- क्रोध मे,:- वो धुर्त तेरी इतनी ढीठाई, मेरे सामने उन तपसीयों की इतनी बड़ाई.

दोहा:. भटकते फिर रहे आज तक नारी की चीन्ता में.

यों ही मर जाएगें रोते बिलखते घोर बियाबां में.

अंगद, रावण से, क्रोध में:- वो अभिमानी. जीसके भय से हजारो हमारी कांप गये - जीनकी तीखी चितवन से परशुराम

का अभिमान भाग गया. तू उनको डराना चाहता है. और उन पर अपना आतंक जमाना चाहता है वो यह

यह तेरी भूल है.

रावण, अंगद से क्रोध मे, बस बस वो धुर्त चण्डाल. आगे शब्द न निकाल. नहीं तो जीभ तालु से निकलवा दुंगा

जीनके बल पर इतना उछलता है, उनका नाम ही दुनिया से मिटा दुगां.

दोहा: बनुंगा क्रोध की बीजली झुलसा दुगा जला दुंगा

मिटा कर पल में जीवन. लाश कुत्तों को खीला दुगां.

अंगद रावण से क्रोध में :- ओ दुष्ट - इतना अभीमान. मेरे सामने भगवान का यह अपमान.

दोहा :- नीच अपने पाप कर्मों का तमाशा देख ले

(अंगद का पृथ्वी पर हाथ मारना) शक्ति भी छोड़ती है साथ तेरा देखले. ।। (रावण का झुककर गिर जाना रामदल में चलें जाना)

रावण, अंगद से गरजकर !- ओह इतना निर्लज - दोहा : चढ़ गया सिर पर घमण्डी नीच पापी बेहया

इस कदर वो चल आ आया जवां पर मढ़ गया.

याद रख अब अगर बकवास करता जायेगा

ठोकरें गलियों में पाजी शीश तेरा खायेगा.

अंगद रावण से क्रोध में, ओ मुर्ख तुम्हे गाल बजाते शर्म नही आती. ओ स्त्री चोर गद्दार. मन्द बुद्धी पाखंडी ले

अपनी वीरता का एक दर्शया दिखाता हूं और तेरे सामने पृथ्वी पर पांव जमाता हूं

यदि तेरा कोई वीर इसे उठा देगा. तो अंगद सौगन्ध खा कर कहता है. जानकी जी को हार जाऐगा

नहीं तो सीता जी को भगवान के चरणों में पहुंचाना होगा। बोलो है मन्जूर.

रावण अंगद से, कहीं जिद्द से मुकर जाओ, अथवा अपनी शर्त से मुकर जाओ.

अंगद रावण से, यह बोलना तुम्हारा वाहियात है. मर्दों का प्रण प्राणों के साथ है.

रावण सभा से :- योधाओं क्या देखते हो. इसका पांव तुरन्त उखाड़ दो. और इस नामाकुल को पटक

कर पछाड़ दो. दोहा :- इसको इस तरह पीसो कि इसका नाम तक न पा सके

धुल तक उड़कर न इसकी रामादल में जा सके.

रावण मेघनाथ से :- बेटा मेघनाथ तुम जाओ. और अपना बल दिखाओ.

मेघनाथ, खड़ा होकर ,, चलुंगा जीस जमीं पर - उस जगह भुचाल आयेगा

जमीं तो एक तरफ चरख कुहन भी कांप जायेगा

मुजस्सिम काल हूं मैं. यह क्या मेरा ताव लायेगा

भस्म हो जायेगा जो मुझसे नजरें मिलायेगा.

इसे तो एक झटके में कई चक्कर खिला दुगां

पांव तो चीज क्या है इतनी जमीं भी हिला दुगां.

(पांव से लिपटकर) अजब तकड़ेसे पाला पड़ा है और इसमें कोई मेख ठोकदी लगादी ,,

रावण निकुम्भ से:- बेटा निकुम्भ अब तुम्हारा बार है.

निकुम्भ खड़ा होकर:- मैं अपनी वीरता के तुमको जौहर दिखाता हूं

नजर मेरी तरफ रखना पैर कैद्र कर उठाता हूं

हुक्म हो तो इस पांव के टुकड़े बनाता हूं

खबरदार हो बुजदिल मैं तेरी ओर आता हूं.

लिपटकर हिलावे भाई हिलादे अन्यथा दो टुकड़े हो जाऐंगे। हार कर बैठ जाना।

रावण प्रहस्त से:- बेटा प्रहस्त इस नालायक को उठाकर समुन्द्र में फेंक दो.

प्रहस्त खड़ा होकर:- उठा कदम जब मैने. पांव इसका उठाने को

न पायेगी जगह इसकी मुंह दिखाने को.

मेरी ताकत से आ जायेगी. ताकत कुल जमाने की

सम्भल जा अब आता हूं तेरा बल अजमाने को.

लिपट कर: इस लड़के से क्या सिर खपाऐंगे, कोई बहादुर होतो दो हाथ दिखाऐं। हार कर बैठ जाना।

रावण मन्त्री से:- दोहा: देखता क्या है उठा कर फेंक दे आकाश पर

न तो रोये कोई ऐसे बेहया की लाश पर:

मन्त्री रावण से:- दोहा: हुक्म है हुजूर सरकार को फौरन बजा लाऊं

उठा दूं पैर पृथ्वी से. तभी बलवान कहलाऊं.

मन्त्री, अंगद के पांव से लिपटकर:- दोहा: हिलाऊं पैर क्या सारे को भोजन जान कर खाऊं

अगर हो हुक्म तो. एक आन में भूमि भी हिला डालूं.

हार कर बैठ जाना, भाई जब युद्ध भूमि में आएगा तो कुछ मजा भी आएगा

रावण सभा से क्रोध में:- मुझे हैरानी है. आज तुम्हारी ताकत को चिड़ीया चुग गई.

अंगद, रावण को ललकारकर:- खड़ा है सामने अंगद प्रेम अपना मिटा ले तू.

कोई बाकी रहा हो तो उसको भी बुला ले तू.

अभी है वक्त लंका को तबाही से बचा ले तू

शर्म की जा है गर अब भी प्रण अपना पाले तू.

न फिर यह वक्त मिलने का अगर इस वक्त चूकेगा

खतक आंसु बहाएगा जमाना मुंह पर थुकेगा,,

रावण, अंगद से ,, अरे ओ नामाकुल क्यु कैंची की तरह जबान चला रहा है. और तुच्छ के लिए म्यान से निकलता जा रहा है। रावण अपनी जगह से उठ कर। जरा ठहर मै तेरा अभिमान तोडूंगा पांव तो चीज क्या है. तुझे भी उठा कर छोडूंगा। पांव की ओर लपककर। अब अपना सारा जोर लगाले, और पांव को अच्छी तरह से जमाले.

अंगद रावण से :- बस बस माफ रखीये. इस प्रकार मामला साफ नही हो सकता. अगर अपने किये पर पछताते हो तो भगवान के चरणों मैं जावो. वह आपको जरूर क्षमा कर देंगे. हां मैं क्षमा करवाने मे आपकी सहायता जरूर कर सकता हूं.

रावण. अंगद से राधेश्याम :- जा हटजा भाग यहां से जा . अन्यथा बुरा फल पाएगा

मैं अब तलवार चलाबुंगा. जो फिर तु जबा चलाएगा.

उन तपसी बच्चों से कहदे, तत्पर हूं रण करने को

वे उल्टे पैरो घर जावे. क्यों आये करने मरने को.

अंगद. रावण से राधेश्याम :- श्री महाराज नराज न हो. मैं रामादल मे जाता हूं

अन्तिम प्रर्थना और [illegible]

यदि रघुराई की शरण गये तो जीते जी तर जावोगे

अन्यथा अकालमृत्यु होगी वे भांत स्वयं मारे जाएगे.

रावण अंगद से :- अरे पुते तेरी भलाई इसी मे है कि तु यहा से चला जा. और मुझे अपनी सकल न दिखा : बेहुदा बकवास का उतर मेरी जबान से नही तलवार से दिया जाएगा. [illegible]र देखूंगा कि तु युद्ध भूमि मे कितनी देर पांव जमाएगा.

अंगद रावण से : यह तेरी सरासर हिमाकत है. जीन भाईयों के भरोसे कुद रहा है उनमें तो बाते बनाने की ताकत है. खैर अगर तुने अपनी तलवार पर इतना अभिमान है तो हमारी ओर से भी युद्ध का एलान है.

[illegible] ☆ रामादल ☆ सुग्रीव हनुमान लछमण. राम जामवन्त नल नील. पररा

राम सुग्रीव से :- [illegible] बहुत हो गया है, परन्तु अंगद जी अभी तक नही आए न जाने कुछ खली है

[illegible] से :- [illegible] के हट चर्मो के [illegible] मार्ग पर [illegible] बिलकुल

निराधार है क्योंकि उसके सिरपर तो अहंकार का भूत सवार है 156

राम विभिषण से :- हां ठीक है परन्तु हमने तो नीती का पालन किया है वह माने ना माने उसकी इच्छा.

अंगद का दंगल में से आना: हनुमान राम से :- देखिये भगवन अंगद जी आ रहे हैं।

अंगद राम के पांव में गिर कर :- प्रणाम भगवन

राम अंगद से :- चीरंजीव रहो कहो अंगद क्या खबर लाये

अंगद राम से :- भगवन मैंने उसको अनेक बार समझाया. परन्तु उस हठधर्मी ने तो मेरी बातो को मखौल में ही उड़ाया. अन्त में मैंने अपना पैर जमाया, आपके प्रताप से लंका का कोई भी वीर पाव भी हिला न पाया.

राम अंगद से :- धन्य हो, तुम से हमें यही आशा थी.

सुग्रीव अंगद से :- हां अंगद यहां कुछ मुकुट भी गीरे थे. क्या वो तुमने ही फेंके थे

अंगद सुग्रीव से :- हां महाराज वे राजा के चारो गुण थे जो उसका साथ छोड़ कर चले [illegible] अब रावण साम, दाम, दण्ड, भेद, से हीन हो गया है.

राम अंगद से :- तो अन्त में क्या परिणाम निकला

अंगद राम से :- भगवन जब वह नीती के मार्ग पर न आया तो मैं युद्ध का ऐलान कर चला आया.

राम सुग्रीव से :- तो हे वीर सुग्रीव अब युद्ध की तैयारी करो.

सुग्रीव राम से :- जैसी आज्ञा हो प्रभो. परदा अन्दर

रावण का दरबार मेघनाथ मन्त्री अन्य दरबारी

रावण सभा से :- हा रामचन्द्र हमसे डरता है इसलिये बार-2 अपनी खुशामद करता है हा हा हा. यहां कौनसी मेरी कीमत है जो जल्दी मुड़ जायेगी अब तो उसे अच्छी तरह हाथ दिखाऊंगा और लंका पर चढ़ाई करने का मजा चखाऊंगा

मेघनाथ रावण से :- पिता जी यदि ऐसे ऐरे गैरे लंका में आयेंगे तो हम काहे को मुंह दिखायेंगे माना की अंगद का पांव पृथ्वी से नहीं हिला, मगर मुझे तो पूरा जोर लगाने का मौका नहीं मिला.

मन्त्री रावण से :- महाराज अब इन बातों को जाने दिजिये और सेना को *

रावण मेघनाथ से:- बेटा दल का सेनापती हम तुम्हें बनाते हैं. क्योंकि युद्ध का पहला रोग है तुम हर विद्या में निपुण हो.

मेघनाथ रावण से गाना, तर्ज-चलत: पिता जी देखियों ताकत मेरी.

टेक:-

उस रामदल की मेर आग-चाल ना देरा फेरी.

1) सर-सर करते तीर-चाल करुंगा बौछार मैं.
रण में पड़ कूद के कौनपा मात् हार मैं.
बुआ जी का बदला लूंगा सीस लाऊं तार मैं.
रण में ऐसे चालूं जैसे चाल बण का केहरी:- पिता जी देखियों ——

2) शरण उन के जाता हूं, देखूं उनके हाथ मैं.
लाऊंगा युद्ध में ऐसे, दिन की करदू रात मैं.
इन्द्रजीत है नाम मेरा देवी का हूं दास मैं.
पिता जी अब न लाऊंगा देरी:- पिता जी देखियो:-

3) करता हूं प्रणाम पिता जी, युद्ध करूंगा डट-डट के मैं.
मोर्चा बुन्दी जैसी बनाऊं, खतम करूंगा झटके मैं.
करता हूं लड़ाई जाके दुर्गा मां को रट मैं.
मार मार के करदूं मैं सबकी डूबा देरी: पिता जी देखियो——

4) ब्रह्म शक्ति है मेरे पास मैं, वांका बण् खिलारी.
दुश्मन को मैं ऐसे मारूं, ज्यों मारे बाज शिकारी.
बे फिकर रहो आप पिता जी मौत उनकी भारी.
अब करता हूं मैं जाके ने दिन की रात अन्धेरी:- पिता जी देखियो——

मेघनाथ रावण से:- पिता जी अब मैं जाता हूं अब वे फिकर रहो मैं उनका सिर मार सामने लाता हूं।

मेघनाथ परदेपर ललकार कर:- हा हा हा कहाँ है वह अयोध्या के वनवासी अभागा मेघनाथ के मुकाबलेपर आओ।। दोहा:- आये हैं जितने सारे ही मारे जायेंगे

आज सारे पाप के बदले उतारे जायेंगे.

रामा दल

विभिषण, अंगद, राम, हनुमान, सुग्रीव, जामवन्त, नल, नील।

राम विभिषण से:- कुछ मालूम है शत्रु की सेना का सञ्चालन किसके हाथ है।

विभिषण राम से:- हाँ भगवन जानता हूँ आज उनका सेनापति मेघनाथ है:

राम विभिषण से:- क्या मेघनाथ अच्छा होशियार है

विभिषण राम से:- हे राम! रावण को सेना को पूरा एतबार है सेना की मोर्चे बन्दी ऐसी गजब की करता है शत्रु के शहस्त्र बहादुर मरे तो उनका एक मरता है.

राम विभिषण से:- तो ठीक है आज मैं स्वयं ही सेना करूंगा और उसकी मोर्चे बन्दी भर मैं विराम करूंगा

लक्ष्मण राम से:- भ्राता जी आप विश्राम किजिये और मेघनाथ के मुकाबले पर जाने की मुझे आज्ञा दिजिये.

राम लक्ष्मण से:- भाई तू अभी ना समझ है और लड़ाई का पहला रोज है आज की लड़ाई पर दोनों की हार जीत की दारमदार है.

हनुमान राम से:- जब यह खुद अनुरोध करते हैं तो आप क्यों विरोध करते हैं सरकार कोई खतरनाक सूरत होगी तो हम भी साथ हैं.

राम हनुमान से:- बहुत अच्छा यदि तुम सबकी यही इच्छा है तो मुझे क्या इनकार है हनुमानजी तुम लक्ष्मण के साथ रहना क्योंकि मेघनाथ बड़ा (होशियार) मक्कार है

लक्ष्मण राम से पांव में गिर कर:- जब मेरे सिर पर आपका आशीर्वाद है तो मेघनाथ जैसों की क्या हस्ती है

राम लक्ष्मण से:- प्यारे भाई जाओ और अपनी वीरता के जौहर दिखाओ.

लक्ष्मण रामसे :- ऐसी आज्ञा दो भ्राता जी, (परदा) लक्ष्मण हनुमान बाहर, मेघनाथ अन्दर से.

वीर लक्ष्मण → समर भूमि / पहुंचा मेघनाथ

मेघनाथ लक्ष्मण से :- कोनसा वीर मेरे मुकाबले पर आया है। आकर अपनी शक्ल तो दिखाये.

लक्ष्मण मेघनाथ से :- आज मैं ही तेरा स्वागत करूंगा.

मेघनाथ लक्ष्मण से :- राधेश्याम :- यह युद्ध स्थल है वीरों का, खिलवाड़ नही है बच्चो का:

घोर है यहां कृपाणों की, बाजार नहीं है मिष्ठानों का.

यह सस्पत खंभी नाम नहीं, पिता न बाली वानर का है,

यह नहीं शिकार रावण का है, यह बेटा लंकेश्वर का है।

जीत चातों का सुरथा न दुःख, दुख होता उन्हें तोड़ने में.

इसलिये लौट जाओ घर को, खुश है मेघनाथ छोड़ते मैं.

अन्यथा ताड़का वध वाला, अभिमान चूर्ण हो जायेगा.

खर दूषण त्रिशरा के वध का, प्रति घात पूर्ण हो जायेगा।

लक्ष्मण मेघनाथ से - राधे :- लंका पर रघुकुल की आफत, उस कारण आकर खड़ी है.

ऋषियों के युद्ध की ज्वाला, बदला लेने के लिये खड़ी है.

इसलिये सम्भलजा इन्द्रजीत, यह इन्द्रीयजीत बढ़ रहा है.

ऋषियों के काल चतु पे, शायद जग जीत चढ़ रहा है।

वह नहीं कहीं दब सकता है, जो बल रखता है मुष्ठों का.

रघुवंश आन का पूरा है, कर देगा चूरा दुष्टों का।

मेघनाथ लक्ष्मण से :- बाण छोड़कर :- ले अब यह तीर तेरे लिये मौत का पैगाम लाया है।

लक्ष्मण मेघनाथ से :- वो दुष्ट देख यह तो खाली जाता है, हनुमान का साथे आता.

एक पुरुष मेघनाथ से :- कहिये महाराज लड़ाई का क्या है, आपका तो शरीर जख्मों से निढाल है.

मेघनाथ एक पुरुष से :- ऐसा कौन सा उपाय है जो मैंने अपनी ओर से कम कर रखा है किन्तु इस

लादे २ तो नाक में दम कर रखा है, इस शक्ति वाण को क्यों चो-चो कर चीमोंगे पर देख-२ कर जीवों

एक पुरुष मेघनाद से:- / मेघनाद एक पुरुष से:- इसको भी कई बार काम में ला चुका हूँ और अच्छी तरह अजमा चुका हूँ

एक पुरुष मेघनाद से:- इससे तो पाया जाता है कि लक्ष्मण इस विद्या का उस्ताद है.

मेघनाद एक पुरुष से:- उस बेचारे कि तो क्या बुनियाद है. पर हनुमान को इसकी रोकथाम याद है

एक पुरुष मेघनाद से:- हनुमान को दूर करना मामूली बात है

मेघनाद एक पुरुष से:- तो मैदान हमारे हाथ है. एक पुरुष हनुमान को लड़ाई, अन्दर चले जाना

मेघनाद लक्ष्मण से:- ताक लगाकर वाण हाथ में:- सोचे: अब तक मैं खेल खिलाता था, अब खा जाने की बारी है

इस शक्ति वाण का रूप न्यार, आ पहुंची मृत्यु तुम्हारी है

यह ब्रह्म शक्ति है ब्रह्मा की, जो देव लोक से पाई थी.

जिस समय इन्द्र को जीता था, उस समय हाथ में आई थी,

इसका मारा बेसुध होता, दिन उगते ही प्राण गवाता

ज्यों ही तन पर पड़ती है, तन मृत्यु तुल्य हो जाता है

इसलिये सम्भल जो रघुवंशी, तू आज न बचने पायेगा,

वाण छोड़ना → यह इन्द्रजीत भूमण्डल पर, अब लक्ष्मण जीत कहलायेगा।

लक्ष्मण मेघनाद से:- बोले:- कितने भी आज पतित हो तुम, पर ब्रह्मण वंश तुम्हारा है.

यह ब्रह्म शक्ति का आदर है, जिससे सिर झुका हमारा है.

अन्यथा तुम्हारी ताकत को, मिट्टी धूल कर देते.

होता न प्रकृत ब्रह्मण का, तो चकना चूर कर देते।

क्या चिन्ता है ब्रह्म फांस हाथ, यह कभी हारा जाता है,

फिर चमकेगा कुछ घड़ियों में, अब चन्द्र ग्रहण आ जाता है

लक्ष्मण का गिरना, मेघनाद का उठाने का यत्न:- कर: अब इसे उठा कर लंका में ले जाऊँ

और पिता जी को जाकर दिखलाऊँ। हाथ लगाकर: उठाना चाहता हूँ, यह उठाया नहीं जाता. मैं. मृतक शरीर है या कोई चोला नजर आता है

मेघनाथ :- "चलो," हंसकर। इस मिट्टी को ले जाकर क्या करूंगा, विजय शंकर की, चले जाना सीन-चालू

हनुमान का आना, लक्ष्मण से :- हे विधाता, यह क्या कर दिखाया सारी आशाओं को एक दम मिट्टी

में मिला दिया। अब भगवत के सामने क्या मुंह लेकर जाऊंगा, लक्ष्मण को उठाना, दरबार सूचना सीन

राम, सुग्रीव, अंगद जामवन्त सब खड़े हैं। रामादल में प्रवेश हनुमान का।

राम हनुमान से :- हे प्यारे हनुमान यह क्या है। लक्ष्मण को क्या हो गया,

हनुमान राम से रोकर :- भगवत भाग्य फूट गये आशाऐं सब साथ छोड़ गई। तकदीर धोखा दे गई।

दोहा :- बैठते थे जिसके सहारे, वह सहारा गिर गया,

नाव आशाओं पर अपनी, आज पानी फिर गया,

लक्ष्मण मूर्छा "रामादल"

राम लक्ष्मण का सिर गोद पर रख कर : हाय प्यारे भाई उस आपती के समय ऐसी ही बेवफाई

आखीर जिस बात से डरता था, वही आगे आई।

विभीषण राम से :- हाथ पकड़ कर। भगवत मेरे ख्याल में तो लक्ष्मण सही सलामत है, (क्योंकि) इसके

और इनके चेहरे की बड़ी अयानत है,

राम का गाना :- विलाप :- ऐ लक्ष्मण वीरत जाग जरा तुझे कैसी निन्द्रा आई है, :- टेक :-

1) वो कहां लगी भ्राता शक्ति, जो प्राण हरण का बल रखती,

जिसने की है खाली अमित, जो तुमसे लड़ जय पाई है :- ऐ लक्ष्मण वीरत-——

2) मैं तेरे ^(देख इस) लक्षण को, रावण को ^(कहूं क्या) भक्षण को,"

दे दिया था राज विभीषण को, यह बाणी झूठ कराई है। ऐ लक्ष्मण :-

3) मैं किस तरह अवध में जाऊंगा, माँ को क्या मुंह दिखलाऊंगा,

किस किस को क्या सुनाऊंगा, नारी हित खोया भाई है" ऐ लक्ष्मण-------

4) चेहरा तेरा हो ^(गया) मन्द, विपता में पड़ गया श्री राम-चन्द्र,

उठ रे भईया हो आवे आनन्द, श्री चन्द ने कृती गाई है," ऐ लक्ष्मण :-——

राम रो रो कर : लक्ष्मण से :- लक्ष्मण के मुंह पर हाथ फेर कर) लक्ष्मण प्यारे लक्ष्मण

उठो अब तो बहुत सो चुके हो, "रोकर" अफसोस भैया, तुम्हारे हाथ पांव तो ठण्डे हो चुके हैं "मस्तक चूम कर" आह प्यारे भाई, कर चले हम से जुदाई, आह मेरी आंखों का नीर खत्म हो गया, हाय मेरे जीवन के सहारे, करो विचार मेरी हालत जार-जार रो रहे हैं जिसके लिए मैं रोता हूँ, वह तो गहरी नींद सो रहे हैं न करवट लेते हैं न किसी बात का उत्तर देते हैं (लक्ष्मण का मुंह चूम कर) मेरे वीर तुमको किस दुष्ट की नजर खा गई जो ऐसी हालत बनी की आ गई,

सुग्रीव राम से :- भगवत कुछ चाहे जो, रोने से कोई नहीं रो सकता, किन्तु इस प्रकार लक्ष्मण जिवित नहीं हो सकता, इसलिए सोच समझ कर इनका इलाज किजिए और इस रोने को त्याग दिजिए

राम सुग्रीव से :- आह किसका इलाज और किसकी दवाई, लक्ष्मण ने तो अभी तक आंख भी नहीं हिलाई, वो अन्यायी मेघनाथ तेरा वार चल गया, और लक्ष्मण को घायल करके जिवित निकल गया! वो कमबख्त रावण तेरे घी के दीपक जल गये और काल के दूत तेरे सिर से टल गये "रोकर" ओ प्यारी सीता अपने छुटकारे की आस छोड़ और रावण की कैद में दिन तोड़,,, हे सुग्रीव जावो और अपना राज सम्भालो, वीर अंगद तुम भी जाओ और अपने चाचा के साथ राज काज में हाथ बटाओ, प्यारे विभिषण मैंने जो लंका का राज दिलाने का वचन दिया था उसको मैं पूरा करने से लाचार हूं। इसलिए क्षमा मांगने का मोहताज हूँ।

विभिषण राम से :- भगवत मुझे शर्मिन्दा न किजिए, चूल्हे में पड़े राज और भाड़ मे पड़े लंका अगर लक्ष्मण जी ठीक हो जावें तो एक लंका क्या हजार लंका इसी जगह कुर्बान करदूं।

राम हनुमान से :- यह कौन खड़ा है. हनुमान.

हनुमान रोकर :- हां कृपा निधान.

राम हनुमान से :- भाई रोते क्यों हो, तुम्हारी आत्मा की इच्छा पूरी हो गई किसी का क्या दोष है मेरी किस्मत ही सो गई

हनुमान राम से "रोकर" :- भगवत निःसन्देह मैं सख्त गलती खा गया और राक्षसों के धोखे में आ गया "तलवार लेकर" लिजिये भगवत, मुझे भी लक्ष्मण के बराबर सुला दिजिये

राम हनुमान से :- नहीं प्यारे हनुमान यह कलंक मुझ पर न लगावो, तुम्हारा कोई कसूर नहीं

राम का गाना लक्ष्मण से :- उठ जाग मुझे पहचान रे लक्ष्मण बीर- बीर- बीर

तुम बीत के लक्ष्मण, कौन बचावे धीर- धीर- धीर !" टेक"

1) टुक आंख खोल है भाई, तुझे नीन्द किधर से आई.

हे लक्ष्मण तेरी जुदाई, जीगर मत चीर, चीर- चीर --- तुम बीत के----

2) तज घर सब राज अमीरी, ली मेरे साथ फकीरी,

था यह मिलाप आखीरी, था इतना सीर- सीर सीर- तुम बीत के------

3) तुम तोड़ मेरे से नाता, कहां चल दिये मेरे भ्राता,

जब सुनेगी अपनी माता, लोगा तीर- तीर- तीर तुम बीत के-----

4) मांगेगा राज विभिषण, क्या जवाब दूंगा रे लक्ष्मण,

बरबाद कर गया दुश्मन, → दुष्ट, वे पीर- पीर- पीर-- तुम बीत के---

5) अभी भरत ने मिलने आना, उनको तू मिलकर जाना,

मेरी आखों में नहीं पानी, तब तक नीर- नीर- तीर-- तुम बीत के---

सुग्रीव राम से :- भगवत युद्ध में लड़ना मरना मारना घायल होना एक मामूली सी बात है किन्तु योगियों की भान्ति रोना धोना वाहियात है. आप धैर्य रखो, अब लक्ष्मण जी को जिवीत करायेंगे और विभिषण जी को लंका का राज्य दिलायेंगे "

राम सुग्रीव से :- राधेश्याम :- बनवास मिला था जब मैंने, तो डबल उठा था भाई यह.

भाई की सेवा के लिये, तैयार हुआ था भाई यह"

मैंने तो मां की आज्ञा से, शाही पोशाक उतारी थी,

पर इसने प्यारे भाई पर, महलों के ठोकर मारी थी.

राम का गाना लक्ष्मण से :- प्रदेशियों से ना अखियां मिलाना :- मेरे भईया (प्यारे) तेरा ऐसों में जाना,

सहत सकेगा ये सारा जमाना. "टेक"

1) युद्ध में तू ना जा मता बार- बार किया था, रोका था तुझे को इन्कार किया था,

क्या इसलिये पकड़ा तुने परदेस मेरी में आना! - मेरे लईया तेरा - - - - - -

२) पूछेगी माता तेरी क्या मैं बताऊं, रस्ता बतादे मुझे किधर को मैं जाऊं,

पूछेगा भ्राता लखन कहा क्या बताना!+ मेरे लईया तेरा - - - - - -

३) माता ने मुझे उपदेश दिया था, चुमा था माथा तेरा प्यार किया था,

तीनों जा रहे थे तो तू अकेला न आता!+ मेरे लईया तेरा - - - - - -

४) चलते समय तुने इरादा किया था, साथ निभाने का वादा किया था।

किये हुए वादों को कभी ना भूलाना, + मेरे लईया तेरा - - - - - -

५) बनों में जब से हम तीनों मिले थे, तरह-तरह के फूल खीले थे।

कह नहीं सकता (हूं) मैं, इनका मुरझाना, + मेरे लईया तेरा - - - - - -

राम का नाटक :- हाय अफसोस मेरा रोता चिल्लाना सब फजूल गया, "मस्तक-चुमकर" हे भ्राता तुम जबान को तो हिलाओ, और मुझे एक बार भाई कह कर तो बुलाओ! "बेड़ी हिलाकर" लक्ष्मण लक्ष्मण आहें मेरे प्यारे लक्ष्मण, तुझे मेरी अवस्था पर तरस नहीं आता इस प्रकार यदि किसी वैरी के पास जाता और जाकर चिल्लाता तो कुछ न कुछ बकसवा लेता। वो फलक कज रफ्तार मुझ पर पत्नेश्वर की मार (शस्त्रों को लेकर) जाबो जाबो चुल्हे मे पड़ो तुम, जब समय (अवसर) पर तुम काम न आए तो। कौन मूर्ख है जो तुम्हारा बोझ उठाए फीरे" "नहीं नहीं अभी नहीं, भाई का बदला लेकर छोडूगा। और कपटी मेघनाथ का अच्छी तरह अभिमान तोडूंगा अत्याचारी मेघनाथ अब समझले तेरा काल तेरे सिर पर मंडला रहा है।

(लक्ष्मण) सुग्रीव राम से :- भगवन जरा तबियत को सम्भालिये। प्रथम तो लक्ष्मण ईश्वर की दया से तन्दुरस्त है यदि मान भी लो। आपका ख्याल दरुस्त है फीर रण भूमी हुआ तो क्या करता है या तो शत्रु को मारता है या खुद मरता है फीर लक्ष्मण जी की ओर से आपका यह फिक्र करना व्यर्थ है और ऐसी अवस्था में जीत का मुंह देखना सख्त मुहाल है!

राम सुग्रीव से :- हां भाई ऐसा कौन है जो उपदेश करना नहीं जानता मैं परन्तु ऐसा कोई है

जो दूसरों का दुःख अपने जैसा जानता हो, मल कुम्भी बाली के मृतक शरीर पर प्यारे मार-मार

कर रो रहे थे, परन्तु वह समय तुमको याद नहीं, के सुग्रीव लक्ष्मण जैसा भाई तो देश में दीपक

लेकर ढूंढने से भी नहीं मिलता, प्यारे लक्ष्मण एक बार तो मुंह से कुछ बोलो, प्यारे लक्ष्मण !-

दोहा :- कोई कहता दिवाना कोई कहता है सौदाई,

मैं सबसे यदि कहता हूँ ठीक है भाई।

विभीषण राम से :- भगवन आपको विश्वास है कि यों रोने धोने से कोई सन्तोषजनक

परिणाम होगा, अथवा लक्ष्मण जी को कुछ आराम होगा,,

राम विभीषण से :- हे प्यारे विभीषण इस बात को कौन नहीं जानता पर क्या करूं मन नहीं

मानता, पर आप ही कुछ और बतायें।

विभीषण राम से :- लंका में एक सुषेण वैद्य विख्यात नाम का है जपते,

वह औषध पूर्ण जानता है, सब भांति काम का है जपते।

मेरा जाना तो ठीक नहीं, जाके आने में दुविधा है,

जो लंका से परिचित हो, वही उसे ला सकता है।

राम हनुमान से :- प्यारे हनुमान जी इस समय और कौन जायेगा, और यह कठिन काम किसी

के बस नहीं आयेगा,

हनुमान राम से :- जैसी आज्ञा हो प्रभो ! (परदे के अन्दर से हनुमान जी का सुषेण वैद्य को लाना, भूला देना)

राम का गाना :- उठना जरा हे वैद्य जी देख मेरा जाता बहा,, "टेक"

1) दृष्टि जरा कृपा कीजिये तेरे चरणों में सिर रखा है,

मेरे दिल में चोट लगी, दुःख मेरे से न सहा है. उठना जरा अ वैद्य ----

2) लाने में राज विभीषण, क्या सिर में दूंगा लक्ष्मण,

सीता भी रहेगी कैद में, झूठा मेरा वादा रहा. उठना जरा वैद्य जी ----

यहाँ लाने का आपका यही मतलब है वैद्य जी,

3) ~~साथ आने का लेना, क्या मतलब था लक्ष्मण,~~

श्री राम ने तेरे च्यों, चरणों का अंगूठा गहा। उठना ---- "वैद्य का उठना।"

वैद्य का नाटक राम से :- मैं कहां आ गया हूं मुझे कौन लाया है, मैं तो लंका में सोया हुआ था
तुम बोलते क्यों नहीं

राम वैद्य राज से :- हे वैद्य राज आप रामदल में आये हुवे हैं, आप डरिए मत, हमने आपको

बुलाया था। मेरे भाई लक्ष्मण बेहोश हैं। आप नाड़ी देखें दवा बूंटी किजिये।

वैद्य राम से रामेश्वरम से :- मैं वैद्य दशानन के घर का, किस तरह आपका काम करूं,

गलत होगा यदि वैरी को लंका पति के आराम करूं।

जिसमें प्रत्यक्ष बुराई है, वह कैसे धर्म किया जावे,

हे राम आज्ञा देते हो तो, इस समय अधर्म किया जावे।

राम वैद्य से :- जिस धर्म हेतु निज राज्य गया, जिससे पूज्य देव का मरण हुआ,

जिस धर्म हीप भरत हुआ, सीता प्यारी का हरण हुआ।

उस धर्म सत्य पर लक्ष्मण जी, मरजाये तो मरजाये,

आवाज यही होगी अपनी, हां धर्म न किसी का जाये।

वैद्य राम से रामेश्वरम :- हे नाथ धर्म-चर्चा की थी, केवल इस समय परीक्षा की,

अन्यथा दास तो करने आया है स्वामि की सेवा को।

प्रभु सचमुच हैं धर्म अवतार, मैं दर्शन पाकर धन्य हुआ,

मेरे जड़ जीवन जड़ शरीर, इन शब्दों से चैतन्य हुआ। "वैद्य जी नाड़ी देखकर" ओह बड़े गहरे घाव

राम वैद्य से :- क्यों वैद्य जी उम्मेद है या बिलकुल ~~उम्मीद~~ आस नहीं

वैद्य राम से :- अवस्था तो अच्छी है, किन्तु जिस औषध की जरूरत है, वह मेरे पास नहीं है।

राम वैद्य से :- वह कौन सी औषधी है। सम्भव है खोज करने से मिल जावे।

वैद्य का गाना राम से :- न मेरे बस की बात, ना मेरे पास दवाई "टेक"

1) कहता मुनी रे सुनो वैद्य पुकारा,

कोई विख्यात कहां जावन हारा,

वह तो सात सौ कोस बताई। + ना मेरे - - -

2) कोई (वैद्य) बतो रे तुम जल्दी रे जावो,

दिन निकलने से पहले रे आओ,

देना ना सूरज दिखाई:- ना मेरे बस------.

3) वे ऐसी है बूंटी ना गोटे से ऊंची,

कली-कली रे भवरा रस सींची,

देती है जगती दिखाई:- ना मेरे बस-------

वैद्य राम से राधेश्याम:- सूरज उगने से पहले ही, मिल जावे जड़ी तो जीवन है

अन्यथा असम्भव है उठना, विष ने निर्जिव किया तन है.

अत्यन्त दूर है औषध्य वह, आ सकती नहीं रात ही में,

ऐसा कौन है योद्धा वह, जो लाए इसे रात ही में,

[illegible] माता हनुमान से तर्ज "लावनी" हनुमत डोले नैया डोले, तुही लगा दे पार रे,

बूंटी लावो बचावो भईया को "टेक"

1) ना जाने किस वैरी ने ये ऐसा बाण चलाया है,

आधी रात बीत जाने को आई अब भी होश नहीं आया है

नैया ना डोले वाज बिन खोले, (अब) तुही सुनले पुकार रे,, बूंटी लावो-----

2) जन्म तेरा साथ (गुण) ना भूलूं, जो तुने साथ निभाया है

युग-युग में तेरी पूजा रे होगी, (तूने) ऐसा नाम कमाया है

जल्दी तैयार होले लंका से पार होले, तेरी रक्षा करेगा करतार रे---
बूंटी लावो-----

हनुमान वैद्य से राधेश्याम:- भूतल में हो पाताल में हो, पर्वत में हो या सागर में हो,

लाएगा दास अभी उसको, चाहे हो ब्रह्मा के घर में,

बतलाओ उसका रंग रूप, किस ठौर हाथ वह आएगी,

रघुराई अगर सहाई है तो, रात रहे आ जाएगी,

वैद्य हनुमान से "शर्ले एगन":- अच्छा बलवीर बढ़ो आगे, तुम लेवोगे औषध वह,

उत्तर में जो द्रोण गिरी है, उस पर पाएगी औषध वह,

संजीवनी उसको कहते हैं, ज्वाला की भांति चमकती है

यदि भोर तक नहीं आई, तो जान नहीं बच सकती है।

हनुमान वैद्य से:- या तो बूटी लेकर ही आऊंगा, नहीं तो तुम्हें शक्ल नहीं दिखाऊगा,

रावण का दरबार

कालनेमी, चर्चा,

रावण गाना सुनकर:- वाह वाह आज तो आनन्द आ रहा है, बेटा मेघनाद तु वास्तव में बलवान है लक्ष्मण को मारना तेरा ही काम था, अब राम अकेला क्या करेगा स्त्री और भाई के वियोग में सड़ मरेगा हा: हा: हा: हा: हा:

मेघनाद रावण से:- अभी क्या देखते जाईए पिता जी. एक-एक की बाती को इस प्रकार तोडूंगा, जितने लंका पर चढ़ आए हैं उन्हें एक भी जीवत नहीं छोडूंगा।

रावण मेघनाद से:- क्यों नहीं मुझे तुमसे यही आशा थी,

दोहा: युद्ध में करके पराजीत एक दीन राम को.

मैं मुझे विश्वास रोशन करेगा मेरे नाम को.

दूत रावण से:- महाराज की जैय हो! रामादल में लक्ष्मण के रोग का उपचार किया जा रहा है। रावण दूत से:- क्या है! क्या बकते हो कैसा उपचार किया जा रहा है।

दूत रावण से:- हां महाराज संजीवनी बूटी लाने के लिये, हनुमान द्रोणगिरी पर्वत पर जा रहा है यदि हनुमान प्रातः काल से पहले बूटी ले आयेगा, तो लक्ष्मण अवश्य जीवत हो जायेगा।

"रावण कालनेमी को याद करना," कालनेमी का हाजिर होना,

रावण कालनेमी से:- देखो कालनेमी तुम लंका के पुराने हितैसी और आज्ञाकार हो इसलिये जल्दी जाओ. और कपट धोखे का जाल बिछाओ, हनुमान संजीवनी लाने के लिये द्रोण गिरी पर्वत पर जा रहा है, तुम मार्ग में पहुंच कर कोई माया की जाल फैलाओ जिससे वह पर्वत पर

ना पहुंचने पाऐ और सूर्य निकल आऐ।

कालनेमी: जैसी आज्ञा हो महाराज। :परदा:-

कालनेमी रंगमंच से:- हां द्रोणाचल पर जाने का रास्ता यही है मैं अपनी माया से साधु का

भेष बना कर अपना आसण जमाता हूँ "साधु के वेष बनाकर बैठ जाना

राम: राम! राम: राम! दया सन्धु करूणा का भण्डार. तूही निराकार, तूही जीवों का अधार

हनुमान का दंगल से आना स्टेज पर आकर दंगल की तरफ मुंह करना आह प्यास बहुत लग रही है

सामने किसी मुनी का सुन्दर आश्रम है चलूं और वहां जाकर जल पीऊं।

कालनेमी हनुमान को आते देख कर:- जय कौशल्या सुत श्री रामचन्द्र की जैय संकट मोचन

पतित पावण भगवान की जय हो.

हनुमान कालनेमी से:- हाथ जोड़ कर, "प्रणाम मुनीवर"

कालनेमी हनुमान से:- (मुनीसब आज कर) चरजीव रहो कल्याण हो.

हनुमान कालनेमी से:- मुनीराज आज कल रावण राम संग्राम हो रहा है उसका क्या परिणाम होगा

कालनेमी हनुमान से:- हां, यह संग्राम मैं यहा ज्ञान दृष्टी से साक्षात देख रहा हूँ, निःसन्देह

राम की जीत और दुष्टें का संहार होगा।

हनुमान कालनेमी से:- धन्य हो महाराज. अच्छा मुनीवर मुझे प्यास लग रही है कुछ जल

हो तो मेरी प्यास बुझा दिजिऐ।

कालनेमी हनुमान से:- (कमण्डल देकर) इस में कुछ जल है तू इसे पीकर अपनी प्यास बुझा

लिजिऐ. और फिर उपदेश लो.

हनुमान कालनेमी से:- हे मुनीवर इस थोड़े जल से मेरी प्यास नहीं बुझेगी.

कालनेमी हनुमान से:- अच्छा तो सामने सरोवर है उस पर चले जावो और अपनी प्यास बुझाओ

परन्तु लौट कर आना. गुरु मन्त्र लेते जाना.

हनुमान का परदे के पास पहुचना, उंगली का पांव पकड़ना,

हनुमान :- हे हे मेरे पाव के चिमट गया! "हनुमान का पांव मारना" असली रूप में डंकनी.

डंकनी हनुमान से :- धन्य हो राम भक्त हनुमान तुम धन्य हो।

हनुमान डंकनी से :- तुम कौन हो यहां किस प्रकार आई हो.

डंकनी हनुमान से :- हे नाथ मैं स्वर्ग की अपसरा हूं. मुनी के शाप से डंकनी बन कर इस तालाब में पड़ी हुई थी. आज आपके चरण छूकर मेरा कल्याण हो गया है. देखियो महाराज यह मुनी नहीं है यह रावण का भेजा हुआ राक्षस है जो आपके मार्ग का (~~रस्ता~~) बाधा डालने के लिऐ मुनी का भेष बना रखा है. आप इससे सावधान रहें और अब मैं तो अपने लोक मैं जाती हूं

हनुमान का कालनेमी के पास पहुंच कर :-

कालनेमी हनुमान से :- आवो हनुमान बैठो मैं तुम्हें गुरू मन्त्र देता हूं.

हनुमान कालनेमी से :- नहीं महाराज पहले गुरू दक्षिणा ले लिजिऐ और फीर उपदेश दिजिऐ.

हनुमान का कालनेमी के मुक्का मारना (कालनेमी का मरजाना) कालनेमी: अरे रे मैं तो मर गया, दुष्ट का साथ देकर

लक्ष्मण मूर्छा रामादल "सीन चालू" सभी बैठे होते हैं:

राम लक्ष्मण से :- उठो भाई गले से लगो, दुःख सहा नही जाता है, आखों से आंसू बहे मन है सन्तोष नही होता है, लक्ष्मण मेरे जीवन के सहारे, लक्ष्मण मेरी कामनाओं की तस्वीर तुम कहां हो तुम्हारा वह सच्चा प्रेम कहां है, सहन संकट किये दुनियां के वास्ते तुने. भूने है फूल भी राह के मेरे वास्ते तुने ओह रात भी पंख लगाऐ दौड़ी जा रही है, न जाने इसे क्या मौत खा रही है. ज्यो-ज्यों रात खत्म होती जाती है दे. सूर्य देवता तू संसार के वास्ते प्रकाश लाऐगा परन्तु तेरे उदय होते ही. लक्ष्मण सदा की नींद सो जाऐगा परमेश्वर के वास्ते कुछ तो यत्न बना ले, और थोड़ी देर के लिऐ अपने आपको कहीं छुपा ले अन्यथा आपकी गती का यही हाल है तो हनुमान जी का सही वक्त पर पहुंचना सख्त मुहाल है। "परदा"

हनुमान का बूंटी लाना

:भरत: अयोध्या सीन आरम्भ :हनुमान: पहाड़ उठाऐ हुऐ आना.

भरत "मन में" ! यह कोई राक्षस है जो पहाड़ उठाऐ जा रहा है. यह अयोध्या पर न डाल दे

अब मैं अपना कुशल बाण मारता हूँ! बाण का मारना स्टेज पर!

हनुमान भरत से:- हाय राम! मुझे आप क्षमा करना. सही वक्त पर न पहुंच पाऊंगा

भरत घबरा कर हनुमान से: आप कौन हैं राम का भक्त बड़ी भूल हुई है विधाता

क्या मैं सारे जीवन राम से बैर करता रहूंगा! रोकर: यदि मैं मन कर्म से प्रभु के प्रति सच्चा प्यार रखता हूँ तो आप इस बाण की चोट से मुक्त हो जावें. और सारी थकान खो कर राम का हाल सुनाओ. उने एक बार फिर बोलो!

हनुमान भरत से: जय कौशल्या जी राज भगवान श्री रामचन्द्र की जय!

भरत हनुमान से:- जय लाखों बार जय कहो कपिराज तुम कौन हो यह पर्वत उठाऐ कहां जा रहे हो

हनुमान भरत से:- कुछ न पूछो महाराज, इस समय रामादल पर बहुत संकट आया है मेघनाथ के शक्ति बाण से लक्ष्मण मूर्छित हो गए हैं मैं उनके लिए संजीवन ले जा रहा हूँ अब लंका की ओर जा रहा था हे तात मैं किष्किन्धा नरेश सुग्रीव का मन्त्री पवन सुत हनुमान हूँ

भरत हनुमान से: हे देव मैं कितना अभागा हूँ मैंने संसार में जन्म ही क्यों लिया, हनुमान से कपिराज तुम्हें जाने में देर लगेगी. इसलिए पर्वत सहित मेरे बाण पर चढ़ जाओ. और तुरन्त लंका में जाकर प्रभु का संकट मिटाओ! "हनुमान का बाण पर पाँव रखना"

हनुमान ~~नहीं महाराज~~ भरत से!- नहीं महाराज मैं आपके प्रताप से बाण समान ही जाऊंगा और प्रभु के वास्ते पवन बन जाऊंगा!

भरत सीन समाप्त, "रामादल" लक्ष्मण मूर्छा चालू:-

राम का गाना:- नैया तो रे नैया डूब चली मझधार, "टेक"

१) नल नील अंगद सुग्रीवा तुम क्यों हो बेजार.
अपने अपने जावो वतन को, अवध पति गया हार. : नैया तो रे नैया:-

२) विभिषण को दिया राजतिलक और झूठा हुआ करार.
निशचर कुल की जीत हुई. और हुई हमारी हार. नैया तो रे नैया-

३) रघुकुल को दाग लगा, और जीने को धिक्कार.

एक औरत के वास्ते, भाई का हुआ संहार. भैया तो भैया ----

4) अशोक बाग में जनक दुलारी मर जायेगी टक्कर मार
दोनों भाई साथ जलेंगे करो चिता सब तैयार ! — भैया तो भैया

दोहा :- अकेली लकड़ी ना जले, ना उजाला हो.
लक्ष्मण भाई मार के, राम आज अकेला हो.

राम लक्ष्मण से :- दोहा राधेश्याम :- लक्ष्मण ही नहीं तो, जीने से क्या काम
(जब)
बन्धुवरों तुमसे विदा, होता है अब यह राम,
इतना करना हम दोनों की, छातियां मिला देना भाई.
एक ही वस्त्र में दोनों को, कसकर लीपटा देना भाई,
यदि चिता बनानी मुश्किल हो, तो जल में यहां बहा देना
जल निधि की ठण्डी लहरों में, दोनों को साथ सुला देना.
दोनों के रुधिरों से, इतना लिख देना सागर के तट पर.
भाई भाई की यादगार है, इसी सागर के मरघट पर,

रजावन्त सिंह :- "राम" आकाश की ओर देख कर, सुग्रीव जी ऐसा प्रतीत होता है सूरज निकलने वाला है क्योंकि पूर्व मे उजियाला है :- वो गजबी सूर्य जरा ठहर नहीं तो गजब हो जायेगा

सुग्रीव राम से :- नहीं भगवन ऐसा क्या अन्धेर है. सूरज निकलने में अभी बहुत देर है

राम लक्ष्मण से "रोकर" :- बोलो लक्ष्मण बोलो. कुछ अब मुंह से बोलो. हां मैं क्या जानता था कि बन में भाई का वियोग होगा. यदि मैं यह जानता तो पिता के वचनों को कभी नहीं मानता.

दोहा :- कुश बन कर ही जी लेता, सहन करता बुराई को.
जगत की गालियां सहता, मगर खोता न भाई को।

सुग्रीव राम से :- हनुमान को आते देख कर ! देखिये भगवन हनुमान जी चले आ रहे हैं और बड़ी शीघ्रता से कदम बढ़ा रहे हैं !

हनुमान का पहुंचना सब वानर प्रसन्न हो कर "बोलो पवन सुत हनुमान की जय" हनुमान राम को प्रणाम
भगवन

राम हनुमान से:- धन्य हो केसरी नन्दन तुम धन्य हो! मैं आज तुम्हें वरदान देता हूँ

कलयुग में तुम्हारी घर घर में पूजा होगी

सुषेन बूटी लेकर "लक्ष्मण के मुंह में टपकाना:- लक्ष्मण की चेत हो जाइए, लक्ष्मण का सचेत होना कार्य समाप्त

(४) "आच्छादित शत्रु"

राक्षस का दरबार मेघनाथ, परहस्त मन्त्री

रावण मन्त्री से:- महामन्त्री दरबार में गाना पेश करो:-

मन्त्री रावण से:- जैसी आज्ञा हो महाराज" गाने वाली अपसरा दरबार में हाजिर हो.

रावण सभा से:- हां हां लंका की शान को क्या बात है

दोहा:- बन चुके हैं दास मेरे, सब रंक से लोपाल तक.

जा गडी है नींव मेरी, राज्य की पाताल तक,

सामने जो आ गया फौरन मसल डाला गया·

सिर उठाया जिसने उसका सिर कुचल डाला गया,

युद्ध भी चलता रहे आनन्द का दरबार

रण के बाजे भी बजे. पायल की झनकार भी. वाह संगीत भी क्या जादू है

दूत नागर रावण से:- महाराज की जय हो. लक्ष्मण की मूर्छा खुल गई है अब शत्रु

फिर युद्ध की तैयारी कर रहे हैं,

रावण दूत से:- क्या कहा मूर्छा खुल गई

दूत रावण से:- हां महाराज.

रावण सभा से:- ओह अनर्थ हो गया बना बनाया सब काम बिगड़ गया

मेघनाद रावण से:- पिता जी कुछ परवाह नहीं जिन भुजाओं ने उसे मूर्छित उससे मूर्छित किया था, वे भुजाएँ अब उसे सुर पुर पहुंचा देंगी।

रावण मेघनाथ से:- पहले मुझे कुछ सोचने दो, सब लोग जाओ और आराम करो

सब का चले गया, रावण अकेला :- अब क्या करूं और इस संकट को कैसे टालूं

बस-बस अब उचित यही है कि कुम्भकरण के शयन ग्रह में जाऊं और उसे जगा लाऊं

यदि युद्ध भूमि में चला गया तो सबको काल समान खा जायेगा ! "परदा"

कुम्भकरण का आगमन

रावण मन्त्री से :- महा मन्त्री आप कुम्भकरण को जगाओ, जिस तरह सके जल्दी जगाओ,

मन्त्री रावण से :- जैसी आज्ञा हो महाराज "मन्त्री कुम्भकरण से" महाराज जल्दी जागिये

लंका पति तशरीफ ला रहे हैं. चाचा कुम्भकरण जल्दी उठो । महाराज आए हुए हैं

रावण मन्त्री से :- इसको ढोलक बाजे से जगाओ अगर नहीं जागे तो हाथी इसके नाक

में भर दो, "कुम्भकरण अंगड़ाई लेकर" पानी लाओ मदिरा लाओ (खा पीकर) वह

पापी कौन है जिसने मुझे कच्ची नींद से जगाया है ।

रावण कुम्भकरण से :- हे भाई मुझ पर महान संकट आया है, इसलिये तुम्हें जगाया है,

कुम्भकरण रावण से :- कौन रावण, कहो भाई ऐसी क्या आपत्ति आई जो तुम्हारी

दशा इतनी मलीन बनाई

रावण कुम्भकरण से :- कुछ न पूछो भाई आजकल मैं संकट में हूँ अयोध्या के दो राज-

कुमारों ने स्वरूपन खां की नाक काट कर घोर अनर्थ कर डाला जब खर दूषण बदला लेने

गये तो उन्हें भी मार डाला ।

कुम्भकरण रावण से :- यह तो बड़ा अनर्थ हुआ फिर तुमने क्या किया.

रावण कुम्भकरण से :- जब राम लक्ष्मण ने अधिक उधम उठाया तो मैं राम की

जानकी को चुरा लाया :-

कुम्भकरण रावण से. राधेश्याम :- क्यों गई वहां सरूपन खां, क्या काम भला था जाने का.

कोई तो कारण होगा लड़कों से नाक कटाने का.

इस के मतलब के आगे मैं. लंका की सत्यानाशी है.

भाई अब दिवियां क्या गिनते हो, आपकी भी पूरण मासी है.

"परदा गिरे") अरे भाई साहब तूने यह बहुत बुरा किया, राज पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया. जिसे तुम जानकी कहते हो, जगत की जननी जगदम्बा है। निशाचरों का नाश करने वाली साक्षात कालीका है। और स्त्री को चुराना भी अन्याय है पाप है.

रावण कुम्भकरण से:- तो तुम इतने कायर हो गये हो कि भाई के शत्रुओं की बड़ाई करने लगे हो!

कुम्भकरण रावण से:- बड़ाई नहीं सच्ची बात है. नारद जी ने मुझे उपदेश दिया था कि जब तुम पर नारी चुरा कर लाओगे, तो राक्षसों का नाश होगा.

रावण कुम्भकरण से:- मालूम होता है मांस मदिरा न मिलने पर तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं आई, (मन्त्री से) मन्त्री जी इसे मांस मदिरा में डुबो दो.

कुम्भकरण का भीतर रावण से:- गरज कर:- अरे भाई तूं क्यों घबराता है देख अब युद्ध में शत्रुओं का मारा जाता है (कुम्भकरण का जाना) "परदा"

रामादल

राम लक्ष्मण सुग्रीव अंगद विभिषण नल नील.

विभिषण, राम से:- आज के युद्ध में साधारण युद्ध न समझीये बल्कि एक प्रलय की घड़ी है.

सुग्रीव विभिषण से:- आप कुछ चिन्ता न करें और मुझे इसके मुकाबले पर जाने की आज्ञा दिजिये.

राम सुग्रीव से:- आप इस दल को जाते दो. और कुम्भकरण से मुझे ही भाग मिलाने दो.

सुग्रीव राम से:- आखीर कुम्भकरण कोई खुदा तो नहीं, यदि ऐसी अवस्था हुई तो आप भी कहाँ जूझाते नहीं.

परदे पर कुम्भकरण:- "तलवार हिलाकर" जरा सामने आओ. वह कौन काल का अभिलाषी है मेरी तलवार भी मुद्दत से प्यासी है.

सुग्रीव कुम्भकरण से:- जरा आगे आ ताकी तेरी प्यास बुझाऊं

कुम्भकरण सुग्रीव से :- तू भी बोलते को मरता है. छिगड़ा कहीं का.
उल्लू

सुग्रीव कुम्भकरण से :- मरने के लिये तैयार हो जा. क्यों ज्यादा भकड़ता है.

दोनों की लड़ाई "सुग्रीव का मूर्छित होना"

हनुमान कुम्भकरण से :- ठहर-ठहर कहां जाता है.

कुम्भकरण हनुमान से :- क्यों अपने काल को बुलाता है. क्या तू भी सुग्रीव के पास पहुंचना चाहता है.

हनुमान कुम्भकरण से :- अरे कायर किस करतूत पर इतना अकड़ रहा है. और ऐंठ ऐंठ कर बातें कर रहा है.

दोनों की लड़ाई "हनुमान का मूर्छित होना"

अंगद राम से :- भगवन कुम्भकरण गजब ढा रहा है जिस तरह बढ़ता है मैदान साफ करता है

राम अंगद से :- नि:सन्देह, कुम्भकरण एक प्रचण्ड काल है. परन्तु जो कुछ करता था कर चुका है. बल्कि कुम्भकरण को अब जिन्दा न समझो वास्तव में मर चुका है।

कुम्भकरण राम से :- आवो मरने वाले अब जरा कुम्भकरण के मुकाबले पर आओ, इधर-उधर न छिप कर जान बचाओ

राम कुम्भकरण से :- "आगे बढ़कर" बस खड़ा रह आगे कहां आता है.

कुम्भकरण राम से :- हा हा कर छोटी उम्र और इतना साहस, नन्हा सा बालक और कुम्भकरण से युद्ध हा : हा!

दोहा :- मच्छर उड़ा है चांद को पकड़ने देखता ।
चींटी चली है शेर से लड़ने देखता ।

राम कुम्भकरण से :- अरे अभिमानी इतने अहंकार में क्यों आता है आगे बढ़ कर हाथ क्यों नहीं दिखाता है.

कुम्भकरण राम से हंस कर हाथ तुझे दिखाऊं बाबा :- दोहा :- बच्चों का खेल युद्ध का बाजार समझ लिया.
क्या कुम्भकरण भी कोई कायर समझ लिया

राम कुम्भकरण से :- कुम्भकरण तू नहीं जानता साहसी पुरुष कहते नहीं करते हैं

दोहा :- कर्म करता कमीन है, कहना जिन्हें आसान है.

कायरों की दुनियां में बस यही एक पहचान है.

~~कुम्भकरण रामसे~~ राम कुम्भकरण से :- (पद्य बाद में) कुम्भकरण आज मैं तेरा सारा नशा उतारूंगा याद रख युद्ध में तुझे अवश्य मारूंगा

दोहा :- बहु दिया जो युद्ध से करके उसे दिखाऊंगा,

यह मेरा अटल निश्चय है, स्वर्गपुर तुझे पहुंचाऊंगा.

(पहले पद्य)
कुम्भकरण राम से :- जरा आगे हो भाग जाते का घाव लगा रहा है याद रख!

दोहा! मैं नहीं बच्चा जिसे बातों से तु बहकायेगा.

बात कितनी भी बना, न बच कर जिन्दा जायेगा.

कुम्भकरण राम से :- अच्छा तो सम्भल कुछ दिल जाते न पायेगा.

राम तीर छोड़ कर वो पापी यम के द्वारे-चल तुझे रोते भी नहीं पायेगा "परदा" कुम्भकरण सफाया

रावण का भंगी दरबार

मंत्रि के वाद रावण सभासे :- युद्ध दिन प्रतिदिन भयंकर होता जाता है परन्तु हमारा पक्ष जीतने में नहीं आता है देखो आज का युद्ध किसके हाथ रहे. और कुम्भकरण की कहां तक बात रहे.

दूत रावण से :- महाराज की जय हो पृथ्वी राज अन्धेरा हो गया, बली कुम्भकरण भी गहरी नींद में.

रावण दूत से :- चौंक कर :: क्या कहा कुम्भकरण मारा गया. दूत रावण से :- हां महाराज.

रावण दर्द में :: बस बस :- अब निसन्देह लंका के बुरे दिन आ गये. जो ऐसे-२ योद्धा काल की गोद में समा गये.

मेघनाथ रावण से :- पिता जी चिन्ता की क्या बात है. आज समझलो मैं याव हमारे हाथ है.

रावण मेघनाथ से :- नहीं नहीं अब इन पर विजय पाना कठीन है.

मेघनाथ रावण से :- कठीन किसलिये है क्या मैं बलहीन हो गया हूँ, क्या देवताओं को परास्त करने वाला बल सो गया है. नहीं पिता जी आप घबरोऐ नहीं :.

दोहा :- कसम है आपकी मैं आज वह कौतुक दिखाऊंगा.

कि इनके चार और फीर चार के सौ-सो बनाऊंगा.

समय बतलायेगा उस राम का परिणाम क्या होगा.

प्रलय का नाच होगा. आज का संग्राम क्या होगा.

रावण [illegible] से :- अच्छा बेटा जाओ युद्ध में वह कौशल दिखाओ जिससे त्रिलोकी त्राही-२ बोल जावे. और भय के कारण शत्रु की छाती खोल जाये.

मेघनाथ रावण से:- दोहा:- मैं रण में जाऊंगा कर दूंगा कमाल.

हाथ देखेंगे मेरे राम लक्ष्मण धरती कर दूंगा लाल. रावण: हा: हा!

★ रामा दल

राम, सुग्रीव, अंगद, हनुमान जामवंत लक्ष्मण विभिषण

राम विभिषण से:- प्यारे विभिषण रावण की ओर से आज सेना का संचालन करने वाला कौन है

विभिषण राम से:- भगवत आज वीर मेघनाथ लड़ने आया है.

विभिषण से:- तो आने दो मेरा भी होसला बढ़ा जा रहा है.

लक्ष्मण राम से:- "हाथ जोड़ कर" भ्राता जी आज के युद्ध में मुझे ही जाने दिजिऐ

राम लक्ष्मण से:- भाई वह राक्षस बड़ा कठोर व पराक्रमी है. तुम्हारे काबू नहीं आऐगा.

लक्ष्मण राम से:- तो बात ही क्या है आपके चरणों की सौगन्ध खा कर कहता हूँ कि आज उसे अवश्य मारुंगा और शक्ति बाण का बदला भली प्रकार उतारुंगा.

क्रोध में दोहा:- रघुकुल आन है मुझको धनुष और तीर की सौगन्ध.

कसम माता सुमित्रा की मुझे रघुवीर की सौगन्ध.

लडूंगा विश्व शक्ति से न पग पीछे हटाऊंगा.

यदि यमराज भी होगा तो. वध करके ही आऊंगा.

राम लक्ष्मण से:- अच्छा भ्राता यदि तुमने प्रण ही ठान लिया तो जाओ मेरा आर्शिवाद आपके साथ है. मगर एक बात का ध्यान रखना", राधेश्याम:- वह सती प्रमीला सलोचना. जो मेघनाथ की नारी है.

त्रिभुवन विख्यात साध्वी है, वासु की राज कुमारी है.

इस जगह में उत्तम श्रैणी की. वह पतिव्रता कहलाती है.

उसके व्रत की है शक्ति सदा. स्वामि को विजय दिलाती है.

ऐसी सतवंती के पति का सिर. अगर भूमि पर आऐगा.

कपिदल तो किस गिनती में है, संसार भस्म हो जाऐगा.

लक्ष्मण राम से:- अच्छा भैया आपका आर्शिवाद मेरे साथ है तो विजय लक्ष्मण के हाथ है.

योद्धा मेघनाथ. युद्ध भूमि वीर लक्ष्मण

मेघनाथ छरेदेपर :- आवो हे मोत के शिकारो. मौत मरने के लिये आया है. जरा सम्हल तो दिखाऐ.

लक्ष्मण मेघनाथ से :- ललकार : सावधान. अरे कायर अब भी तू सिर पर छा गया

मेघनाथ लक्ष्मण से :- अरे मूर्ख पिछली मार को इतनी जल्दी भूल गया. जो आज फिर सामने आगया,

दोहा :- जिसने बालक जान कर पहले तुझे मारा नहीं.

जिसके आगे काल सा बलवान भी ठहरा नहीं.

लक्ष्मण मेघनाथ से :- अरे कायर अब तो कुछ सोच. देख मेघनाथ इधर देख इस धनुष ओर बाण देख. फिर विष्णु के वरदान को देख : दोहा :- किया सहन तेरह वर्ष तक, भूमि की सैया पर,

किया भोजन फलों का विजय पाई है निद्रा पर.

किया है काम को बस में लगाई चैन को ठोकर.

मिटाया अपने जीवन को चला सन्यास के पथ पर.

उठाऐ कष्ट इतने, तब कहीं पूरा प्रण होगा.

समझले आज निश्चय ही तेरा स्वर्ग पुरी गमन है

मेघनाथ लक्ष्मण से :- वो मूर्ख छोकरे. ऐसी असम्भव बातें न बना तु नही जानता मैंने विकराल का गला तोड़ा है.

लक्ष्मण मेघनाथ से :- वो अभिमानी तु नहीं जानता कि फूस की ढेरी को एक छोटी सी चिन्गारी जला देती है. और एक बड़े वृक्ष को एक छोटी सी कुल्हाड़ी गिरा देती है.

मेघनाथ लक्ष्मण से :- दोहा : कर्म भूमि है यहां बच्चों की पाठशाला नहीं.

युद्ध का मैदान है खेल का पाला नहीं।

लक्ष्मण मेघनाथ से - क्रोध में :- वो राक्षस जबान को लगाम दो. और वीरों की तरह चोट को रोक

मेघनाथ लक्ष्मण से :- अच्छा होशियार हो जा मुझसे डर कर ही जाऐगा.

लक्ष्मण मेघनाथ से :- (अच्छा होशियार) मरने के लिये तैयार, मेरे हाथ से आज मर कर ही जाऐगा

::: दोनों की लड़ाई "मेघनाथ का मारा जाना" लक्ष्मण ने मेघनाथ का सिर काटना "परदा"

सती सुलोचना का महल बांन्दी

सुलोचना मन में :- हाय मेरा दिल आज बुरी तरह धड़क रहा है. और कलेजा आप ही आप छलक रहा है. [illegible] ओर मेरी दृष्टी जाती है. प्राण प्यारे की सूरत नजर आती है न जाने युद्ध का क्या परिणाम होगा. किस-२ वीरों का काम तमाम होगा

सहेली सुलोचना से: प्यारी सुलोचना आज तुम्हारा मन इस प्रकार क्यों उदास है.

सुलोचना सहेली से: क्या बताऊं जब से वो युद्ध में गये हैं. तब से मेरी तबियत कुछ घबरा रही है.

सहेली सुलोचना से: तुम व्यर्थ ही अपने मन को चिन्ता में डाल रही हो भला हमारे युवराज से

मुकाबला करने की किसकी मजाल है.

सुलोचना सहेली से:- यह तुम्हारी गलती है किसी की एक समान नहीं चलती है, आज चढ़ती है तो कल

उतर ढलती है फिर जो होनहार है होकर ही टलती है "चौंककर" देखता-२ सामने यह क्या वस्तु आ गिरी

सहेली सुलोचना से:- हाय हाय तो किसी अभागे की भुजा है
अभागे

सुलोचना सहेली से:- जरा पहचानो तो सही यह किसकी भुजा है. क्योंकि बाण इसमें अभी तक चुभा है

सहेली सुलोचना से:- प्यारी सुलोचना इसके हाथ में तो राखी अंगूठी है.

सुलोचना रोकर:- हाय हाय यह तो मेरी ही तकदीर फूटी है. रोना:- हाय प्राण नाथ कैसे क्या आपका

हाय. मेरा मन तो पहले ही बैठ जा रहा था. और युद्ध का परिणाम दूर से नजर आ रहा था, बताओ प्राण

नाथ यह कैसे हुआ:: हाय का बताना राधेश्याम:- शेष अवतार हैं लखन लाल. उनके द्वारा संहार हुआ.

इस बैर अग्नि से मुक्ति हुई, इस रण कारण उद्धार हुआ.

चढ़ तो लंका के द्वारे है. शिक्षा रखता है रामायण में.

आत्मा अभिलाषी विचल रहा. सुख से अनन्त के आंचल में.

सतवंती उसी सत्य से लंका में ज्योति जगा देना.

कहते हैं जिसको पतिव्रता दुनिया को दिखला देना.

सुलोचना हाथ से:- प्राण नाथ मैं जल्दी जाऊंगी और आपका सिर लाकर आपके साथ सती हो जाऊंगी.

सुलोचना का गाना:- भुजा हाथ में लेकर:- कैसे बताऊं कैसे सुनाऊं दुखड़ा मेरे प्राण नाथ.

:टेक:.

सूरत दिखाओ यह तो बताओ. मारा किस जालिम ने हाथ.

1) आज सुबह से हो रहे सब ही बुरे सुगुन.

मानो दरो दिवारों से बरस रहा है खून.

मचला रही चिलें अवा वीते कल को पड़ी है सारी रात: " कैसे बताऊं.......

2) स्वामि किस के आसरे छोड़ चले मझधार.

देखो टूक मेरी तरफ मेरे प्राण आधार.

जल्दी न किजे विनती सुन लिजे. मुझको भी ले चलिये साथ:: कैसे बताऊं - - - - - -

3) बैठे बैठे सुलोचना को गर्दीश ने घेर.

मेरी आंखों में छुआ चारों ओर अन्धेर.

ऐ प्राण प्यारे किसके सहारे. छोड़ी दुनियां में असहाय:; कैसे बताऊं - - - - - -

4) सम्बन्धी संसार के हैं. मतलब के मीत.

साजन किस दोस पर छोड़ चले हो प्रीत.

सम्बन्धी सारे तुम बीन. ऐ प्यारे कोई न पूछेगा बात:; कैसे बताऊं - - - - - -

सुलोचना का नाटक :- आह मेरे सिर के ताज मेरी इज्जत की लाज मेरे साथ आपके जो वादे थे. सभी फजुल गये. और जाते समय मुझे साथ ले जाना भूल गये. हे प्राण नाथ थोड़ा धर्य किजिये. और मुझे माता पिता की आज्ञा लेने दिजिये. मैं आपके साथ चलुगी प्राण नाथ;;*;;

रावण का महल

मन्दोदरी. सुलोचना.

रावण मन्त्री से :- आज मेघनाथ ने अवश्य ही राम का सिर उड़ादिया होगा और झगड़ा सदा के लिये मिटा दिया होगा. मन्त्री रावण से :- हां महा राज अवश्य ही.

दूत दंगल में से रावण को :- रोकर महाराज !

रावण दूत से :- क्यों क्या हुआ.

दूत रावण से :- रोकर. महाराज मेघनाथ युद्ध में ~~मारा~~ मारा गया.

रावण दूत से दुःख में :- मेघनाथ मारा गया वो हो और अति घोर अनर्थ अन्याय हुआ.

योद्धा! किस तरह खाया चक्कर. आज यह आकाश ने.

कर दिया है नाश पूत मेरा, आज तेरे नाश ने.

मंदोदरी रावण से :- प्राण नाथ यदि आप नाराज न हो तो मैं भी कुछ अर्ज करूं

रावण मन्दोदरी से :- नहीं नाराज होने की कौन सी बात है.. मैं तुम्हारी बातों से अवश्य लाभ उठाऊंगा. मन्दोदरी रावण से :- 'हाथ जोड़ कर' प्राण नाथ यदि आप मेरी बात को मानते है. तो सीता को अब भी रामचन्द्र के पास छोड़ आयें. जो कुछ बचा है. उसी को अपना मानें.

रावण मन्दोदरी से :- ऐसे कहने से तो अच्छा था, कि तुम भी कुछ न कहती और बिल्कुल खामोश ही रहती। ठीक तुम भी कुछ चीज देने की बजाये मेरे घाव पर नमक डाल रही हो और ऐसे कायरता के शब्द मुख से निकाल रही हो। अब पृथ्वी पर से एक-एक का नाम तमाम होगा। मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूँ। कल रामचन्द्र और लक्ष्मण का कुम्भकरण और मेघनाथ जैसा परिणाम होगा।

मन्दोदरी रावण से :- हे प्राण नाथ आपका यह गलत ख्याल है। जहां तक मैं देखती हूँ इस युद्ध में विजय पाना शख्त मुहाल है, क्योंकि सच्चाई उनकी तरफ दार है।

रावण मन्दोदरी से :- क्रोध में :- बस बस चुप रहो अधिक बात न बना और इसी वक्त मेरे सामने से चली जा। मुझे तेरे ऐसे उपदेशों की जरूरत नहीं। यदि ज्यादा बकवास की तो समझ ले तेरी भी बचने की सूरत नहीं।

दंगल में से सुलोचना का आना इसी सीन पर :- आह मेरे करतार। प्यारे स्वर्ग सिधारे।

" टेक "

छोड़ मुझे मझधार। हाय रे मेरे करतार।

1) युद्ध बीच में माता मेरे स्वामि स्वर्ग सिधार गये।
विधवा कर गये मुझ दुखिया को न जीती न मार गये।

लूट गये सब श्रृंगार,, हाय रे -------

2) हे माता अब इस दासी का रंज अलम गम दूर करो।
सिस मंगाये मेरे पति का यह विनती मंजूर करो।

करो अब मेरा उध्दार ;- हाय रे ----

3) तुम्हें पकित दिलाने को मैं गुना साथ में लाई हूँ।
सती होऊंगी साथ पति के निश्चय करके आई हूँ।

अब जीना है बेकार :- हाय रे -----

सुलोचना का नाटक मन्दोदरी :- हे माता जी मेरे भाग्य का दीपक ठण्डा हो गया। और आपका पुत्र मुझे दोनों जहान से खो गया। परन्तु ऐ माता आप तो सब दुःखो से आजाद हो गये, मगर आपका बुढ़ापा और मेरी जवानी बरबाद कर गये। हे माता जी बस आप इतनी कृपा किजिये। जिस तरह हो सके मेरे पति का सिर मंगवा दिजिये। ऐसा न हो के साथी दूर निकल जाये, और हमें मिलते ही न पाये।

मन्दोदरी सुलोचना से :- सुलोचना को गले लगा कर ; बेटी तुझे धर्य युं या अपने दुखित मन को समझा

जरा मेरी ओर देखो मैं भी भीतर में कितने घाव लिए बैठी हूं बेटी किस पर क्या अफसोस है अपने ही कर्मों का दोष है. मरने वाला तो मर गया परन्तु साथ मर कर किसी ने क्या कर लिया. बेटी हिम्मत से काम रख.

सुलोचना मन्दोदरी से:- शेअर:- आपकी कृपा तथा मेहरबानी की मशकूर हूँ परन्तु आपकी यह आज्ञा मानने से मजबूर हूँ माता जी मैं अपने विचारों को कदापी नहीं बदल सकती.

दोहा:- मोह के बन्धनों में फंस कर धर्म कैसे छोड़ दूं.

यह टूटने वाला नहीं सम्बन्ध मैं कैसे तोड़ दूं.

मन्दोदरी रावण से:- प्राणनाथ: सुलोचना बड़ी देर से रो रही है और मेघनाथ सिर मंगाने के लिये हठ कर रही है.

रावण मन्दोदरी से:- उसका सिर मंगवा कर क्या करेगी.

मन्दोदरी रावण से:- करेगी क्या पति के साथ सति होगी.

रावण मन्दोदरी से:- पहले तो इसका विचार ही वाहियात है, दूसरा इस समय सिर का मिलना कोई साधारण बात नहीं. जब तक वह एक सिर के बदले सौ पचास सिर और न ले लेंगे मेघनाथ का सिर कोई सहज थोड़े ही देगें!

सुलोचना रावण से:- हे पिता जी आप इस विषय पर कोई चिन्ता न किजिऐ. केवल आज्ञा दे दिजिए. पिता जी मैं स्वंय जाऊंगी और अपने पति का सिर ले आऊंगी.

रावण सुलोचना से:- तो यों क्यों न कहती मैं स्वंय जा कर शत्रु के बन्धन में फंस जाऊंगी.

सुलोचना रावण से:- पिता जी यह केवल आपका भ्रम है. सुलोचना को कैद करने की किसकी [illegible] प्राक्रम है रामचन्द्र जी आपसे हजार शत्रुता तथा लाख कसूर है. परन्तु फिर भी वह सदाचार धर्म को मुख्य है मुझे पूर्ण विश्वास है. कि वह इस अवसर पर कदापी शत्रुता का विचार करेगें

रावण सुलोचना से:- "क्रोधित" यह तुम्हारी सरासर भूल है. और इस विषय पर हठ करना बिल्कुल फिजूल है. तू वहां जाते ही कैद हो जाऐगी. क्योंकि इसके द्वारा उनको सिता के छुटकारे की पूरी उम्मीद हो जाऐगी.

सुलोचना रावण से:- मान लो यदि ऐसा ही हुआ तो मेरी जान मेरे हाथ है फीर चिन्ता करने की कौनसी बात है.

रावण सुलोचना से:- जब तुं इज्जत बाजी से मेरी हर बात काटती है तो मेरा मगज क्यों चाटती है.

[illegible] मत मैं आरे कर. और मेरी आंखों से दुर हो कर मर. "सुलोचना का जाना" "परदा"

श्री रामचन्द्र जी का कैम्प
राम लक्ष्मण सुग्रीव अंगद हनुमान

[illegible] से:- विभिषण जी रावण भी कितना हठधर्मी है. इतना विनाश होने के बाद भी हठ नहीं छोड़ता

विभिषण राम से :- हां भगवन वह सदा ऐसा ही अहंकारी है.

हनुमान राम से :- भगवन रावण पुत्र वधु हाजिर होना चाहती है.

राम हनुमान से :- कोई बात नही आने दो.

सुलोचना राम से :- प्रणाम भगवन:

राम: सुलोचना से :- खुश रहो देवी. अपने आने का कारण कहो.

सुलोचना राम से :- भगवन मुझे पति देव की भुजा ने अपनी मृत्यु का समाचार लिख कर बता दिया है और मेरा सारा सन्देह मिटा दिया है. अब मैं सती होना चाहती हूँ और अपने स्वामि का सिर लेने के लिए आपकी शरण में आई हूँ और मेरे पति का वध करने वाले के दर्शन करना चाहती हूँ

राम लक्ष्मण से :- भईया लक्ष्मण इनको मेघनाद का सिर ला दो, और अपनी शक्ल भी दिखा दो.

सुलोचना लक्ष्मण से :- "लक्ष्मण की ओर देख कर" लक्ष्मण तु जती है. मेरे पति को जितना तेरा ही काम:

सुलोचना सिर को लेकर :- प्राण नाथ कितने उदास हो रहे हो. चेहरा मुरझा गया है बालों मे धूल भर गई है. नितन चके हुऐ दिखाई देते हो. (आंचल से सिर की धूल पोंछना).

[illegible] राम से :- भगवन मेरे मन में एक महान शंका है. यदि आज्ञा हो तो पूछ लूं.

राम सुग्रीव से :- हां हां सुग्रीव अवश्य पूछो.

सुग्रीव राम से :- भगवन क्या बिना देह और प्राण की कटी हुई भुजा कुछ लिख सकती है.

राम सुग्रीव से :- हां सुग्रीव पति धर्म बड़ी शक्ति है.

सुग्रीव राम से :- यदि इतनी शक्ति है तो यह अपने पति का सिर हंसे तो हमारा सन्देह दूर हो.

राम सुग्रीव से :- यदि यही इच्छा करेगी तो अवश्य हंसेगा

सुलोचना का गाना :- आ गया परीक्षा का अवसर, हस दे मेरे सरताज के सर.
अटका है नाव किनारे पर. हस दे मेरे सरताज के सर.

सुलोचना सिर से :- हंस दिजिऐ हे नाथ हंस दिजिऐ नहीं तो मेरा विश्वास घटता है. मेरे पतिव्रत की महीमा कम होती है. क्या लक्ष्मण के बाणों ने इतना शिथिल कर दिया. "रोकर" हंस दिजिऐ हे प्राण नाथ प्रभु के सामने मुझे लज्जित न किजिऐ यदि मैंने सच्चे मन वचन से आपकी पूजा की है तो आपको जरूर हंसना पड़ेगा

"सिर का हंसना" बोलो सती सुलोचना की जय.

सुलोचना राम से :- अच्छा प्रभु अब आज्ञा दिजिऐ, और पति के दर्शन करने दिजिऐ.

राम सुलोचना से,, धन्य हो सती सुलोचना धन्य-धन्य हो, निःसंदेह जो स्त्रियां छल कपट छोड़कर सच्चे मन से पति की सेवा करती हैं. वह संसार में यश प्राप्त करके भवसागर तैरती है "परदा"

रावण का दरबार

रावण मन्त्री से:- मन्त्री जी कल को सारी सेना को आज्ञा जारी करो. कल मुझे रामादल को खत्म करना है. मैं आज प्रतिज्ञा करता हूँ. जब तक राम लक्ष्मण का सिर कट न लाऊंगा तब तक चैन से नहीं बैठूंगा!

मन्त्री रावण से:- हे लंका पति नरेश, आप कुछ चिन्ता न करें अभी आपके एक बेटा अहिरावण है जो पाताल लोक में राज्य कर रहा है. आप उसे शिवमन्त्र से उसे यहां बुला सकते हैं।

रावण मन्त्री से:- ठीक है तुम सब जाओ और मुझे अब शिवमन्त्र करने दो "सबका जाना" "रावण का मंत्र पढ़ना" ओम भूर्भव स्वः सवित्र सोयम वर्गो देव वायु देव मयी देवाय पुना प्रचोदयात्:: चार बार बोलना:: त्वमेव माता च पिता त्वमेव बन्धु च सखा: त्वमेव त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव "ॐ"

अहिरावण रावण से:- प्रणाम पिताजी, तुमने मुझे किस लिये याद किया है, और अब किसको जितने का निश्चय किया है.

रावण अहिरावण से:- खड़े हो कर; ओ हो तुम आ गये बेटा आओ पधारो और मेरे दिल की व्यथा सुनो.

अहिरावण रावण से:- कहो पिता जी कुशल तो हो, ऐसा क्या संकट आया है. जो मुझे इतनी शीघ्रता से बुलाया है.

रावण अहिरावण से:- "उदास होकर" क्या बताऊं बेटा कुछ समय से अयोध्या के दो राजकुमारों पंचवटी पर आये हुऐ थे, एक दिन उन मुर्खों ने तुम्हारी बुआ सरूपनखां के नाक कान काट डाले, जब खर दूषण उसकी सहायता के लिये गये तो उनको भी मार डाला. मैंने यह समाचार पाया तो राम की स्त्री सीता को चुरा लाया, इसी होड़ होड़ में कुम्भकरण मेघनाथ अक्षय कुमार आदि बेटा मारे गये. इस बदले की भावना ने मुझे व्याकुल बनाया है, इसी लिये तुम्हें बुलाया है.

अहिरावण रावण से:- पिता जी धर्म और निती को छोड़ कर कुमार्ग पर चलने में भलाई नहीं है. पिता जी मेरा आपके सामने बोलने का फर्ज नहीं था. फिर भी मैंने एक सच्ची बात कही है.

रावण अहिरावण से:- बेटा मैंने उपदेश के लिये नहीं सहायता करने के लिये बुलाया है और बेटा

नौकर तुमने यही कर्तव्य निभाया है.

अहिरावण रावण से:- ऐसा न कहो पिता जी, मैं तुम्हारे लिये प्राण भी दे सकता हूँ अच्छा पिता जी तुम अब बताओं क्या चाहते हो.

रावण अहिरावण से:- बेटा तुम्हें कामद देवी का वरदान है. कि तुम हनुमान के अतिरिक्त और किसी से न मारे जावोगे: इसलिये प्रातः काल संग्राम में चले जाओ और लक्ष्मण तथा राम को ठिकाने लगाओ

अहिरावण रावण से:- इससे तो यही अच्छा है. अब रात्री में दोनों को चुरा ले जाऊं और देवी की भेंट चढाऊं. जिससे सारा काम बन जावे और देवी भी खुश हो जावे.

रावण अहिरावण से:- हंस कर वाह. वाह यह और भी सुन्दर है. अच्छा आधी रात्री का समय आने वाला है. इसलिये रामादल में चले जाओ और मन का भय मिटाओ.

अहिरावण रावण से:- अच्छा पिता जी मैं जाता हूँ जब तुम्हें प्रकाश दिखाई दे तो जान लेना अहिरावण राम, लक्ष्मण को हर कर ले जा रहा है.

विभिषण

रामचन्द्र जी का डेरा

राम सुग्रीव लक्ष्मण हनुमान अंगद

राम विभिषण से:- प्यारे विभिषण जी अब तो रावण के पास रह ही क्या गया होगा या तो जानकी जी को लेकर शरण में आयेगा. या और योद्धाओं की तरह आप भी मारा जायेगा.

विभिषण राम से:- नहीं भगवन अभी उसके बेटे और भी हैं और सगे सम्बन्धियों की तरफ भी नजर दौड़ायेगा. राम विभिषण से:- क्या उसके बेटे और भी हैं!

विभिषण राम से:- हां भगवन अभी उसके दो बेटे बाकी है. एक तो पाताल लोक में राज्य करता है :: दूसरा:: बहुबली पुर में सम्राज्य करता है.

हनुमान राम से:- भगवन अभी आधी रात होने को आई है. आपकी क्या आज्ञा है.

राम हनुमान से:- अच्छा सब आराम करें, हनुमान तुम पहरे पर सावधान रहना.

हनुमान राम से:- भगवन आप निश्चिन्त हो कर सो जाऐं. सबका सो जाना, "आधा परदा करना"

अहिरावण स्टेज पर आकर:- आहा भीतर कैसे जाऊं और कौनसी युक्ति से राम लक्ष्मण को चुराऊं य शत्रु वानर बड़ी सावधानी से पहरा दे रहा है. और अपनी प्रकोप में सब ले रहा है:

सोचकर" बस-2 अब यहि उचित हैं कि विभिषण का भेष बनाऊं और वानर को:

प्रकोट में घुस जाऊं "अहिरावण की जगह विभिषण का सोना" परदा खुलता" विभिषण गाता हुआ, लवं सागर से पार करो हरे रामा" 3 बार" काठ की माला हाथ में लगड़ा कर चलना।

हनुमान का बोलना :- कौन हो तुम वहीं खड़े रहो आगे कहां जाते हो।

अहिरावण हनुमान से :- जय बोलो जानकी नाथ की जय "आगे की लाईट of करती है"

हनुमान अहिरावण से :- कौन हो भाई ! आधी रात को रामा दल में क्या काम है

अहिरावण हनुमान से :- हनुमान जी आप मुझे जानते नहीं मैं हूं विभिषण

हनुमान खड़ा होकर अहिरावण से :- प्यारे विभिषण जी आप इस समय तक कहां थे।

अहिरावण हनुमान से :- हनुमान जी आप मुझे जानते नहीं मैं हूं विभिषण

हनुमान अहिरावण से :- मुझे कुछ संकोच है। विभिषण की तीन निशानी हैं। वह आप मुझे दिखाएं और बताएं की आप कहां से आ रहे हैं।

अहिरावण हनुमान से :- प्यारे हनुमान जी आप निशानी देख सकते हैं और मैं समुन्द्र तट पर संध्या करने चला गया था। वहां कुछ देर हो गई। "तीन निशानी" पूछना नं: 1 लगड़ा करचलना नं० 2. माला में 108 मनके, नं० 3 विभिषण की गर्दन पर काला तील था।

हनुमान अहिरावण से :- अच्छा प्यारे विभिषण चले जाईये कैम्प में, "अहिरावण का बैटरी से वेनों को अचेत करना, और राम लक्ष्मण को उठा कर राम चक्कर होना कुछ देरबाद सबका उठना," औ इधर उधर देखना"।

हनुमान सुग्रीव से :- महाराज भगवन कहां हैं। न हीं लक्ष्मण जी दिखाई देते हैं।

सुग्रीव हनुमान से :- हनुमान जी पहरे पर तो आप ही थे। क्या रात को कोई आया था।

हनुमान सुग्रीव से :- क्या बताऊं महाराज, रात को और तो कोई नहीं आया। केवल विभिषण जी संध्या करके लौटे थे।

विभिषण :- नहीं-नहीं मैं तो यहीं पर था।

हनुमान विभिषण से :- यह आप कैसे कह सकते हैं। मैंने स्वंय आपको जब आधी रात को आते तब देखा था। यही रहा और यहीं सोली।

विभिषण हनुमान से :- बस मैं समझ गया प्रभु को पाताल का राजा अहिरावण हर कर ले गया

संसार में बस वही इतना चालाक राक्षस है जो मेरा रूप और बोली बोलना जानता है.

अंगद विभिषण से "उदास होकर":- तो अब क्या होगा प्रभू को कैसे पाएंगे.

विभिषण अंगद से:- बस जिस में बल हो वह सिधा पाताल लोक जाए. और अहिरावण को मार कर प्रभू को छुड़ा लावे.

सुग्रीव विभिषण से:- तो ऐसा काम हनुमान के सिवा और कोई नहीं कर सकता.

हनुमान सुग्रीव से:- हां हां मैं ही जाऊंगा और चोदह भवन और तीन लोकों में जहां भी होंगे वहीं से खोज लाऊंगा.

सुग्रीव हनुमान से:- धन्य हो केसरी नन्दन तुम धन्य हो.

हनुमान सबसे:- अच्छा मैं जाता हूँ तुम सब यहां सावधान रहना.

((9 दिन शुरू)) ⇒

पाताल नगर का द्वार "मकड़ध्वज".

राम: राम: हनुमान का दंगलमें से आना, और स्टेज पर मकरध्वज का रोकना

मकरध्वज हनुमान से:- कोन है जो इस तरह नगर में घुसा जा रहा है.

हनुमान मकरध्वजसे:- तू कौन है जो मार्ग रोक अड़का रहा है.

मकरध्वज हनुमान से:- तू जानता नहीं मैं पवन पुत्र हनुमान का पुत्र हूँ.

हनुमान मकरध्वज से:- "हैरान होकर" हैं हैं क्या कहा हनुमान का पुत्र तेरा नाम क्या है.

मकरध्वज हनुमान से:- "मकरध्वज"

हनुमान मकरध्वजसे:- अरे मूर्ख असे खोटे वचन क्यों बोलता है. मेरे स्वपन में भी पुत्र नहीं है,

मकरध्वज हनुमान से:- तो क्या आप ही हनुमान है.

हनुमान मकरध्वज से:- हां पवन पुत्र हनुमान मैं ही हूँ पर तुने ऐसी झूठी बात क्यों बताई.

मकरध्वज हनुमान से:- पिता जी यह झूठी बात नहीं है. मैं बिल्कुल सत्य कह रहा हूँ "सुनिये" जिस समय आप लंका को जला कर समुन्द्र के उपर से उड़ते हुऐ जा रहें थे. उस समय आपके शरीर में से पसीना टपक कर समुद्र में जा गिरा. और उसे एक मछली ने निगल लिया. बस उसी के गर्भ से मैंने जन्म पाया. और फिर अहिरावण की सेवा के लिऐ पाताल लोक चला आया.

हनुमान मकरध्वजसे:- हे पुत्र देर होने से काम बिगड़ जाऐगा. इसलिऐ मुझे तुरन्त जाने दो.

मकरध्वज हनुमान से:- नहीं पिता जी. मैं विश्वासघात नहीं कर सकता आप वापिस लौट जाइऐ. मैं कदापी भीतर नहीं जाने दुंगा,

हनुमान मकरध्वज से:- अरे हठ मेरा रास्ता छोड़ दिवार तरह क्यों अड़ा खड़ा है.

मकरध्वज हनुमान से:- "आगे अकड़ कर" नहीं महाराज यह नहीं हो सकता. या तो मुझे मलयुद्ध मे हराना होगा. नहीं तो वापिस जाना होगा.

हनुमान मकरध्वज से:- अच्छा तो आ पहले तेरा बल ही देख लूं!

दोनों का मलयुद्ध होना, मकरध्वज का हार जाना, मकरध्वज को रस्सी से बान्ध कर आगे प्रवेश करना, "परदा उठना" देवी का भवन,, भवन मैं बैठ जाना।

अहिरावण मन्त्री से:- मन्त्री जी अब देवी को खुश करने के लिए सब पुजारियों को बुलाया जाऐ.

मन्त्री अहिरावण से:- जैसी आज्ञा हो महा राज :

अहिरावण मन्त्री से:- जावो उन तपस्वीयों को जल्दी ले आओं देवी भेट देने के लिऐ बड़ी खड़े

(जैसी आज्ञा) मन्त्री अहिरावण से:- जैसी आज्ञा हो महाराज. "राम लक्ष्मण को ताना पकड़ेगर"

अहिरावण मन्त्री से:- मन्त्रीवर उनसे पूछ लिया जाऐ. कुछ खाना हो या किसी से मिलना हो या किसी को बुलाना हो. तो यह कार्य हम कर सकते हैं, अब इनका आखरी वक्त है.

मन्त्री राम से:- तुम्हें कुछ खाना है. या किसी को बुलाना है. तो हम उसे बुला सकते हैं। और आपकी इच्छा पूरी कर सकते हैं.

राम मन्त्री से:- न मुझे कुछ खाना है न किसी को बुलाना है. आप मेरी तीन आवाज मेरे छोटे भाई भरत को लगा दिजिऐ।

मन्त्री का आवाज लगाना:- कोई भरत लाल अयोध्या का रहने वाला हाजिर हो. आज तुम्हारे भाई मरते समय याद कर रहे हैं.। तीन आवाज देना इसी तरह।

मन्त्री लक्ष्मण से:- तुम्हें कुछ खाना हो या किसी को बुलाना हो. तो हम आपकी इच्छा पूरी कर सकते हैं:

लक्ष्मण मन्त्री से:- मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं, आप तीन आवाज हनुमान को लगा दिजिये.

मन्त्री का आवाज लगाना:- कोई हनुमान मेरी आवाज सुनता हो तो. हाजिर हो. आपको मरते समय लक्ष्मण याद कर रहे हैं। तीन आवाज इसी तरह।

तीसरी आवाज पर हनुमान का बाहर आना "गर्ज कर" बोलो सियापति रामचन्द्र की जय:-

अहिरावण हनुमान से:- कौन है तूम।

हनुमान अहिरावण से:- तेरा काल ओ दुष्ट।

अहिरावण हनुमान से:- चल हट मेरे कार्य में ~~विघ्न~~ विघ्न न डाल!

हनुमान अहिरावण से:- ओ दुष्ट पापी चण्डाल! लात मार कर। अब नरक में डेरा डाल.

दोनो की लड़ाई अहिरावण का मारा जाना, राम लक्ष्मण को कन्धे पर बैठाकर ले गया।

रावण का दरबार

[रावण] मन्त्री से:- हंस कर "रानी के प्रकाश से सिद्ध होता है कि अहिरावण इन दोनों तपस्वीयों को चुरा कर ले गया. और सारी वानर सेना को धोखा दे गया." हंस कर" वाह मेरे बेटा वाह।

दोहा:- राम तो है चीज क्या, काल की लयजीत हो.
जिसके ऐसे बेटे हो, क्यों न उसकी जीत हो. हा हा हा हा-

दूत रावण से:- महा राज की जय हो. भी नाव अनर्थ हो गया.

रावण दूत से:- क्या हुआ क्यों इतने घबरा रहे हो.

दूत रावण से:- महाराज आपका बेटा अहिरावण हनुमान के हाथों मारा गया.

रावण दूत से:- बड़ा अनर्थ हुआ! दोहा:- अफसोस आरजुओं की बस्ती उजड़ गई.
कैसी बनी थी बात बन कर बिगड़ गई.। उदास होना

मन्त्री रावण से:- महाराज शान्ति किजिये, इतने निराश न होईये.

रावण मन्त्री से:- महा मन्त्री जी अब किस बात पर शान्ति करूं और कैसे धीर धरूं

मन्त्री रावण से:- महा राजा जरा विचार न किजिये, आपका पुत्र बली नारान्तक बड़बली

मे राज कर रहा है, जिसे पैदा होते ही समुन्द्र मे बहा दिया था.

रावण मन्त्री से :- शाबास मन्त्री वर ! खुब याद दिलाया और ऐन मौके पर याद दिलाया अच्छा तुम जल्दी जाओ, और उसे सब हाल सुना कर जल्दी बुला लाओं.

मन्त्री रावणसे :- जैसी आज्ञा हो महाराज !

नरान्तक का दरबार

नरान्तक मन्त्री से :- महामन्त्री दरबार मैं गाने वाली पेश करो.

मन्त्री नरान्तक से :- जो आज्ञा महाराज. गाने वाली दरबार मैं हाजिर हो.

नरान्तक :- गाना सुन कर :- मैरी चाक ने कम्पा दिया है लोक और सुरध्यान को.

जानते है सारे आज, नरान्तक के नाम को.

मन्त्री नरान्तक से :- महा राज की जय हो. लंका का राज दुत आया है. जो आपके नाम सैदश लाया है.

नरान्तक से :- कुछ न पूछो महाराज, आज लंका पर बड़ी आपती आई हैं शत्रुओं की सेना चारों और से मंडरा रही है.

नरान्तक दूतसे :- ऐसा कौन हिये का अन्धा है जिसने पर युध्द करने की ठानी है.

दूत नरान्तकसे :- महाराज राम और लक्ष्मण दो अयोध्या के राजकुमारों ने बड़ा ही अनर्थ कर डला, और लंका के सारे योध्याओं को मार डला. इसलिये हमें तुम्हारी सहायता की जरूरत है. इसलिये महाराज आप हमारे साथ चलें.

नरान्तक दूतसे :- अहो दो राजकुमारों का इतना साहस कि किसी का भी भय ना खोर्ट !- अच्छा मैं इसी वक्त चलता हूँ देखा ! कौन जो आ गऐ तंग अपनी जान से.

(~~ना समझ बाजी~~)

ना समझ बाजी लड़ा बैठे अपने प्राण से.

मौत से टकरायेगा तो नाश होता जाऐगा.

सामनें जो आ गया भूमि पर सोता जाऐगा.

★ रामा दल ★

सुग्रीव, विभिषण, राम, लक्ष्मण, हनुमान अंगद.

विभिषण राम से :- महाराज की जय हो, रावण का पुत्र नरान्तक लड़ने के लिये आ रहा है! शायद रावण उसे बुला कर लाया है.

राम विभिषण से :- हैरान होकर! क्या रावण का कोई पुत्र नरान्तक भी है.

विभिषण राम से :- हाँ भगवत आज कल वह बहबली पुर का राजा है. और बड़ा पराक्रमी योद्धा है.

राम हनुमान से :- अच्छा प्यारे हनुमान जी तुम लक्ष्मण सहित चले जाओ, और मार्ग में उसका अहंकार मिटाओ.

हनुमान राम से :- जैसी आज्ञा हो प्रभो" दोनों का लड़ाई मे जाना

नरान्तक मन्त्री से :- हनुमान को देख कर' मन्त्री जी यह कौन है, जो सामने से अकड़ता हुआ आ रहा है.

मन्त्री नरान्तक से :- महाराज यह हनुमान नामक एक वानर है. और यह बड़ा वीर है. इसी ने एक बार लंका को जलाया था. और अहिरावण को मार कर दोनों भाईयों को बचाया है

नरान्तक मन्त्री से :- हँसकर" अहा अब अच्छा हुआ पहले मुहूर्त पर ही शिकार मिल गया.

हनुमान नरान्तक से :- वो दुष्ट इतना क्यों उछल रहा है. देखता हूँ तुझे कौन बचाता है.

" दोनों की लड़ाई हनुमान का बेहोश होना "

लक्ष्मण नरान्तक से :- बस-बस ओ कायर क्यों इतनी बातें बना रहा है. यदि वीर है तो कर्म क्यों नहीं दिखाता है.

नरान्तक लक्ष्मण से :- और मूर्ख यह वह मेघनाद नहीं जो तुम्हारे धोखे में आ जायेगा.

दोहा :- चाहता है जी तेरा, जाने को यम के धाम को.
छोड़ जायेगा यहां रोता हुआ राम को.

लक्ष्मण नरान्तक से :- बस बस ओ अन्यायी अब जीवन की आशा छोड़ दे.

दोहा: खैर थी जब तक, तुझे रावण ने बुलाया न था।

जी रहा था तब तलक, सामने तू आया न था।

दोनों की लड़ाई लक्ष्मण का मूर्छित होना।

सुग्रीव नरान्तक से:- वो कायर क्या तू अब बच कर जायेगा। रावण को बुला तेरी लाश उठा कर ले जायेगा।

नरान्तक सुग्रीव से:- अब सामने आ गया है तो अपना कुछ परा क्रम दिखा।

दोहा:- तू तो चीज ही क्या है जब योद्धा मारे जाते हैं।

देखते दुनिया से कैसे सूरमा जाते हैं।

दोनों की लड़ाई सुग्रीव का राम के पास पहुंचना।

सुग्रीव राम से:- भगवन आज नरान्तक ने तो बड़ा ही अनर्थ कर रखा है।

राम सुग्रीव से:- प्यारे सुग्रीव घबराओ नहीं मैं ही उस दुष्ट का अभिमान तोडूंगा।

लक्ष्मण राम से:- हां भैया उस दुष्ट का जल्दी संहार कीजिये और वानर सेना की शान्ति के उपाय कीजिये। नहीं तो सबको साहस हीन कर देगा।

राम सब से:- तुम घबराओ मत। मैं अब ही उस पापी का सिर काट कर दिखाता हूं।

राम का लड़ाई में जाना,, अन्दर से नारद मुनी का आना।

नारद:- नारायण, नारायण, नारायण, नारायण,

राम नारद से:- प्रणाम मुनीवर, आईये मुनी जी पधारिये।

नारद राम से:- नारायण, नारायण, नमस्कार भगवन कहिये इतनी रात्री तक क्या विचार हो रहा है।

राम नारद से:- क्या बतायें मुनीवर, कई दिनों से युद्ध हो रहा है। परन्तु रावण का बेटा नरान्तक मरने में नहीं आता है।

नारद राम से:- यह इस तरह से नहीं मरेगा। इसे ब्रह्मा का वरदान है। इस लिये यह एक ही उपाय से मर सकता है।

राम नारद से:- वह क्या उपाय है मुनीवर,

नारद राम से:- सुनीऐ भगवत 'कथा' एक समय रावण के राज्य में नर राक्षस पैदा हुऐ तो रावण ने अपने गुरू शुक्राचार्य को बुलाकर जन्म शगुन पूछा शुक्राचार्य ने कहा कि इस लग्न के बालक मूलों में उत्पन्न हुऐ हैं यदि घर में रहेंगे तो अपने पिताओं का नाश कर देंगें. यह सुनते ही रावण ने सबको समुन्द्र में डलवा दिया. परन्तु वह बालक वट वृक्ष के सहारे पलने लगे, उन्हें बड़े होने पर ब्रह्मा जी का तप किया. ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर उन्हें बहुबली पुर में बसा दिया. उन्होंने रावण के पुत्र नरान्तक को राजा बना दिया. उन्हीं के साथ उसी जगह सुग्रीव का बेटा भी तप कर रहा था. एक दिन नरान्तक ने दधीबल को खुब मारा, तो दधीबल ने बदला लेने के लिऐ ब्रह्मा जी का तप किया. तो ब्रह्मा ने खुश होकर वरदान दिया कि जाओ तुम्हारे हाथ से नरान्तक की मृत्यु है. हे भगवत आप सुग्रीव के बेटे दधीबल को बुलाऐं. और इस राक्षस को ठीकाने लगाऐं

राम नारद से:- परन्तु हे मुनीवर अब दधिबल रहता कहां है

नारद राम से:- भगवत वह चोलागिरी पर्वत पर आप का भजन कर रहा है

राम हनुमान से:- प्यारे हनुमान जी आप जल्दी जाऐं और चोला गिरी पर्वत से. दधिबल को ले आऐं।

हनुमान राम से: जैसी आज्ञा हो भगवन।

दधिबल राम से: चरणों में गिरकर, कृपा सिन्धु भगवान की जय हो.

राम दधिबल से:- चरजीव रहो दधिबल

दधिबल सुग्रीव से: प्रणाम पिता जी.

सुग्रीव दधिबल से: चिरजीव रहो पुत्र. कहो बेटा कुशल से तो हो.

दधिबल सुग्रीव से:- हां पिता जी प्रभु का अनुग्रह और आपका आशीर्वाद है।

सुग्रीव दधिबल से:- प्यारे पुत्र तुम जानते ही हो कि आज कल नरान्तक से युद्ध चल रहा है वह तुम्हारे हाथों ही से मारा जाऐगा।

दधिबल सुग्रीव से:- पिता जी आप फिकर न करें मैं उस दुष्ट को कदापी नहीं छोड़ूंगा।

युद्ध भूमि नरान्तक दधिबल

नरान्तक रामादल से:- "गरज कर" आओ हे सिंह के शिकारो अपनी अपनी गुफाओं से निकल कर आओ दोहा:- जी चुके बहुत अब प्राणों की रक्षा छोड़ दो।

नाश का दिन आ गया जीते की आशा छोड़ दो।

दधिबल नरान्तक से:- प्यारे मित्र नरान्तक कहो आनन्द से तो हो।

नरान्तक दधिबल से:- कौन दधिबल, कहो तुम यहां कहां।

दधिबल नरान्तक से:- मैंने सुना है कि आप रावण का पक्ष लेकर, तुम भी भगवान से बैर करते चले आऐ।

नरान्तक दधिबल से:- प्यारे दधिबल हम दुश्मन से प्रीत नहीं किया करते और न ही बैरी को मान दिया करते। यह रीती भी तुमने ही निकाली है जो अपने बाली के शत्रु को अपनी आबरू बेच डाली है।

दधिबल नरान्तक से:- अरे मूर्ख तेरी निति कुल का मान नहीं कुल का नाश करने वाली है दोहा:- राख पर लंका की आशाओं को रोने से बचा।

तू बचा सकता है तो, कुल का नाश होने से बचा।

नरान्तक दधिबल से:- बस-2 वो दुष्ट मैं समझ गया कि तू मेरी नरमी से नहीं मानेगा मेरे हाथों को अवश्य कष्ट देगा। दोहा: इस परम शिक्षा का फल चखाता हूं तुझे,

देख अब भूमि की शैया पर सुलाता हूं तुझे,

दधिबल नरान्तक से:- अच्छा यदि तेरी यहि इच्छा है तो आ, शिक्षा के द्वारा नहीं मानता तो संग्राम के द्वारा अपने बुरे कर्मों का फल चख!

दोनों की लड़ाई : नरान्तक का मारा जाना इसी सीन पर:

राम दधिबल से:- धन्य हो दधिबल तुम धन्य हो. तुमने बड़ी वीरता का काम किया है और सबकी चिन्ता को हर लिया है: "परदा"

रावण का दरबार

रावण मन्त्री से:- मन्त्रीवर दरबार में गाना पेश किया जाये. जिससे हमारा रंग जमे और दिल की कली खिले!

मन्त्री रावण से:- जैसी आज्ञा हो महाराज, गाने वाली बुलाकर, गाना शुरू कर:

रावण मन्त्री से:- प्यारे मन्त्रीवर आज बड़ा खुशी का दिन है. आज मेरा बेटा नरान्तक लड़ाई में गया है. आज राम और लक्ष्मण का सिर अवश्य काटेगा. हां हा हा.

दूत रावण से:- महाराज की जय हो. नरान्तक लड़ाई में मारा गया.

रावण दूत से:- क्या बकते हो तुम्हारी जबान ऐंठते नहीं है.

दूत रावण से:- मैं सच कह रहा हूं महाराज.

रावण दिल में:- बड़ा ही अनर्थ हुआ ऐसे-ऐसे बेटे लड़ाई में ~~मारे गये~~ [अफसोस]

रावण मन्त्री से:- महामन्त्री शताबी: इसी समय सेना को तैयार करो मैं देखता हूं वह तपस्वी के बच्चे कितने गहरे पानी में हैं.

मन्त्री रावण से:- जैसी आज्ञा हो महाराज: 'रावण का लड़ाई में जाना,

राम दल

राम, लक्ष्मण, सुग्रीव हनुमान विभिषण अंगद जामवंत

सुग्रीव राम से:- भगवन आज तो रावण स्वयं लड़ाई के लिये आया है इसलिये बादल सा छा रहा है

राम सुग्रीव से:- प्यारे सुग्रीव कोई चिन्ता की बात नहीं आखीर रावण कोई खुदा तो नहीं.

रावण ललकार कर:- जरा सामने आओ आज तुममें से किसकी मौत की बारी है.

हनुमान रावण से:- खबरदार हो कायर क्यों इतना उछलता है.

रावण हनुमान से:- वो बुझदिल होशियार हो जा क्यों इतना अकड़ता है.

हनुमान रावण से:- तू भी मरने के लिए तैयार हो जा. दोनों की मल्लयुद्ध से लड़ाई

रावण ने हनुमान के मुक्का मारना, हनुमान का जमीन पर हाथ टिकना

हनुमान का रावण के मुक्का मारना, रावण का पीछा जमीन पर टिकना. हनुमान का बेहोश होना

लक्ष्मण रावण से:- सम्भल जा अब तेरे काल का सन्देश आ गया है.

रावण लक्ष्मण से:- आओ आ मुझे भी अफसोस था कि तू मेघनाथ को मार कर जिन्दा चला गया

लक्ष्मण रावण से:- बाण छोड़ कर: मेघनाथ को तो तूने रो लिया, लेकिन तुझे कौन रोएगा

रावण लक्ष्मण से:- वो तपस्वी होशियार हो जा

लक्ष्मण रावण से:- वो अत्याचारी मरने को तैयार हो जा

दोनों की लड़ाई, लक्ष्मण का मूर्छित होकर गिरना.

सुग्रीव रावण से:- वो बेईमान क्यों शेर की तरह विचर रहा है. तुझे पता नहीं तेरे सामने सुग्रीव अड़ रहा है.

रावण सुग्रीव से:- हा. हा. यह दूसरे तीस मारखां बोले. बाप ने मारी मेंढकी बेटा तीरंदाज, अपनी स्त्री के लिए सिर धुनता रहा. अब अंगुली के खून लगा कर शहीदों में शामिल होना चाहता है. छिछड़ा कहीं का. उल्लू

सुग्रीव रावण से: अधिक बक-बक न लगा वीरों की तरह मुकाबले पर आ.

दोनों की लड़ाई सुग्रीव का मूर्छित होना "रावण का एक तरफ होना"

विभीषण राम से:- भगवन युद्ध में बड़ा घमसान हो रहा है जिस ओर रावण का हाथ झुकता है, सबको नष्ट किए बैगर नहीं रहता है

राम विभीषण से: प्यारे विभीषण रावण एक प्रचण्ड काल है अब वह सिर पर कफन बांध कर आया है. मगर अब रावण को जितनी देर जिन्दा रहना था रह लिया. अब यह सूरपुर की हवा जरूर खायेगा. (राम विभीषण का लड़ाई में जाना).

रावण राम से गरज कर: आओ तपस्वी, आज मैं तेरे खून से, अपने बेटों का बदला लूंगा

दोहा:- भाग कर जान छिपने से बच सकती नहीं.

आज बचाए तुझे ऐसी कोई शक्ति नहीं.

राम रावण से :- हे रावण तू इतनी भूल न कर, यदि किसी से भी नहीं डरता तो मृत्यु के चक्कर से तो डर.

दोहा: नाश होते से तूं अपने को बचा सकता नहीं.

जान ले रावण तू किसी मोह को मिटा सकता नहीं.

राम का गाना रावण से :- "मिलना" दशानन्द हो होशियार अब जायेगा मारा.

"टेक"

रावण :- तपस्वी हो होशियार आ गया काल तुम्हारा.

राम :- विप्रजी साक्षी अपनी क्रिया को.

सुत समझाते पर त्रिया को.

पूरा रघुकुल की नार वंश नष्ट किया सारा ------

रावण :- जो विप्रों की राज दुलारी.

छती कह उन्हें महतारी.

तेरा क्या था अधिकार नाक कतर कर डाला. ---

राम :- मांगें थी काम देव की भीक्षा.

उस हेत देई थी शिक्षा.

कह सुत को ललकार, आपहते थी चारा .....

रावण :- बहता को कुटिल बताते.

और अपना दोष छिपाते

जान तुझे बदकार, पिता ने घर से टारा ----

राम :- अब वाद विवाद मिटाओ.

ले शस्त्र युद्ध में आओ.

करूं तेरा उद्धार, हो भवनीध से पारा -----

रावण :- मैं युद्ध करू डट डट के.

नहीं भागु रण से हट के.

खुला मुक्ति का द्वारा, कोई न रोकन हारा.

रावण नाटक राम से:- हे तपस्वी तू मुझे क्या ज्ञान सिखाता है, अरे मूर्ख देख मैंने सब देवताओं की शक्ल बिगाड़ दी. स्वर्ग के देवता मेरी इच्छा से अपना पेट पालते हैं.

राम रावण से:- वो हठ धर्मी अब वो दिन जा चुके, और विनाश के देवता तेरी गर्दन दबा चुके वो पापी होशियार हो जा. मैं यह पहला बाण ब्राह्मण समझ कर चरणों में नमस्कार करता हूँ

रावण राम से:- तू भी होशियार हो जा और मरने के लिये तैयार हो जा.

दोनों की लड़ाई रावण का नहीं मरना.

सुग्रीव राम से:- भगवन जल्दी खत्म किजिये।

राम सुग्रीव से:- क्या करूं सुग्रीव इस दुष्ट के जितने सिर काटता हूँ इतने ही उत्पन्न हो जाते हैं

विभीषण राम से:- भगवन इसने कई बार सिर काट काट कर भगवान शंकर का पूजन किया है. यह इस तरह नहीं मर सकता।

राम विभीषण से:- तो अब फिर क्या करना चाहिये।

विभीषण राम से:- सुनिए भगवन: दोहा:- इस तरह यह मर नहीं सकता किसी हथियार से,

तीर से, बरछी से, भाला ढाल से, और तलवार से।

नाभी में है इसके अमृत कुण्ड जानना चाहिये।

यह मरेगा तब इसे पहले सुखाना चाहिये।

राम विभीषण से:- ओह यह भेद है, अब अग्नी बाण से इस कुण्ड को सुखाता हूँ और भूमि का भार मिटाता हूँ. दोनों की लड़ाई रावण का बेहोश होना,

राम लक्ष्मण से:- भैया लक्ष्मण यद्यपि रावण से हमारा तकरार था, फिर भी पुराना तजरूबे कार था, आप इनके पास जाओ, और उपदेश ले लाभ उठाओ.

लक्ष्मण राम से:- जैसी आज्ञा हो भगवन !! लक्ष्मण का रावण के सिर की तरफ खड़े होना।

लक्ष्मण रावणसे:- लंकेश हमारी तुम्हारी जो दुश्मनी थी. वह समाप्त हो गई, अब हमें उपदेश

देकर कृतार्थ करें !! रावण चुप !!

राम लक्ष्मण से:- भैया निति का उलंघन करके उपदेश कैसे पा सकते हो. गुरु का निरादर करके लाभ कैसे उठा सकते हो. जावो चरणों की ओर खड़े होकर पुकारो.

लक्ष्मण रामसे:- बहुत अच्छा भगवत

लक्ष्मण रावण से:- पैरों की तरफ खड़ा हो कर! महात्मन मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिये कोई उत्तम शिक्षा दीजिये।

रावण लक्ष्मणसे: आखें खोलकर: वीर लक्ष्मण तुम स्वयं अपने ज्ञान से जगत का कल्याण करते हो. किन्तु मेरा अनुभव करके मेरा सम्मान करते हो तो अच्छा सुनो.

रावण का दोहा:- सिखाना ज्ञान तुमको दीप सूरज को दिखाता है.

तुम्हारी ज्ञान शक्ति को वेदों ने बखाना है.

न सुनना सिख अपनों की, न ध्यान निति पर.

वह कुल सम्मान खोता, कीर्ति की जड़ मिटाता है.

समझता बल अधिक अपना, सदा अभिमान में रहना.

वह अपने आप पैरों पर कुल्हाड़ी चलाता है.

बुरा है काम काम छोड़ देता कल पर.

भंवर में बीच के खुद, अपनी नौका को गिराता है.

लक्ष्मण रावणसे:- धन्य हो ज्ञान के पुंज रावण तुम धन्य हो.

रावण लक्ष्मणसे: अच्छा लक्ष्मण, व भैया विभिषण प्यारे भगवत में तुम्हारे कहे में आता तो आज यह दिन न देखना पड़ता. भगवन अब बोला नहीं जाता प्राण पखेरू उड़ना चाहते हैं अच्छा हाय राम! राम! राम! विदा: "रावण का समाप्त होना"

लेखक की तरफ से एक विनती, अगर कहीं गलती हो गई हो तो मुझे माफ करें

आपका धन्यवाद

"जय श्री राम" "जय श्री राम"

रावण और वेदपति (आनन्द वर्मा)

वेदपति अपने दिल में :→ अहा! जब से पिता मेरे कुशध्वज ऋषि ने यह प्रण (वचन दिया) किया की मेरे पति विष्णु भगवान होगें। उसी दिन से उनके ध्यान में अपना जीवन बिता रही हूं। परन्तु प्रभू ने अभी तक मेरी कोई खबर नही ली। हे स्वामी जल्दी आओं और मुझें अपने साथ ले जाओं।

रावण का परदे के अन्दर से आना,, और वेदपति को देखना, ठण्डी सांस में, रावण मन में हंसकर :-

दोहा: निर्जन वन में सोभाती. ऐसी सुन्दर नार.
जैसें मोती कीच में ~~चमक~~ चमकत है. हर बार।

नही-2 यह तो उससें भी सुन्दर है: दोहा:→ इस निर्जन स्थान मे तो कामिनि का वास:
ज्यो अंधियारी रात में चन्द्र देव का वास।

वेदपति: रावण से: क्या विचार कर रहों हों महाराज?

रावण: वेदपति से: हे देवी! मे इसका क्या जवाब आपकी सुन्दरता ही दुनिया से निराली है।

[वेदपति] सें : रावण से: हे ज्ञानी पुरुष, विचारों की उलझनों को छोड़ें और अभिप्राय प्रकट करो।

रावण: वेदपति से: हाँ- हां देवी भूल गया, हा देवी तुम्हारा नाम क्या है और तुम कौन हो।

वेदपति: रावण से: मै कुशध्वज ऋषि की कन्या हूँ मार्ग से भटकी हुई जोगन हूं।

रावण: वेदपति से क्या अभी तुम्हारा विवाह नही हुआ।

वेदपति: रावण से हो चुका है: दोहा: जिसे चौदह युग (भवन) और तीन युग के, भगवान कहते है
~~रावण: वेदपति से~~ उसी को बस मेरा जीवन, पति प्राण कहते है।

रावण: वेदपति से: "कल्पना" झूठी बात, मृग तृष्णा के पिछे दौड़ने वाली मृगानेनी क्या धूप को अपनी मुट्ठी मे बन्द करनें का इरादा कर रही हूं। ओ भोली नादान इरादे को छोड़ दे।

दोहा:→ तुझकों सर्वदा तड़फाती रहेगी आशा तेरी
हो नही सकती कभी इच्छा यह पूरी तेरी।

वेदपति: रावण से: →दोहा→ इच्छा पूरी हो ना हो परन्तु अब मे विचारों को छोड़ नही सकती। एक बार जिसको पति मान लिया है उससें मुहं मोड़ नही सकती।

रावण: वेदपाती से: निःसन्देह तू अपने ध्यान मे मगन है देखो यह सुख बार-2 नही आते। जब यौवन की यह झलक चली जाऐगी। तो इन दिनों को याद करके बड़ा पछताओगी

दोहा: पड़ा जो धूल है, मन हरण अनमोल मोती है
हे सुन्दर! फूल तू क्यो, पांव तले पमाल होती है।

वेदपाती: रावण से: "क्रोध मे" वो घमण्डी! तू इस वासना का मैल चड़ा कर मुझे मारना चाहता है

दोहा: मिले जो राज दुनिया का, वचन पर वार दुंगी मै।
तेरी सोने की लंका मे, एक प्रण पर वार दुंगी मै।

रावण: वेदपाती से: "प्यार से" सुन्दरी होश कर, आखें खोल, तेरे ज्ञान को काहे का परदा पड़ा है जानती नही तेरे सामने कौन खड़ा है: दोहा: तेरी कोमल जबां से, शब्द जो कड़वे निकलते है
यह तेरे तीखे बाण है, जो प्रेम की गर्दन पे चलते है।

वेदपाती: रावण से: दोहा: समय आने पर ज्ञानी भी, पाप के रसते चलते है
अनोखी बात यह है, व्रज भी मिट्टी में गलते है।

रावण: वेदपाती से: "क्रोध में" समझा, अरी अभागीन बाला, तु अपनी बुद्धी से लाचार है जो रावण का कहना मानने से इन्कार है

दोहा: क्रोध को मेरे समझ कर, खेलती है खेल तु
बोल कर कड़वे वचन, अगनि पर ड़ाले तेल तु।
बैर कर रावण से, जग मे कौन रहने पाऐगा
पुकार अपने सहायक, को तुझको कौन बचाने आऐगा।

वेदपाती: रावण से "क्रोध में" शर्म कर हिये के अन्धे, कुछ तो शर्म कर।

दोहा: रावण दुखिया को मत दुखा: मै खुद ही बेकरार हुं
जीवन आशा कुछ नही, अपने ही आप बहार हूं।

रावण: "क्रोध मे" बस-2 अब आगें मत बोल

दोहा: बहुत सुन चुका हूं, बन्द कर अपनी कहानी को
इस अभिमान मे खोदेगी, आखीर जिन्दगानी को।

वेदमाता : क्रोध मे : — क्या जिन्दगी का मोह दिखाकर अपने वश मे करना चाहता है वो चण्डाल यहाँ से चला जा। और कुछ शर्म है तो अपनी शकल न दिखा

दोहा : देखना पापों का भी, एक भारी पाप है

इसलिए ही मेरे मन मे, घोर पश्चाताप है

मन दुखा कर दीन का, क्या हाथ तेरे आयेगा

याद रख तुझको मेरा, यह पाप ही खा जायेगा।

रावण : क्रोध मे " ओ इतना अभिमान देवताओं के राजा का इतना अपमान

दोहा : जो हुआ अच्छा, वह ध्यान ही बेकार है

(मर्दन पकड़कर) देख मेरा हाथ ही तेरे, गले का हार है

वेदपाती : क्रोध मे ओ अन्यायी हाथ लगाकर तूने मेरी काया ही भ्रष्ट कर दी। तेरे छूने से ये शरीर अशुद्ध हो गया। अब यह शरीर भगवान को नही पा सकता। इसलिए इसे त्यागकर, नया रूप धारण करूँगी और उसी से तेरी मौत का कारण बनूँगी।

दोहा : बना है सामने मेरे, तू विकराल की मूरत।

(परदे मे जाना) जनक पुरी से उठूँगी, बन के तेरे काल की मूरत

(वेदपाती का सीन समाप्त)
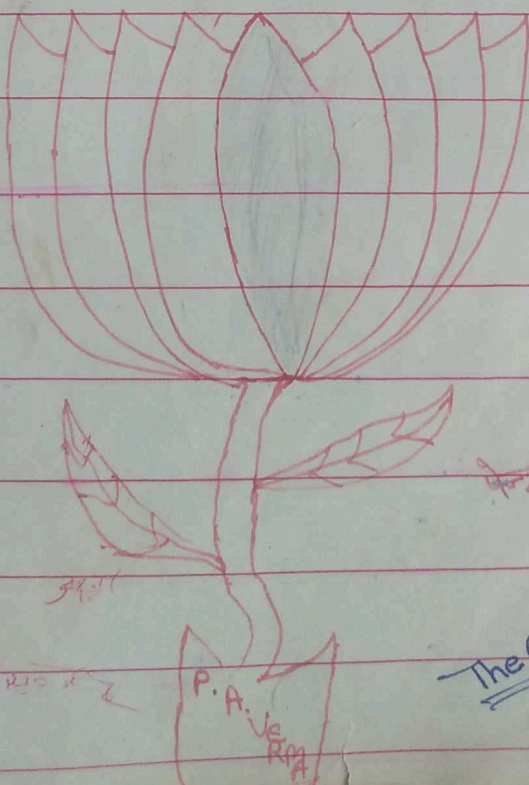
मास्टर आनन्द वर्मा

The END

P. A. VeRMA